रेल रश्मि

अंक : 63, मार्च 2014

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका

26.02.14 को 'कैंसर: लक्षण एवं बचाव' विषय पर आयोजित तकनीकी संगोष्ठी को संबोधित करते श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि

26.02.14 को 'कैंसर: लक्षण एवं बचाव' विषय पर आयोजित तकनीकी संगोष्ठी में व्याख्यान देते कैंसर विशेषज्ञ डा. ए.के.चतुर्वेदी

30.01.14 को अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ से राजभाषा में सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए विशिष्ट कार्यालय का पुरस्कार प्राप्त करते श्री अनुप कुमार, मंरेप्र, लखनऊ साथ में श्री शैलेष कुमार मिश्र, राधि

24.03.14 को मंडल राजभाषा का कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं विशेष हिंदी संगोष्ठी को संबोधित करते बरेली कालेज/बरेली के हिंदी विभागाध्यक्ष डा. अशोक उपाध्याय साथ में मंरेप्र श्री चंद्र मोहन जिंदल एवं अमंरेप्र श्री सोमेश कुमार

26.02.14 को डीजल शेड, इज्जतनगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उपस्थित श्री गौरव कुमार सिंह, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/डीजल व अन्य अधिकारीगण

28.02.14 को वाराणसी में 'कबीर-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर आयोजित गोष्ठी में विचार व्यक्त करते श्री संजय सिंह, राजभाषा अधिकारी

संपादक की कलम से...

सच कहा जाए तो मेरे विचार से 'रेल रश्मि' पत्रिका को आकर्षक, सुंदरता एवं गुणवत्ता में निखार लाने में 'आपने लिखा है' पृष्ठ के माध्यम से अनेक साहित्य प्रेमियों तथा समालोचकों के व्यक्त विचारों का योगदान शत-प्रतिशत शामिल है। संपूर्ण भारतीय रेलों से हमें भरपूर प्रोत्साहन मिल रहे हैं। 'आपने लिखा है' के माध्यम से संपादक मंडल को भरपूर खुशी ही नहीं उत्साहवर्द्धक प्रेरणा मिली है।

आप सभी पाठकों की प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप ही पत्रिका की सुंदरता, गुणवत्ता, विविधता में आकर्षक चमक आने लगी है। इसीतरह 'रेल रश्मि' पत्रिका के लिए विभिन्न रसों से मंडित रचनाएँ भेजने के लिए संपादक मंडल सदा आभारी रहेगा।

मेरे विचार से किसी भी देश की पहचान उस देश की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन से होती है। यही विशेषता उस देश की आईना भी होती है। 'रेल रश्मि' पत्रिका की सुंदरता भी विभिन्न विधाओं की रचनाओं में झलकते रहती है।

तो आइए, इस अंक को भी पढ़ें, अनुभव करें तथा इसी पत्रिका के माध्यम से अगले अंक में अपनी प्रतिक्रिया दें। हमें आपके बहुमूल्य सुझावों का इंतजार रहेगा।

वसंतोत्सव व होलिकोत्सव की शुभकामनाएँ,

(वी. डुंगडुंग)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 63 मार्च 2014

संरक्षक:
कृष्ण कुमार अटल
महाप्रबंधक

मुख्य संपादक:
एच. के. अग्रवाल
मुख्य राजभाषा अधिकारी

उप मुख्य संपादक:
संजय यादव
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक:
वी. डुंगडुंग
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सह संपादक:
ध्रुव कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक व समस्त संपादन:
सुनील कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

पता:
राजभाषा विभाग
मुख्यालय कार्यालय परिसर
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012
टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)
0551-2203396
ईमेल- seniorofl@gmail.com

मुखपृष्ठ:
26.02.14 को रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर श्री अरविंद कुमार, अध्यक्ष रेलवे बोर्ड से रेल मंत्री राजभाषा शील्ड प्राप्त करते श्री एच.के. अग्रवाल, मुराधि

इस अंक में

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
आपने लिखा है		3
आधुनिक कविता में नवगीत के प्रयोग (लेख)	सुनील कुमार श्रीवास्तव	7
ग्रीष्म और ग्राम्य गीत (लेख)	डा. विमलेंदु कुमार 'विमल'	8
अपनी शक्ति को पहचानें युवा (लेख)	डा. शैलेंद्र मणि त्रिपाठी	11
बनती-बिगड़ती हिंदी (लेख)	प्रभाकर मिश्र	13
सर विश्वेश्वरैया	राजीव कुमार आनंद	16
श्रीलाल शुक्ल: व्यक्तित्व एवं कृतित्व (साहित्य)	डा. कृष्ण चंद्र लाल	18
कह रैदास... (लेख)	डा. उदय प्रताप सिंह	21
वन में बागन में बगर्‌यो बसंत है (लेख)	डा. राजेश हजेला	24
वास्तविक उन्नति (लेख)	हरगोविंद लाल	26
गोपालशरण सिंह 'नेपाली' का काव्य वैभव (साहित्य)	नवीन चतुर्वेदी	28
वैदिक राष्ट्र में कृषि यज्ञ (लेख)	सुनील कुमार	32
सार पास ट्रैकिंग अभियान (यात्रा वृत्तांत)	मनीष रंजन	35
पुल में कंक्रीट अधिसंरचना के प्रकार और उत्थापन विधि (इंजीनियरी)	संतोष	40
समय (कहानी)	कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव	42
सुपरनोवा का रहस्य (विज्ञान)	अर्शिया अली	46
लघु कथाएँ	अमित कुमार	48
लघु कथाएँ	अनीता अग्रवाल	49
बसंत का विदेशी कनेक्शन (व्यंग्य)	रण विजय सिंह	50
कविता, गीत एवं गजल		
ग़ज़लें	सुशील 'साहिल'	51
कविताएँ	बाँके बिहारी 'विकल'	52
ग़ज़लें	सैयद मुहम्मद असलम	54
कविताएँ	तारकेश्वर शर्मा 'विकास'	55
ग़ज़लें	वीरेंद्र हमदम	56
तीन शब्द चित्र (कविता)	धनवीर सिंह	57
कविताएँ	अनिल कुमार दुबा	58
स्वर्णिम हिंदुस्तान (कविता)	वेद प्रकाश वर्मा	59
कविताएँ	सुधीर कुमार 'चंदन'	59
ग़ज़लें	नरसिंह बहादुर 'चंद'	60
ग़ज़लें	आदर्श श्रीवास्तव	60
कविताएँ	राज किशोर राजन	61
गतिविधियाँ		63

निःशुल्क वितरण हेतु (पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** का नवीनतम अंक 'स्वाधीनता एवं हिंदी दिवस' विशेषांक प्राप्त हुआ।

पत्रिका के इस अंक में पाठकों के लिए राजभाषा के संबंध में प्रकाशित लेखों के माध्यम से बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक जानकारी उपलब्ध करायी गयी है। विशेष रूप से श्री बी.आर. विप्लवी का 'राजभाषा का सफर: जन-भाषा होने तक' लेख बेहद ज्ञानवर्द्धक है। इसके अलावा, प्रो. चित्तरंजन मिश्र का 'जनतंत्र की भाषा हिंदी और उसकी चुनौतियाँ', डा. उदय प्रताप सिंह का 'हिंदी और हिंदी माध्यम का पाठ्यक्रम' पर लेख भी काफी ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका में संकलित अन्य लेख, रचनाएँ, कविताएँ तथा पर्यटन पर डा. एस. के. सैनी का लेख 'कश्मीर घाटी में रेल' भी स्तरीय एवं उच्च कोटि के हैं।

जिसतरह से रचनाओं और लेखों आदि का चयन, संपादन तथा प्रस्तुतिकरण किया गया है उसके लिए आप सबको हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

आशा है भविष्य में भी **'रेल रश्मि'** का सफर निरंतर जारी रहेगा।

के.पी. सत्यानंदन
निदेशक/ राजभाषा
रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली

महत्वपूर्ण, संग्रहणीय

'रेल रश्मि' के अंक लगातार मिलते रहे हैं। इधर कुछ महत्वपूर्ण अंक निकले जिसमें प्रकाशित लेखों ने ध्यान आकृष्ट किया। पिछले दिनों राजभाषा अंक एवं स्वाधीनता अंक में प्रकाशित सामग्री न सिर्फ ध्यान आकृष्ट करने वाली, बल्कि संग्रहणीय भी है। इसी श्रृंखला में **रेल रश्मि** 62 दिसंबर 2013 भी दीख गयी। इस अंक में गाँधीजी पर जो सामग्री आपने प्रकाशित की है, वह मूल्यवान और प्रेरणाप्रद है। विजय बहादुर सिंह का लेख तो बहुत प्रेरित करने वाला है। हर बार की तरह इस बार भी श्री रण विजय सिंह का व्यंग्य-लेख सामयिक ज्वलंत और दृष्टि को साफ करने वाला है। ढोल, पोल और ओपिनियन, हमारे समय की राजनीति के मीडिया केंद्रित होते जाने की विडंबना को समझाने वाला है। कृष्ण चंद्र लाल की पुस्तक 'रचना की स्वायत्तता' पर कृष्ण गोपाल जी की समीक्षा 'कंप्लीट' है। कृष्ण गोपाल जी ने मुख्य विंदुओं को प्रत्यक्ष करने की अच्छी कोशिश की है। वीरेंद्र हमदम और कलीम कैसर की ग़ज़लें भी नया स्वर सुनानेवाली हैं। अच्छे प्रकाशन और अच्छी सामग्री के लिए बधाई स्वीकार करें। आगे भी अच्छी सामग्री की उम्मीद के साथ।

प्रो. चित्तरंजन मिश्र
हिंदी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
संपर्क: 9415314473

आपकी त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** का दिसंबर अंक देखने-पढ़ने का सुअवसर मिला। इस पत्रिका के माध्यम से आपलोग राष्ट्रभाषा समेत रचनाकारों की श्रेष्ठ रचनाओं को प्रकाशित करके अच्छी एवं प्रशंसनीय समाज की सेवा कर रहे हैं।

दिसंबर अंक में 'वैश्वीकरण और हिंदी कहानी' (रणजीत कुमार सिन्हा) 'तलाश बाल फिल्मों की' (सुरभि श्रीवास्तव), 'ढोल, पोल और ओपिनियन' (रण विजय सिंह) समेत महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित लेख विशेष रोचक लगे। काव्य खंड में बी.आर. विप्लवी, वीरेंद्र हमदम और मज़हर की रचनाएँ पठनीय रहीं। रण विजय सिंह की विदाई के बारे में जानकर अवसाद-सा हुआ। उम्मीद है कि उनकी व्यंग्य रचनाओं का प्रकाशन आप अगले अंकों में पूर्व की भाँति करते रहेंगे।

होलिकोत्सव और भारतीय नव वर्ष की ढेरों सारी शुभकामनाएँ सहित।

एम. जे. श्रीवास्तव
मंडल सचिव, गोरखपुर मंडल
पी.एन.बी.आफिसर्स एसोसिएशन, गोरखपुर
संपर्क: 9450882600

'रेल रश्मि' का अंक 62 (दिसंबर 2013) का मुखपृष्ठ चित्रांकन मनोरम एवं अर्थपूर्ण है। गोरखपुर जं. विश्व को ऊपर उठाये अपनी गरिमा प्रदर्शित करता है। पृष्ठभाग साहित्यकारों का चयन राजभाषा की सामासिक संस्कृति के अनुरूप है। राजभाषा संबंधी नीति-निर्देशों का

स्थान-स्थान पर उद्धरण इसे राजभाषा पत्रिका के रूप में रेखांकित करता है।

प्रकाश जी का लेख 'किस साख पर टँगा गाँधी का सपना' गवेषणात्मक एवं गंभीर अध्ययन के साथ ही सुविचारों का द्योतक है। साथ ही गाँधीजी के नाम पर उनके सिद्धांतों के प्रतिकूल आचरण करने वाले राजनीतिज्ञों एवं स्वार्थियों की पोल खोलता है। श्री दीनानाथ तिवारी द्वारा संकलित 'साहित्य स्तंभ' संबंधित साहित्यकारों के प्रकृति अनुरूप ही है। 'वैश्वीकरण एवं हिंदी कहानी' के माध्यम से रणजीत कुमार सिन्हा ने मनुष्य के धनलिप्सा की प्रकृति को रेखांकित कर भोगवादी संस्कृति को उजागर किया है। डा. राजेश हजेला ने 'शत-शत दीप जले' दीपावली के प्रादुर्भाव, विस्तार एवं जीवन में उपयोगिता का सफल प्रस्तुति सराहनीय है। सुनील कुमार का 'जीवन में व्रतों का महत्व' गीता के सम्यक आहार-विहार की प्रस्तुति है। मनीष रंजन की 'मेरे यार की शादी' मनोरंजक है। 'ढोल, पोल और ओपिनियन' श्री रण विजय सिंह जी का चुनाव सर्वेक्षण की व्यावहारिकता पर सुंदर व्यंग्य है।

'यह भी साहस कहलाता है' के माध्यम से कवि ने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मानवीय संवेदनाओं के अनुरूप व्यवहार को साहस की संज्ञा दी है। प्रस्तुति सराहनीय है। 'श्रीश' जी ने देवी, नारी, लक्ष्मी और बेटी मुक्तक में स्त्री के प्रेम, उदारता, सेवा आदि का सफल प्रस्तुति के साथ ही बेटों के खुदगर्जी का सुंदर प्रस्तुति किया है। श्री यशवीर सिंह की कविता 'हम-तुम' काफी रोमांटिक कल्पना है। श्रीमती अनामिका सिंह की कविता 'भाव पुष्प-मालिका' एवं 'श्रद्धांजलि' भाषा एवं भाव की दृष्टि से सुंदर है।

पत्रिका में प्रकाशित अन्य लेख एवं कविताओं का चयन अभिव्यक्ति एवं कथ्य की दृष्टि से सराहनीय है।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित

रामदेव मिश्र
पूर्व राजभाषा अधिकारी
59/सी, शिवपुर सहवाजगंज
गोरखपुर

भारतीय नव वर्ष पर शुभकामनाएँ

भारतीय लोकतंत्र की इमारत गाँधीजी के विचारों की आधारशिला पर टिकी है। आइंस्टीन का कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि सौ साल बाद शायद ही कोई यकीन करेगा कि हाड़-माँस का कोई मानव वास्तव में मोहनदास करमचंद गाँधी के नाम से धरती पर अवतरित हुआ था। उनके विचार और सत्य-अहिंसा के मार्ग पर किए गए कार्य, मानवीय मूल्यों की स्थापना आज भी अर्थवान हैं।

'रेल रश्मि' के सितंबर अंक में सूर्या शेखर के लेख ' सत्य अहिंसा के प्रति आग्रह है गाँधी का रास्ता' के बाद दिसंबर अंक में गाँधी से संबंधित लेख पठनीय रहे।

दिसंबर अंक के अन्य लेखों में 'गोरखपुर रेलवे स्टेशन का प्लेटफार्म' (आलोक कुमार सिंह), 'वैश्वीकरण और हिंदी कहानी' (रणजीत कुमार सिन्हा), तलाश बाल फिल्मों की' (सुरभि श्रीवास्तव) और 'जीवन में व्रतों का महत्व' (सुनील कुमार) पसंद आए। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'ढोल, पोल और ओपिनियन' हमेशा की तरह रोचक रहा। आप के सभी सहयोगियों को होलिकोत्सव और भारतीय नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अखिलेश चंद
व्यवस्थापक, 'आज' दैनिक
बैंक रोड, गोरखपुर-273001

प्रतीकात्मक मुखपृष्ठ

'रेल रश्मि' के 62वें अंक का मुखपृष्ठ प्रतीकात्मक है तो अंतिम पृष्ठ कालिदास, जायसी, रसखान और विद्यापति के आकर्षक चित्रों से सुसज्जित। इस नवीनतम अंक में 'गाँधी की जादूगरी के नुस्खे' (डा. विजय अग्रवाल) ढोल, पोल और आपिनियन (रण विजय सिंह) और 'तलाश बाल फिल्मों की' (सुरभि श्रीवास्तव) विशेष रूप से रोचक हैं। अन्य लेखों में 'जीवन में व्रतों का महत्व' (सुनील कुमार); डा. कृष्ण चंद्र लाल के संकलन 'रचना की स्वायत्तता की समीक्षा' (कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव) उपयोगी हैं। बी. आर. विप्लवी, डा. कलीम कैसर, वीरेंद्र हमदम और मज़हर की रचनाएँ भी पसंद आयीं।

नरेंद्र राय
उत्तरी जटेपुर कालोनी, गोरखपुर
संपर्क: 8354836660

हार्दिक बधाइयाँ

आपकी त्रैमासिक पत्रिका **'रेल रश्मि'** का नवीनतम अंक दिसंबर 2013 दो व्यक्तियों की विदाई की ओर ध्यान आकृष्ट करती हैं। एक भाई रण विजय सिंह की मुख्य परिचालन प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त होकर पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय से विदाई, तो दूसरा डा. परमानंद श्रीवास्तव जैसे व्यास सम्मान से अलंकृत व्यक्तित्व की इस असार संसार से विदाई। स्पष्ट है, परिवर्तन इस नश्वर जगत् का शाश्वत सत्य है। इन दोनों के प्रति कवयित्री अनामिका सिंह ने जो भावपूर्ण अभिव्यक्तियाँ की हैं, उनसे मैं सहमत हूँ।

इसी अंक में महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संयोजित किए गए लेख उत्कृष्ट एवं सारगर्भित हैं। अन्य लेखों में 'शत-शत दीप जले' (राजेश हजेला); 'वैश्वीकरण और हिंदी कहानी' (रणजीत कुमार सिन्हा); 'जीवन में व्रतों का महत्व' (सुनील कुमार) समेत 'साहित्यकारों के जीवन के अनछुए प्रसंग' (दीनानाथ तिवारी) एवं 'तलाश बाल फिल्मों की' (सुरभि श्रीवास्तव) पठनीय और रोचक है। डा. कृष्ण चंद्र लाल की पुस्तक 'रचना की स्वायत्तता' पर कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की समीक्षा कई बिंदु उद्घाटित करने में समर्थ। काव्य खंड में सुधीर कुमार 'चंदन', वीरेंद्र हमदम, प्रवीण सिंह, अनामिका सिंह की रचनाएँ सराहनीय हैं। पसंद आयीं। भारतीय नव वर्ष एवं होलिकोत्सव की हार्दिक बधाइयाँ!

अशोक अज्ञात
भूतपूर्व अध्यक्ष प्रेस क्लब
बशारतपुर, गोरखपुर
संपर्क: 9559343054

स्तरीय, रोचक, पठनीय

यों तो अनेक साहित्यिक पत्रिकाएँ और हाउस मैगजींस देखने में आयीं, किंतु आपकी **'रेल रश्मि'** का स्तर सबसे अलग पहचाना जाता है। इसमें जो रचनाएँ प्रकाशित होतीं हैं वे अत्यंत स्तरीय, रोचक और पठनीय होती हैं। दिसंबर अंक में गाँधी से संबंधित लेख विशेष रहे तो अन्य लेखों में 'वैश्वीकरण और हिंदी कहानी' (रणजीत कुमार सिन्हा), 'जीवन में व्रतों का महत्व' (सुनील कुमार), 'तलाश बाल फिल्मों की' (सुरभि श्रीवास्तव) पसंद आए। कहानी 'मेरे यार की शादी' अनावश्यक विस्तार के चलते रोचकता खो देती है तो विप्लवी, वीरेंद्र हमदम और मज़हर की ग़ज़लें तथा यशवीर सिंह की कविताएँ ध्यान आकृष्ट करतीं हैं।

दुर्गेश चंद्र ओझा
उप संपादक 'आज'
जगन्नाथपुर, गोरखपुर
संपर्क: 8081818488 व 9451015736

मातृभाषा हिंदी की समृद्ध पत्रिका **'रेल रश्मि'** द्वारा उत्कृष्ट लेख, कहानी, कविता, समीक्षा आदि से हम पाठक वर्ग की रुचि को विकसित करने एवं मानसिक रूप से सिंचित करने के निरंतर प्रयास के लिए संपादन प्रबंधन से जुड़े सभी आदरणीयों को अंतर्मन से मेरी बधाई। पूर्वोत्तर रेलवे के राजभाषा विभाग का यह योगदान ऐतिहासिक स्थान रखता है जो स्तुत्य है।

'रेल रश्मि' अंक 62 में पी.एन. राय की कविता 'यह भी साहस कहलाता है' संवेदनाओं को झकझोरने वाली सकारात्मक एवं जीवंत कविता है। उद्बोधन प्रेरणादायी है।

महात्मा गाँधी पर छपे तीनों लेख एक विहंगम अध्ययन के लिए प्रेरित करते हैं। विजय बहादुर सिंह, डा. विजय अग्रवाल एवं अजय ने सुप्त चेतना को जगाने का सबल प्रयास किया है। ये लेख अंक 62 को संजोने के लिए प्रेरित करते हैं। इसमें गाँधी के धीर-गंभीर मुठभेड़ का साक्षात्कार होता है। विचार, वाणी और कर्म का संतुलन मिलता है तथा मूलाधार में प्रयोग का हठ विनम्रता धर्मनिरपेक्षता और सत्य का संदेश है।

दीनानाथ तिवारी के संस्मरण बहुत कीमती हैं। इनके बहाने पाठकों का ज्ञानवर्द्धन होता है तो रणजीत कुमार सिन्हा का लेख कहानी के विविध आयामों से परिचित कराता है। बाजारवाद के युग में विचलित होते आदर्श, नैतिकता, सभ्यता, सच्चाई से रू-ब-रू कराता है। मनीष रंजन, सतीश कुमार, सुधीर कुमार, अमित कुमार की कहानियाँ अच्छी है। डा. राजेश हजेला, संजय वर्मा, सुनील कुमार के लेख, सुरभि श्रीवास्तव का बाल फिल्मों पर सर्वेक्षण अच्छे बन पड़े हैं। कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की समीक्षा डा. कृष्ण चंद्र लाल जी के संकलन 'रचना की स्वायत्तता' की सार्थक, महत्वपूर्ण उपादेयता उद्घाटित करती है।

विप्लवी का शेर 'रामराज आने को है- सहमी सी हैं सीताएँ', डा. कलीम कैसर का शेर 'गगन के

चाँद-तारों से जियादा इनकी कीमत है- हमारे जिस्म पर थोड़ी वतन की धूल रहने दो' वतनपरस्ती से रू-ब-रू कराता है। अनामिका सिंह द्वारा दी गई परमानंद जी को श्रद्धांजलि काफी भावपूर्ण है। मज़हर के दोहे दिल को हलका करते हैं। आलोक कुमार सिंह का आमुख, द्वारिका राय सुबोध, यशवीर सिंह की कविता 'हम तुम', अनिल कुमार दत्ता, प्रवीण कुमार सिंह, सुधीर कुमार चंदन, डा. उमेश कुमार 'श्रीश' की कविताएँ, अनामिका सिंह का मार्मिक विदा गीत हृदयस्पर्शी हैं। रण विजय सिंह जी ने अपने सेवा काल में कई क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किए हैं जिन्हें भुलाया जा पाना संभव नहीं। उनका व्यंग्य 'ढोल, पोल और आपिनियन' उनके गंभीर चिंतन का परिचायक है।

अप्रतिम राजभाषा पत्रिका **'रेल रश्मि'** की निरंतरता की शुभकामना सहित!

वीरेंद्र 'हमदम'
414, इस्माईलपुर, गोरखपुर
संपर्कः 9451186191

तकनीकी रेल विषयों पर हिंदी में मौलिक लेखन पुस्तकों के लिए 'लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना' (आधार वर्ष-2013)

रेलों से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूलरूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) की उपर्युक्त योजना लागू है।

इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष निम्नलिखित तीन नकद पुरस्कार दिए जाने की व्यवस्था है:-

1. **प्रथम पुरस्कार (एक) : ₹ 15,000/-**
2. **द्वितीय पुरस्कार (एक) : ₹ 7,000/-**
3. **तृतीय पुरस्कार (एक) : ₹ 3,300/-**

इस योजना की **मुख्य-मुख्य शर्तें** निम्नवत हैं-

1) पुस्तक मौलिक रचना होनी चाहिए अर्थात वह किसी अन्य भाषा में लिखी गई पुस्तक का अनुवाद न हो।

2) जिस मौलिक पुस्तक को इस पुरस्कार के लिए प्रस्तुत किया जाए वह पुस्तक पुरस्कार वर्ष से पिछले तीन वर्षों में लिखी गई हो अथवा प्रकाशित हुई हो।

3) पुस्तक का विषय रेल संचालन या रेल प्रबंधन से संबंधित होना चाहिए।

4) जिन पुस्तकों को इस पुरस्कार योजना के लिए पहले प्रस्तुत किया जा चुका हो, उन्हें दोबारा प्रस्तुत नहीं किया जाए।

5) जिन पुस्तकों को भारत सरकार या राज्य सरकार या संघ शासित प्रदेश के प्रशासन की किसी योजना के अधीन एक पुरस्कार दिया जा चुका होगा, उन्हें इस योजना में शामिल नहीं किया जाएगा।

6) प्रतियोगी को पुस्तक की दो मुद्रित अथवा दो टंकित प्रतियाँ निर्धारित आवेदन पत्र के साथ भेजनी होंगी। प्रविष्टियाँ सहित आवेदन पत्र विधिवत भरकर निदेशक (राजभाषा), रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), कमरा नं.-544, रेल भवन, नई दिल्ली को भेजने होंगे।

7) एक लेखक पुरस्कार योजना के लिए एक से अधिक प्रविष्टियाँ भेज सकता है। यद्यपि, किसी वर्ष विशेष में, एक लेखक को सिर्फ एक पुरस्कार दिया जाएगा।

8) पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए, तथापि इससे छोटी पुस्तकों पर निर्णायक मंडल अपने विवेकानुसार विचार कर सकता है।

9) अपनी कृति भेजने वाले लेखक को बोर्ड द्वारा निर्धारित संलग्न प्रोफार्मा में अपेक्षित जानकारी और घोषणा पत्र भेजना होगा।

<u>प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि: 30.05.2014 है</u>

(रेलवे बोर्ड का 04.02.2014 का पत्रांक हिंदी-2014/प्र.-7/2)

◆ लेख ◆

आधुनिक कविता में नवगीत के प्रयोग

सुनील कुमार श्रीवास्तव

वर्तमान संदर्भ में आधुनिक कविता के क्षेत्र में निरंतर नये प्रयोग हो रहे हैं। नवगीत का जन्म इन्हीं प्रयोगों का परिणाम है। वास्तव में कविता की विधा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसमें नयी संभावनाओं की आहट हमेशा सुनी जा सकती है। पारंगत कवि तो काव्य रचना के पूर्व ही शैली का निर्धारण कर लेते हैं, लेकिन एक नवोदित कवि किस शैली में लिख रहा है इसका पता उसे स्वयं नहीं होता। ऐसे मामलों में अक्सर शैली की जानकारी कविता के प्रकाशन के बाद तब होती है जब समीक्षा के शीशे में उतारकर उसका मूल्यांकन किया जाता है। पिछले दशक में जो नवगीत लिखे गए उनमें परंपरागत एकरूपता का अभाव दृष्टिगत होता है जिसके फलस्वरूप एक निश्चित शैली का निर्धारण नहीं हो पाता। उदारवादी समीक्षकों का मानना है कि वर्तमान नवगीतों के लेखन तथा शैली के निर्धारण के चक्कर में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। नवगीतों की अपनी खास विशेषताएँ होती हैं। इन्हें पारंपरिक मानकों की कसौटी पर कसकर इनकी प्रासंगिकता तय किया जाना उचित नहीं होगा।

नवगीत दो शब्दों से मिलकर बना है- 'नव' और 'गीत'। 'गीत' उन रचनाओं को कहा जाता है जो गेय होती हैं। गेय रचनाएँ दीर्घजीवी होती हैं। तुलसी की चौपाइयाँ, सूर के पद तथा मीरा के भजन गेय होने के कारण कोटि-कंठों के हार बने। यहाँ यह ध्यान रखना जरूरी है कि रचनाओं का गेय होना उनकी छंदबद्धता पर निर्भर करता है। छंदोबद्ध रचनाएँ शीघ्र स्मरणीय तथा सुर के तारों पर सहजता से गमन करने वाली होती है। बच्चन की 'मधुशाला' भी छंदोबद्ध होने के कारण ही गेय बनी। वर्तमान नवगीतों में छंदबद्धता की अनिवार्यता की शर्त नहीं रहने के बावजूद इन्हें गीत की संज्ञा से अभिहित किया जाना कौतुक प्रतीत होता है।

नवगीतों के आजकल कई संग्रह बाजार में उपलब्ध हैं। इनकी रचनाओं पर दृष्टिपात करने से यह पता चलता है कि इनसे मिलती-जुलती शैली में पहले भी अनेक कविताएँ लिखी गयी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व लिखी रचनाओं में भी इनकी झलक मिलती है लेकिन उन्हें नवगीत न कहकर पुरातन शैली का ही अंग माना गया। यह जानना अत्यंत रोचक होगा कि नवगीतों पर चर्चा हेतु आयोजित गोष्ठियों में भी इनकी शैली पर सहमति नहीं बन पायी है। नवगीत असमानधर्मी होने के साथ-साथ लीक पर चलने के विरूद्ध है। अत: इनका मानक तय करने में समय लगना स्वाभाविक है।

नवगीत के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए रचना के उद्देश्य पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। वास्तव में किसी भी रचना की सार्थकता उसकी विषय-वस्तु तथा उद्देश्य पर निर्भर करती है। रचनाएँ ऐसी हों जो न केवल 'स्वांत: सुखाय' हो बल्कि सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की अवधारणा से परिपूरित हों। वही रचनाएँ कालजयी होती हैं जो सर्वजन हितों को ध्यान में रखती हुई लोकमानस की व्यथा को मुखरित करती हैं। कोरी कल्पनाओं के उड़ान की कोई आयु नहीं होती। वह पानी के बुलबुले की तरह क्षणजीवी होती है। कवि की दृष्टि सिर्फ महल के खूबसूरत कंगूरों पर ही नहीं जानी चाहिए, बल्कि महल की नींव में गड़े उन मूक पत्थरों पर भी जानी चाहिए जिनकी पीठ पर महल के प्राचीर खड़े हैं। मैं कवियों की कोमल कल्पनाओं के विरूद्ध नहीं हूँ लेकिन मेरा यह मानना है कि कल्पनाएँ मात्र कागज का फूल बनकर न रह जाएँ बल्कि उनमें यथार्थ की भूमि पर खिले पुष्पों का परिमल भी व्याप्त हो।

वर्तमान में नवगीत को पारिभाषित किए जाने से बड़ा काम इन्हें साहित्य की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जाना है, लेकिन सामाजिक रीति-नीति के अनुसार बिना परिचय के किसी को साथ रखे जाने की परंपरा नहीं है। इसलिए नवगीतों को यथार्थ के मानदंड पर खड़ा उतरना होगा, तभी साहित्य के परिदृश्य पर उन्हें स्थायी आश्रय मिल पाएगा।

निस्संदेह नवगीतों में कुछ ऐसे बन पड़े हैं जो कवि की कवित्व प्रौढ़ता का संकेत देते हैं। भविष्य में जब भी नवगीतों का इतिहास लिखा जाएगा तब यही नवगीत मील का पत्थर साबित होंगे।

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी, पेंशन अनुभाग
विसमुलेधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840189

◆ लेख ◆

ग्रीष्म और ग्राम्य गीत

डा. विमलेंदु कुमार 'विमल'

लोक भावनाओं से जुड़ी लोक भाषा में प्रचलित या लिखित साहित्य को लोक साहित्य की संज्ञा दी जाती है। लोकगीत मानव कंठ के द्वारा सदियों से अपने पूर्व परिवेश में चलकर आज भी उसी रूप में अक्षुण्ण है। इसकी परंपरा उतनी ही पुरानी है जितना प्राचीन सृष्टि का विकास।

ग्राम्य गीतों में हृदय की सहज अनुभूतियाँ सजीव भाषा में मार्मिक ढंग से रागात्मक रूप में व्यंजित होती है जिससे मन-वीणा झंकृत हो जाती है, क्योंकि जन्म से लेकर मृत्यु तक के विविध आयामों से प्रसारित मानव-मन की भावनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति जीवंत रूप में ग्राम्य गीतों में ही हो पाती है। तभी तो रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है- 'लोकगीत तो ग्राम की संपत्ति है।' इसीलिए आज के कोलाहल भरे परिवेश में इन गीतों की विशिष्ट पहचान ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी बनी हुई है।

अपने देश में यद्यपि छः ऋतुएँ हैं जिनमें मात्र तीन ही प्रधान हैं- जाड़ा, गर्मी और बरसात। ग्रीष्म ऋतु मुख्यतः तीन महीने ही प्रकृति के हृदय-पटल पर अपनी विकरालता के लिए विख्यात है- चैत, वैशाख और जेठ। ग्रीष्म पर वीरगाथा काल से लेकर हिंदी के आधुनिक काल तक के कवियों ने अपनी तूलिका चलाई है। साथ ही संस्कृत साहित्य के उन्मत्त गायक महाकवि कालिदास ने अपने गीतिकाव्य 'ऋतु संहार' में ग्रीष्म के वर्णन में बड़ी ही स्वाभाविकता का सन्निवेश किया है-

गज- गवय- मृगेंद्राः वहिन-संतप्त देहा।
सुहृद इव समेता द्वंद्वभावं विहाय।
दुतवह- परिखेदात्- आशु निर्गत्य कक्षा
द्विपुल- पुलिन देशां निम्नगां संविशंति।

अर्थात ग्रीष्म के ताप से व्यथित हाथी और सिंह के झुंड अपने स्वाभाविक शत्रु भाव को त्याग कर पहाड़ की गुफाओं में शीतलता प्राप्ति के लिए भटक रहे हैं। साथ ही वे सभी प्यास बुझाने के लिए सरिताओं की ओर भी जा रहे हैं। यह तो ग्रीष्म की ही विशेषता है कि उसने शत्रु-भाव को भी मित्र-भाव में परिवर्तित कर दिया है। यही कारण है कि मुक्तक सम्राट बिहारी लाल ने लिखा है-

'जगतु तपोवन सौ कियो दिरघ, दाघनिदाघ'

यानी कि ग्रीष्म ने अपने प्रभाव से इस जगत को ही तपोवन के रूप में परिवर्तित कर दिया है। ग्रीष्म ऋतु में चैत उतरते और वैशाख चढ़ने पर सूर्य की किरणों से मानों अंगार बरसने लगता है। चारों तरफ अग्नि के दाहक परिवेश से हड़कंप मच जाता है जिससे प्रकृति के रोम-रोम प्रचंड लहरों से लहकने लगते हैं। नदी, नाला और तालाब के पानी सूख जाते हैं। पशु-पक्षी पानी के लिए तड़पने लगते हैं, जिससे लगता है सूर्य की किरणों से धरती पिघलकर धधक रही है या समुद्र रूपी सृष्टि जगत में मानों बाड़बाग्नि चल रही है जिससे लगता है शायद पानी का स्रोत ही सूख गया है। तभी तो जायसी ने 'नागमती वियोग खंड के बारहमासा' में लिखा है-

जेठ जरे जग चलै लुवारा,
उठहि बवंडर परहि अंगारा।'

अर्थात जेठ के महीना में चारों तरफ अंगार बरस रहे हैं और रह-रहकर रोम-रोम को झुलसा देने वाले अंगारों की आँधी उठ रही है जिससे मन व्याकुल और भयभीत हो रहा है। ऐसे परिवेश में विरहिणी नायिकाओं का धैर्य संयम की चहारदीवारी को पार करने लगता है। फिर तो वसंत के मादक परिवेश में कोयल की कूक विरहिणियों के हृदय में हूक भरने लगती है। इस स्थिति का वर्णन भोजपुरी सम्राट भिखारी ठाकुर ने अपने 'बारहमासा' में सरसता के साथ किया है-

कोइली के मीठी बोली, लागेला करेजे गोली
पिया बिनु भावे न चइतवा बटोहिया।

इतना ही नहीं डा. नवल किशोर प्र. श्रीवास्तव ने अपने 'बारहमासा' में ग्रीष्म के दुष्परिणामों का बड़ा ही स्वाभाविक वर्णन किया है-

वैशाख हे सखि! सूखेला घमुआ से
गछिया विरिछिया के पात हे।
पिया बिनु विरह में कुछ न सोहाय मोहे
नीको न लागे दिन-रात हे।

ग्रीष्म की बेचैनी उस समय असहाय और पीड़ादायक लगने लगती है, जब पेड़-पौधे भी हमें शीतलता प्रदान करने में असमर्थ हो जाते हैं और वह भी

ग्रीष्म के उवाल से त्रस्त होकर किसी दूसरे पेड़ की छाया के आगोश में जाने के लिए बेचैन रहते हैं। इस स्थिति का वर्णन बिहारी लाल ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है-

बैठी रही अति संघन बन पैठि सदन तन माँह,
निरख दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह।।

मैथिली कोकिल विद्यापति ने अपने बारहमासा में ग्रीष्म के दाहक क्षण का उत्तेजक और सरस वर्णन किया है। वैशाख की तपन से धरती का पोर-पोर तप रहा है। वर्षा का कहीं नामोनिशान भी नहीं है। ग्रीष्म की चपेट में मनुष्य का मन हिरण-सा चंचल हो गया है, जिसके कारण यह स्थिति मृत्यु के समान कठोर और पीड़ादायक लग रही है। ऐसे में कामदेव विरहणियों को अपने वाणों से घायल कर उसमें अधीरता पैदा कर रहे हैं-

वैशाख तबे खर भरन समान। कामिनी कंत हनए पंचवान।

डा. बालगोविंद झा 'व्यथित' ने अपने 'चौमासा' मैथिली गीतों में नायिकाओं के हृदय में मार्मिक उद्‌गारों को दलका तो दिया है, लेकिन अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने का भरपूर प्रयास भी किया है-

'चैत हे सखि, चित भेल चंचल यौवन भेल बलाय यों
अन धन रहितए बेचि खेचिखाइत हूँ इहो न बेचल जाय यों
वैशाख हे सखि! उष्म ज्वाला घाम से भीजल शरीर यों
सगर शरीर चानन लेपितहूँ जूँ गृह रहितथि कांत यों।'

चैत मास में गोरी का चित चंचल और यौवन उसे भार-सा लगने लगा है। फिर भी उसे वह मर्यादा की खोह से निकलने नहीं देती। भले ही वैशाख के तप्त अंगारों की बौछार से उसका शरीर पानी-सा होकर खलबलाने ही क्यों न लगे? लेकिन, वह अपने प्रियतम के बिना अपने शरीर पर चंदन का लेप नहीं चढ़ाएगी।

इतनी दारुण और दुष्कर स्थिति होते हुए भी ग्रीष्म का महीना भारतीय जीवन-जगत में खुशियों का उपहार भी लेकर आता है। खलिहान इस मौसम में अन्न से भरने लगते हैं। कटनी के दौर से मजदूर भी झूमने लगते हैं। ऐसे परिवेश में वह अपनी प्रिया के आमंत्रण का विस्मरण कर जाता है, क्योंकि पत्नी के व्यंग्य-वाणों से मर्माहत होकर वह किसान से मजदूर होकर प्रवासी हो गया। फिर वह खाली हाथ क्यों लौटे? इसका चित्रण भिखारी ठाकुर यथार्थ की कसौटी पर कसकर किया है-

हरवा जोतइते तोरा गोरवा पिरइले
रुपिया के मुँह नहि देखलि रे पियवा।

इसलिए सजनी की स्मृति को दिल में बसाये वैशाख के बरसते अंगारों में पसीने से लथपथ होकर भी वह कर्म की प्रधानता को स्वीकारते हुए उमंग पूर्वक कटनी में लगा रहता है-

चैत नहीं आइब वैशाख नहीं आइब,
गोरी कटनी के हो महीनमा।
आहो चुयेला हो पसीनमा
तोरा सूरत पे जरब नगिनवा हे धनिया,
आइब फागुन महीनमा

जेठ की भरी दुपहरी में सूर्य की सिंदूरी लपटों की चिलमिलाहट और हवाओं के उष्म बवंडर से वनों में दावाग्नि चलने लगती जिससे वन के समस्त प्राणी रूई की तरह जलने लगते हैं, जिसकी भयंकर आवाजों से वातावरण प्रकंपित हो जाता है। धुँआ की काली घटाओं की मृग-मरीचिका में किसान पानी की आशा लगाए आकाश की ओकर देखने लगते हैं, फिर भी वर्षा नहीं होती, जिसे देख इंद्र देवता भी ठगे-से रह जाते हैं और सोचने लगते हैं- क्या मेरे पास जो पानी बरसाने की गगरी थी वह कहीं फूट गई? इस परिचित्रण द्वारा अपने गीत में प्रो. उमाकांत वर्मा ने विचित्र कौतूहल का समावेश किया है, जिसमें ग्रीष्म से उत्पन्न मानव-मन की अधीरता का बड़ा ही स्वाभाविक चित्रण हुआ है-

खेतवा के रोड़वा से सानल अखियाँ
धधक देखतअ आकाश
फूटी गइले गगरी का इन्नर सोचत
होई गईले लोरवो उदास।

किंतु ग्रीष्म की संध्या और रात्रि बड़ी ही सुहानी और मदमस्त होती है। जब चाँदनी रात की चकाचौंध में फूलों के इत्र से युक्त शीतल-मंद समीर हमारी अंतश्चेतना को स्पर्श करने लगते हैं, तब हममें नई स्फूर्ति और नई अभिलाषाओं का संचार होने लगता है। फिर तो प्रकृति अपने गजरों की गमक की अनुपम समाँ बाँधने लगती है। बाबू रघुबीर नारायण ने अपने गीत 'बटोहिया' में प्रकृति की कोख से उपजे वृक्षों और पुष्पों के इत्र से मादक परिवेश का गुणगान कर रहे हैं-

बिपिन अगम घन सघन बगन बिच
चंपक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया।
द्रुम बट पीपल कदंब निम्ब आम वृक्ष
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया।

'अंजूरी में चाँद' पुस्तक में मैंने अपने गीत में फूलों की गमक से प्रकृति की चूनर में इत्र की गागर उड़ेलकर मुरझाये हुए दिलों को जीवंत करने की कोशिश की है–

फूली फूली फूलवा गमके सारी रतिया–
गमकेला, फूल दिन दुपहरिया गमकेला।।
रिमझिम बरसेला नेह के नगरिया–
बरसेला, मेघ प्रेम–रस बुनिया बरसेला।

ग्रीष्म की दाहकता में विरह रूपी प्रेम प्रेम नहीं होता, वह तो रूदन है। विरह में हास्य का मिश्रण प्रेम की उदात्तता को उभारता है। हास्य और विरह के बीच झूलता हुआ प्रेम उसके नैसर्गिक भाव को प्रकट करता है। इसलिए द्वारिका राय 'सुबोध' ने अपने 'साँसों के सरगम' में ग्रीष्म की जिजीविषा को इंगित किया है–

शीतल कहाँ समीर है, चलती गर्म उसाँस
दसों दिशाएँ मौन है वातावरण उदास।
जीवन का शाश्वत स्वर इसी में समाहित है।

इसतरह ग्रीष्म से उत्पन्न उद्वेलन की समाप्ति ग्राम्य जीवन में वर्षा के आग्रह से होती है। जब वर्षा की फुहारें धरती को चूमने लगती हैं, तब मन भविष्य के सपनों को सार्थक करने में लगा रहता है। फिर तो मौसम के बदलते ही ग्राम्य गीतों का स्वरूप भी बदलने लगता है। इसलिए लोकभाषा में विभिन्न ऋतुओं से संबंधित लोकगीतों की भरमार है। कुल मिलाकर ग्रीष्म गीतों में प्रेमगीत लौकिक प्रेम को एक नया आयाम प्रदान करते हैं।

ग्राम– सिरदिलपुर, पो.–पटोरी
जिला–समस्तीपुर–848504
(बिहार)

हिंदी में कथा संग्रह/उपन्यास और काव्य पुस्तक लेखन पर प्रेमचंद/ मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना
(आधार वर्ष–2013)

रेल कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा और अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, रेल मंत्रालय की हिंदी में **कथा–संग्रह/उपन्यास और काव्य पुस्तक लेखन** पर क्रमशः **प्रेमचंद और मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार** योजनाएँ लागू हैं।

मौजूदा व्यवस्था के अनुसार इन दोनों योजनाओं के अंतर्गत निम्नानुसार पुरस्कार एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान करने की व्यवस्था की गई है।

क) कथा/कहानी–संग्रह एवं उपन्यास (प्रेमचंद पुरस्कार)

1. प्रथम पुरस्कारः ₹ 15,000/–
2. द्वितीय पुरस्कारः ₹ 7,000/–
3. तृतीय पुरस्कारः ₹ 3,300/–

ख) काव्य/ग़ज़ल संग्रह (मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार)

1. प्रथम पुरस्कारः ₹ 15,000/–
2. द्वितीय पुरस्कारः ₹ 7,000/–
3. तृतीय पुरस्कारः ₹ 3,300/–

<u>प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथिः 30.05.2014 है।</u> सभी प्रविष्टियाँ प्रधान कार्यालय के माध्यम से भेजी जाएँ।

योजना की महत्वपूर्ण शर्तें निम्नानुसार हैं:–

1) इस योजना के अंतर्गत **केवल रेलकर्मी कवि/लेखक** ही भाग लेने के पात्र होंगे।
2) पुरस्कार वर्ष से **पहले तीन वर्ष के दौरान** पहली बार प्रकाशित/ टंकित रचनाएँ ही पुरस्कार हेतु स्वीकार की जाएँगी।
3) पुस्तकें लेखक की पूर्णतः मौलिक कृति तथा पूर्व अपुरस्कृत हों। किसी अन्य भाषा से ली गई अनूदित अथवा संपादित पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा।
4) इस योजना के अंतर्गत एक लेखक/कवि को **लगातार दो वर्ष तक पुरस्कृत नहीं** किया जाएगा।
5) पुस्तक अधिमानतः न्यूनतम लगभग **100 पृष्ठों** की हो।

कृपया प्रत्येक प्रविष्टि के साथ लेखक द्वारा निर्धारित प्रोफार्मा में प्रमाण–पत्र भिजवाया जाए।

(प्राधिकारः रेलवे बोर्ड का 04.02.2014 का पत्रांक हिंदी–2014/प्र.–7/3)

◆ लेख ◆

अपनी शक्ति को पहचानें युवा

डा. शैलेंद्र मणि त्रिपाठी

राष्ट्र का भविष्य युवाओं के हाथ में है। यों भी भविष्य सदैव युवाओं का ही होता है। जब किसी व्यवस्था से युवा लड़ता है, तब व्यवस्था टूटती है। यह सोचना कि नयी व्यवस्था को मानक बनाकर उसे चुनौती दी जाएगी, बेमानी है।

जब व्यवस्था बदलती है तब विकल्प स्वयमेव ही सामने आ जाता है। इसके लिए युवा किसी राजनीतिक नेतृत्व का मुखापेक्षी नहीं रहता। वह स्वयं संघर्ष करता है। नेतृत्व के अनुपस्थित रहने पर भी संगठित होकर वह व्यवस्था में परिवर्तन करता है। देश में जब भेद-भाव, असमानता, बेरोजगारी, जातियों तथा समुदायों के मध्य विभाजन की रेखाएँ राष्ट्र से ऊपर उठकर दिखायी देने लगती है और सर्वत्र केवल विभाजन की संस्कृति ही पसरने लगती है, तब ऐसे ही संघर्ष की जरूरत पड़ती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि नेतृत्व और योजना सामने ही हो। इसका सबसे बड़ा और अन्यतम उदाहरण तो भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में ही मिलता है।

1942 में एक स्थिति ऐसी आयी थी जब इस देश का नेतृत्व यहाँ की जेलों में बंद कर दिया गया। हुआ यह कि महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि उन दिनों तैयार की जा रही थी। आंदोलन का कोई ठोस स्वरूप अभी तब तक तैयार नहीं हो पाया था कि ब्रिटिश हुक्मरानों को भनक लग गयी। प्रशासन ने सभी शीर्ष नेताओं को घूम-घूम कर गिरफ्तार करना शुरू कर दिया।

यहाँ तक कि स्वयं महात्मा गाँधी, उनके सहयोगी महादेव देसाई, सहधर्मिणी कस्तूरबा तक को कारागार में डाल दिया गया। आंदोलन यद्यपि शुरू हो चुका था और देश के तमाम युवाओं ने स्वयं को इससे जोड़ लिया था। अतएव सारा नेतृत्व भले ही सलाखों के पीछे चला गया किंतु आंदोलन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा।

देश की सारी युवा शक्ति नेता विहीन होकर भी दिग्भ्रमित नहीं हुई। आंदोलन की दिशा और दशा बदली नहीं, बल्कि तमाम नौजवानों ने इस आंदोलन के जरिये 'राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम' को एक निर्णायक मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। देश में पूरब से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक सारा राष्ट्र एक भारत बन कर दासता के विरूद्ध अंग्रेजी हुकूमत से लड़ रहा था और देश का नौजवान ही इस लड़ाई का अगुवा बना हुआ था।

इस आंदोलन की दशा और दिशा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक तरफ देश इतने बड़े आंदोलन का सामना कर रहा था तो दूसरी ओर देश का नेतृत्व अलग तरह से अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना कर रहा था। नेतृत्व केवल देश के मोर्चे पर ही नहीं, आंतरिक संवेदना के मोर्चे पर भी संघर्ष कर रहा था। अंग्रेजों ने महात्मा गाँधी, कस्तूरबा और महादेव देसाई को पूना के आगा खाँ महल में कैद कर रखा था।

इसी दौरान कस्तूरबा और महादेव देसाई जैसे अपने दो प्रिय सहयोगियों से महात्मा गाँधी का साथ सदा-सर्वदा के लिए छूट गया। पत्नी के रूप में सदैव गाँधी जी की शक्ति-स्वरूपा कस्तूरबा और महादेव देसाई जिन्हें गाँधी जी अपने पाँचवें पुत्र की संज्ञा देते थे, दोनों का ही आगा खाँ महल में दु:खद देहावसान हुआ। यह कल्पना की जा सकती है कि एक तरफ देश सबसे बड़े आंदोलन से जूझ रहा था और देश के सबसे बड़े नेता की संवेदना इस कदर गंभीर रूप से आहत थी। इसके बावजूद इस देश के युवा दासता की जंजीरों से मुक्ति के लिए संघर्षरत थे।

इस संघर्ष की पृष्ठभूमि तय की थी स्वयं महात्मा गाँधी ने। उन्हें राष्ट्रपिता कहा जाने लगा था। गाँधी जी ने जिस राष्ट्र को 'एक' बनाया और जिसके बारे में लोक को जागृत किया, वह देश कोई क्षेत्र विशेष नहीं था। किसी जाति विशेष के भी नहीं थे उस देश के लोग। वास्तव में, गाँधी की कल्पना में कोई संप्रदाय नहीं था। वह किसी विशिष्ट दल के नेता नहीं थे।

जो युवा आंदोलन कर रहे थे, वे किसी एक जाति विशेष के नहीं थे। किसी संप्रदाय विशेष के नहीं थे। यह समूचा भारत ही एक प्रकार से यज्ञकुंड बना हुआ था और नौजवान 'हव्य' के रूप में आहुति दे रहे थे। महात्मा गाँधी ने यही किया था। उन्होंने युवा शक्ति

को 'राष्ट्र की शक्ति' के रूप में पहचाना था। इसीलिए उस समय जो चेतना थी, वह थी भारतीयता की चेतना। सभी 'भारतीय' बन कर राष्ट्र को स्वतंत्र बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

कितनी विडंबनापूर्ण स्थिति थी कि इस दौरान लगभग दो वर्ष तक महात्मा गाँधी जेल में रहे। उनके दो प्रिय सहयोगी सदा के लिए उनका साथ छोड़ गये। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तो महादेव देसाई को महात्मा गाँधी की 'एक्स्ट्रा बॉडी' ही कहा करते थे। देसाई का जब निधन हुआ, तब वहाँ के जिलाधिकारी ने उनके शव को स्वयं जलाकर अंतिम संस्कार कर देना चाहा; किंतु महात्मा गाँधी जी ने ऐसा नहीं होने दिया और महादेव देसाई का अंतिम संस्कार उन्होंने स्वयं किया। बाद में उसी स्थान पर उनका स्मारक भी बनाया गया।

कहने का तात्पर्य यह है कि 1942 के उस स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं के सामने न तो कोई नेतृत्व था और न ही कोई विकल्प। नेतृत्व और विकल्प के नहीं रहते हुए भी युवा शक्ति ने उस आंदोलन को सही दिशा में चलाया और कहना न होगा कि आंदोलन के परिणाम बहुत ही अच्छे रहे।

वर्तमान में स्थिति उन दिनों की अपेक्षा बहुत ही भिन्न है। आज के नौजवान को विकल्प पहले दे दिया जा रहा है और तब उससे कहा जा रहा है संघर्ष करने के लिए। नेतृत्व के दावे भी तमाम किए जा रहे हैं। कितनी त्रासद और विडंबनापूर्ण स्थिति है कि इस विचित्र दावे में नेता भी हैं, विकल्प भी। इसके बावजूद नौजवान दिग्भ्रमित हैं। वह तमाम खंड-उपखंड में विभाजित हैं। विभाजित हैं जातियों में, भाषाओं में, संप्रदायों में। क्षेत्रवाद, भाषावाद उन्हें बाँटे हुए है जबकि गाँधी जी ने युवा शक्ति को पहचाना था, वह थी केवल 'भारतीय'। उस समय भी डा.अंबेडकर, मास्टर तारा सिंह, मुहम्मद अली जिन्ना जैसे लोग थे, किंतु महात्मा गाँधी ने उन सभी को एक साथ जोड़ा। किसी की भी शक्ति विभाजित नहीं होने दी और विभाजन को अप्रासंगिक बताकर उसके नकारात्मक पहलुओं से लोगों को अवगत कराया।

महात्मा गाँधी ने उस समय जो माहौल राष्ट्रवासियों को दिया, उसमें विशुद्ध भारतीयता थी। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक का युवा केवल भारतीय था। इसीलिए सभी शीर्ष नेता जब कारागार के हवाले कर दिए गए, तब भी हमारी तत्कालीन युवा शक्ति 'भारतीय' बन कर भारत को दासता से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करती रही। उसकी संघर्ष की दिशा पर कोई संकट नहीं आया। कोई भ्रम नहीं उत्पन्न हुआ। क्या आज ऐसा नहीं हो सकता?

प्रश्न उठता है कि आज का नेतृत्व युवाओं को केवल 'युवा' क्यों नहीं रहने देना चाहता? क्यों हमारे देश के इन युवाओं को जातियों-संप्रदायों-क्षेत्रों में बाँट दिया गया है? क्या ऐसी विभाजित शक्ति कभी समन्वित रूप से भारतीय शक्ति की विराटता-संपदा की अनुभूति करा पाएगी? राष्ट्र के साथ यह विभाजन कितना बड़ा विश्वासघात है? इसका अनुमान क्या है किसी को?

जाहिर है, यह स्थिति बदलनी होगी और इसे बदलने के लिए हमें सबक लेना होगा अपने राष्ट्र के समृद्ध इतिहास से; सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गौरव की सार्थक परंपरा से। यह कार्य केवल हमारे युवा ही कर सकते हैं। समय की मांग है कि हमारे युवा राजनीति का मुखापेक्षी होना बंद करें। अपने आपको पहचानें। स्वयं की असीम शक्ति को भी पहचानें। नेतृत्व से अपेक्षा करना बंद करके स्वयं को 1942 की स्थिति से जोड़ें। युवा शक्ति यदि ऐसा कर लेती है तो वह दिन दूर नहीं जब भारतीयता शिखर पर होगी और तब पनाह मांगती फिरेंगी सारी विभाजक शक्तियाँ। दूर हो जाएँगी विषम और नकारात्मक परिस्थितियाँ। संप्रति यही मांग है समय की और भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी जरूरत भी है यही। यही है हमारी स्वाधीनता और समृद्ध, सदृढ़ लोकतंत्र का सबसे बड़ा आधार भी।

प्रभारी 'सिटी टाइम्स'
रेलवे स्टेशन रोड, गोरखपुर
संपर्क: 9336445253

गो गोचर जहँ लगि मन जाई, सो सब माया जानहुँ भाई।
संत तुलसीदास

◆ लेख ◆

बनती-बिगड़ती हिंदी

प्रभाकर मिश्र

भाषा शब्द संस्कृत की भष् धातु से बना है, जिसका अर्थ बोलना है। यह भावों और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। भाषा सदैव विकसित और परिवर्तित होती रहती है। भारतवर्ष के ही भाषा इतिहास को देखा जाए तो पता चलता है कि 1500 ईसा पूर्व में भारत में आगमन के समय आर्यों की भाषा वैदिक संस्कृत थी, जिससे लौकिक संस्कृत का विकास हुआ। लौकिक संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से धीरे-धीरे हिंदी का विकास हुआ। स्वयं हिंदी भी पिछले 1000 वर्षों में अनगिनत बदलाव देख चुकी है। विदेशी संपर्क के कारण इस पर भारोपीय भाषाओं, फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रेंच आदि भाषाओं का प्रभाव पड़ा और इन भाषाओं के बहुत सारे शब्द हिंदी में आए। माना जाता है कि मध्यकाल (1500 से 1800 ई.) में फारसी के लगभग 3500 शब्द, अरबी के 2500 शब्द, पश्तो के 50 शब्द और तुर्की के 125 शब्द हिंदी में आए। उदाहरण के लिए परेशान, हमेशा, ख़ुशी, सब्ज़ी, दिवार, दरवाज़ा, ताज़ा, शहर, हिंद, पर (पंख), पसंद, ज़िंदा, बस्ता, मुर्दा, ख़रीदना आदि शब्द फारसी के, खान, बाजी, बेगम, कैंची, तमग़ा, चक़मक़ आदि शब्द तुर्की के और पाद्री (पादरी), अनन्नास, बाल्टी, चाबी आदि शब्द पुर्तगाली भाषा के हैं।

हिंदी का प्रयोग न्यूनाधिक संपूर्ण भारतवर्ष, नेपाल, पाकिस्तान, मारीशस, फिजी, ट्रिनिडाड, टोबैगो और प्रवासी भारतीयों के माध्यम से संपूर्ण विश्व में हो रहा है। सिनेमा, टेलीविजन और इंटरनेट ने इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया है। आवागमन के साधनों, बाजार की गतिविधियों, रोजगार के अवसरों और उच्च शिक्षा के लिए विश्व की दूरियाँ कम होती जा रही हैं। लोगों का आपस में संपर्क बढ़ने के कारण भाषाओं में भी शब्दों और शैलियों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया तेज हो गई है। प्रतियोगिता के इस युग में भाषाओं के बीच गलाकाट प्रतियोगिता चल रही है। विद्वानों का मानना है कि इससे विश्व की सभी भाषाओं का स्वरूप बदल रहा है। निश्चय ही हिंदी भी इस बदलाव से अछूती नहीं है। हिंदी पर सर्वाधिक प्रभाव अंग्रेजी भाषा का पड़ा है। हिंदी पहले भी कई बदलाव देख चुकी है, परंतु वर्तमान चुनौती सबसे कठिन है। अच्छे रोजगार के लिए अंग्रेजी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना लोगों की विवशता बन गई है क्योंकि विदेश में ही नहीं अपितु, स्वदेश में भी उच्च श्रेणी की नौकरी अंग्रेजी के अच्छे ज्ञान के बिना नहीं मिल सकती है।

संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के बाद अनुच्छेद 351 में किए गए प्रावधान के अनुरूप इसके विकास के प्रयास किए गए। इसी क्रम में केंद्र सरकार द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग गठित कर संस्कृत की धातुओं, उपसर्गों और प्रत्ययों की सहायता से हजारों शब्दों का सृजन कराया गया। सरकार की राजभाषा नीति के तहत सरकारी कार्यालयों के काम-काज, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, सरकारी रेडियो और टेलीविजन के कार्यक्रमों आदि में इन नवसृजित शब्दों से युक्त भाषा का प्रयोग होने से एक अलग तरह की हिंदी बन गई जो आम बोल-चाल की हिंदी से भिन्न और जटिल है। यह हिंदी आम-जन तो क्या पढ़े-लिखे सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए भी कठिन लगती है। प्रारंभ से ही इस हिंदी के स्थान पर जन-सामान्य में प्रचलित भाषा के प्रयोग की मांग उठ रही है। इस भाषा की जटिलता के कारण अंग्रेजी और हिंग्लिस के प्रयोग को बढ़ावा मिला। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग अपनी सुविधा के लिए अंग्रेजी लिखने और बोलने लगे। उन्होंने बहाने के तौर पर मानक हिंदी को कठिन बताना शुरू कर दिया।

राजभाषा बनने और राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में उल्लिखित 14 कागज-पत्रों में द्विभाषी प्रयोग की अनिवार्यता के कारण बड़े पैमाने पर अनुवाद का कार्य हुआ और आज भी हो रहा है। मक्षिका स्थाने मक्षिका के सिद्धांत में विश्वास करने वाले अनुवादक मानक शब्दावलियों को सामने रखकर शब्दों का प्रयोग करने लगे। ऐसे अनुवाद की भाषा कठिन और प्रवाह रहित हो जाती है। इस समस्या से केंद्र सरकार के सभी मंत्रालय, विभाग, बैंक और उपक्रम दो-चार थे। इसे

समझते हुए सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने सरकारी कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग करने हेतु 26 सितंबर 2011 को सभी विभागों और मंत्रालयों को निर्देश जारी किए। इस आदेश के अनुसार पुलिस, कोर्ट, ब्यूरो, रेलवे स्टेशन, बटन, कोट, पैंट, सिग्नल, लिफ्ट, फीस, कानून, अदालत, मुकदमा, दफ्तर, एफ.आई.आर. जैसे अंग्रेजी, फारसी और तुर्की भाषा के प्रचलित शब्दों का चलन जारी रहेगा। इसके साथ ही हिंदी के मिसिल (फाइल), प्रतिभूति (सिक्योरिटी), कुंजीपटल (की-बोर्ड), संगणक (कंप्यूटर), प्रत्याभूति (गारंटी) आदि के स्थान पर अंग्रेजी के वैकल्पिक शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखकर प्रयोग करने की अनुमति दे दी है। उपर्युक्त परिपत्र में कहा गया है कि आधिकारिक पत्राचार में उर्दू, अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसमें यह भी कहा गया है कि सरकारी कार्यों में शुद्ध हिंदी में अनुवाद करने की बजाय देवनागरी लिपि में अंग्रेजी के शब्दों का इस्तेमाल करना ज्यादा बेहतर है।

स्वतंत्र भारत में संविधान के प्रावधानों के अनुसार अंग्रेजी सह राजभाषा के रूप में राजभाषा हिंदी के हाथ में हाथ डालकर चल रही है। यह स्थिति समानांतर बहती दो नदियों के समान है जिनका पानी बहकर एक दूसरे में मिलता रहता है। भारत की नई पीढ़ी बहुभाषा-भाषी है। वह हिंदी के शब्दों के प्रयोग वाली अंग्रेजी और अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग वाली हिंदी बोलती है। पंजाबी गानों के बोल गुनगुनाती है और उर्दू की शायरी के उदाहरण देती है। वस्तुस्थिति यह है कि देश-विदेश में नई हिंदी की रचना हो रही है। कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल और बाजार की शब्दावली पूरे विश्व में एक होने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। सरकारी शब्दावली आयोग द्वारा सृजित संगणक, परिकलित्र, संघनित्र, प्रत्याभूति जैसे शब्द पीछे छूट रहे हैं और कंप्यूटर, इंटरनेट, कैलकुलेटर, गारंटी जैसे शब्द चलन में हैं। रिक्शेवाला भी टाइम पूछता है समय नहीं। आज फैक्स, स्पीड-पोस्ट, रजिस्ट्री, मिस्डकाल, रिचार्ज, टैरिफ, टॉपअप, बैटरी, चार्जर, बैलेंस, सिगनल, एस.एम. एस. वेबसाइट, ई-मेल, प्रोफाइल, बायोडाटा जैसे हजारों शब्द आम आदमी की जुबान पर हैं। अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले, अंग्रेजी से प्रतिष्ठा पाने के इच्छुक तथा भाषाई हीन-भावना से ग्रसित लोग अंग्रेजी मिश्रित भाषा के प्रचलन को बढ़ावा दे रहे हैं। इस कड़ी में डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, कानूनविद् आदि व्यवसायों के लोग भी शामिल हैं जिनके व्यवसाय संबंधी कार्य अधिकांशत: अंग्रेजी में संपन्न होते हैं।

अंग्रेजी को हमारे देश की प्रगति एवं उन्नति का मंत्र और सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार माना जाता है। इसलिए हिंदी और देश की अन्य भाषाओं में अंग्रेजी की शब्दावली को ठूँसने का चलन जोर पकड़ता जा रहा है। इसके फलस्वरूप हिंग्लिस अस्तित्व में आई है। इसे कुछ विद्वान मैट्रो-हिंदी का नाम भी देते हैं। यह अंग्रेजी के मोह से जन्मी है। यह देश की सर्वाधिक तेजी से उभरती हुई भाषा है। इस भाषा में हिंदी वाक्यों में अंग्रेजी शब्दों का बाहुल्य होता है। यह भाषा बहुत तेजी से लोकप्रिय हो रही है। इसमें हिंदी वाक्यों में अंग्रेजी के शब्दों के साथ-साथ पदबंध (फ्रेज) भी धड़ल्ले से प्रयोग किए जाते हैं। अंग्रेजी के शब्दों के साथ करना, सकना, होना के प्रयोग से इच्छित क्रियापद बनाए जाते हैं। अंग्रेजी के संयोजकों (कनेक्टिव) तथा क्रिया-विशेषणों (एडवर्व) के प्रयोग में कोई रोक नहीं रहती। इसे आमतौर पर देवनागरी में लिखा जाता है परंतु सुविधानुसार कुछ अंग्रेजी के शब्द या पदबंध रोमन में भी लिख दिए जाते हैं। इसकी लोकप्रियता के कारण ही बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने विज्ञापनों में हिंग्लिस का प्रयोग कर रही हैं।

हिंदी और अंग्रेजी की नजदीकी से अंग्रेजी के तमाम पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्द भी हिंदी के हो गए हैं। अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग भारत के बड़े शहरों में पहले से हो रहा है। अब टेलीविजन, सिनेमा, मोबाइल फोन और बोलचाल के माध्यम से यह नई शैली धीरे-धीरे भारत के दूरस्थ क्षेत्रों और ग्रामीण अंचलों में भी लोकप्रिय हो रही है। असंख्य लोग अनजाने में ही अंग्रेजी मिश्रित भाषा बोलते हैं। हिंदी में चुपके-चुपके शामिल हुए अंग्रेजी शब्दों की सूची बहुत लंबी है। उदाहरण के तौर पर आजकल निम्नलिखित वर्गों के शब्दों का प्रयोग आम है- गिनती के शब्द, दिनों के नाम, रंगों के नाम, शारीरिक अंगों के नाम, फलों के नाम, सब्जियों के नाम, पशु-पक्षियों के नाम, खाद्य पदार्थों के नाम, रोगों के नाम आदि। औपचारिक बातचीत के अनेक शब्दों/पदबंधों का प्रयोग सहज ही किया जा रहा है, जैसे- 'थैंक् यू', 'एक्सक्यूज मी', 'वेरी गुड', 'कांग्रैच्युलेशंस', 'हैपी बर्थ डे'। स्थिति

ऐसी बन गई है कि धीरे-धीरे मूल हिंदी के शब्द स्मृति से गायब हो रहे हैं।

सोशल साइट्स, इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रिंट मीडिया हिंग्लिस के सबसे बड़े प्रचारक के रूप में उभरे हैं। यहाँ कुछ विज्ञापनों की कैच लाइनें दी जा रही हैं जिनमें हिंग्लिस का प्रयोग है- 'लाइफ हो तो ऐसी', 'ये दिल मांगे मोर', 'ये ही है राइट च्वाइस बेबी', 'समर्स का कूल पार्टनर' आदि।

हिंदी फिल्मों में प्रयोग हो रही भाषा में भी बदलाव दिखाई पड़ रहा है। प्रारंभ में इन फिल्मों की भाषा साफ, सरल और सहज थी जबकि आज अशुद्ध हिंदी और हिंग्लिस का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है। अब गाली-गलौज के प्रयोग में भी किसी को परहेज नहीं है। फिल्मों के गाने तो प्रारंभ से ही हिंदुस्तानी में लिखे जा रहे हैं। अब उनमें पंजाबी और अंग्रेजी के शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग बहुतायत में होने लगा है। 'सेकेंड हैंड जवानी' (फिल्म-कॉकटेल), 'दिल गार्डेन गार्डेन' (फिल्म-क्या सुपर कूल हैं हम), 'शर्ट दा बटन' (फिल्म-क्या सुपर कूल हैं हम), 'लेजी लैंड' (फिल्म-घनचक्कर), 'इश्क वाला लव' (फिल्म-स्टूडेंट ऑफ द ईयर), 'पानी दा रंग' (फिल्म-विकी डोनर) इसके कुछ उदाहरण हैं। आजकल फिल्मों के नाम भी अधिकांशतः अंग्रेजी या हिंग्लिस में होते हैं, जैसे- 'बदमाश कंपनी', 'एक था टाइगर', 'साहेब, बीवी और गैंगेस्टर', 'मेरे डैड की मारुति', 'चोर चोर सुपर चोर', 'शुद्ध देशी रोमांस', 'जिंदगी फिफ्टी -फिफ्टी' आदि।

हिंदी फिल्मों के डायलॉग्स में भी मिली-जुली भाषा का प्रयोग होता है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'चेन्नई एक्सप्रेस' में तमिल भाषियों की हिंदी बोल-चाल के उदाहरण मौजूद हैं। यथा- दीपिका पादुकोण (शाहरुख खान से)- 'हमलोगों जहाँ से खड़ी होती स्टेशन वहीं से शुरू होती।' और 'जब भी मैं अपने अप्पा के सामने तुम्हें देखती तुम मुंडी हिलाना।'

अतीत में हिंदी के ध्वज-वाहक रहे समाचार-पत्रों में भी अंग्रेजी और हिंग्लिस के प्रयोग की होड़ लगी हुई है। उनमें स्तंभों के नामों में हिंदी के स्थान पर अधिकांशतः अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है जैसे- आई नेक्स्ट में 'सिटी फोकस', 'कैंपस लाइव', 'हाई लाइफ', 'बिजनेस', 'एंटरटेनमेंट', 'प्वाइंट आफ व्यू', 'कैरिअर एंड एजूकेशन', 'स्पोर्ट्स'। समाचारों के विषय जैसे- 'क्या रिटायर होगा ये पाइरेट', 'फिल्मों के फेवरिट इंस्पेक्टर' और 'स्टाइल में ट्विस्ट है' (अमर उजाला, बरेली 4 अगस्त 2013) 'हरियाली के साथ संभालें किचन का बजट', 'बड़े फाल्ट से ठप्प हुए दो सब स्टेशन' (दैनिक जागरण बरेली 26 जुलाई 2013), 'एस.एम.एस. से जनरल टिकट भी होंगे बुक' (हिंदुस्तान, बरेली 15 जुलाई 2013), 'दहेज के लिए बहू से ब्रूटल बिहैवियर' (आई नेक्स्ट, बरेली 26 जुलाई 2013), 'क्या सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर फ्रेंडशिप करना सेफ है' (आई नेक्स्ट, बरेली 5 अगस्त 2013) आदि।

यही हाल इंटरनेट की सोशल साइट्स, आर्कुट, फेसबुक, ट्विटर आदि पर हिंदी का है। वहाँ हिंदी के साथ हर प्रकार का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी टाइपिंग की असुविधा के कारण अधिकांश प्रयोक्ता रोमन लिपि में हिंदी लिखते हैं। जो देवनागरी में लिखते हैं वे अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के शब्दों को बेहिचक प्रयोग करते हैं। इसप्रकार हिंदी बदल रही है और साथ ही साथ बिगड़ भी रही है। भविष्य में व्याकरणाचार्यों को हिंदी का नया व्याकरण लिखने की आवश्यकता होगी। लगता है हिंदी से एक नई भाषा बन रही है जैसे संस्कृत से अपभ्रंश का विकास हुआ था। इन बदलावों को रोका नहीं जा सकता, परंतु अराजकतापूर्ण बदलावों से अनेक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। अंग्रेजी शब्दों और पदबंधों के निरंकुश प्रयोग वाली भाषा उस आम हिंदी भाषी की समझ में नहीं आती है जो अंग्रेजी में पारंगत नहीं है। इसलिए मध्यम मार्ग श्रेयस्कर है। आम बोलचाल की हिंदुस्तानी का प्रयोग किया जाए जिसमें न तो संस्कृतनिष्ठ शब्दों की भरमार हो और न ही अंग्रेजी के कठिन शब्दों की।

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक (राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर, बरेली-243122
संपर्क: 09411048379

सुंदर संशय को नहीं, महा महोत्सव येह।
आतम परमातम मिल्यो, देह खेह की खेह॥

◆ लेख ◆

सर विश्वैश्वरैया

राजीव कुमार आनंद

सर मोक्षगुंडम विश्वैश्वरैया का जन्म 15 सितंबर 1860 को मुदेनहल्ली गाँव में जिला कोलार मैसूर राज्य, वर्तमान में कर्नाटक में हुआ था। इनके पिता श्री निवास शास्त्री संस्कृत के विद्वान एवं आयुर्वेदाचार्य थे, माता वेन्काचामा एक धर्मनिष्ठ महिला थी। केवल 15 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। सर विश्वैश्वरैया की प्रारंभिक शिक्षा चिकाबल्लापुर में एवं उच्च शिक्षा बैंगलोर में हुई। उन्होंने 1881 में मैसूर राज्य से छात्रवृत्ति प्राप्त कर साइंस कालेज पूना में इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए में प्रवेश लिया। सन 1883 में इन्होंने एल.सी.इं. एवं एफ.सी.इं. की परीक्षा (वर्तमान में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की डिग्री के समतुल्य) सिविल इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी में पास की। इंजीनियरिंग की परीक्षा पास करने के बाद सर विश्वैश्वरैया ने नासिक में पी.डब्लू.डी. में सहायक अभियंता के पद पर कार्य करना आरंभ किया, बाद में इन्होंने इंडियन इरिगेशन कमीशन में अपनी सेवा शुरू की। अपने कार्यकाल के दौरान इन्होंने सिंधु नदी से शहर को पानी देने के लिए नहर का डिजाइन किया। इन्होंने सिंचाई के लिए एक नई प्रणाली का डिजाइन किया जिसे ब्लाक सिस्टम का नाम दिया। इन्होंने बाँध से व्यर्थ जाने वाले पानी के उपयोग के लिए स्टील के दरवाजों का डिजाइन किया। मैसूर राज्य के कृष्णराज सागर डैम का डिजाइन भी इन्हीं के द्वारा किया गया। देश, समाज एवं इंजीनियरिंग के प्रति उनके योगदान को देखते हुए सर विश्वैश्वरैया के जन्मदिवस 15 सितंबर को उनके सम्मान में पूरे भारत में इंजीनियर्स- डे के रूप में मनाया जाता है।

सर विश्वैश्वरैया साधारण जीवन जीने में विश्वास रखते थे एवं मांस-मदिरा से दूर रहते थे। सन 1912 में मैसूर राज्य के महाराजा ने इनको मैसूर राज्य का दीवान (प्रथम मंत्री) नियुक्त किया। सर विश्वैश्वरैया ने मैसूर राज्य के दीवान का पद स्वीकार करने के पूर्व अपने सभी रिश्तेदारों एवं मित्रों को रात्रिभोज पर आमंत्रित किया एवं उन सभी से कहा कि वह इस प्रतिष्ठित पद को तभी स्वीकार करेंगे यदि आप सभी वादा करें कि इसको ग्रहण करने के बाद आप में से कोई भी मुझे किसी प्रकार का पक्षपात करने के लिए अनुरोध नहीं करेगा। मैसूर के दीवान के पद पर रहते हुए उन्होंने राज्य में शिक्षा एवं औद्यौगिक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके कार्यकाल में मैसूर राज्य में बहुत सी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हुई, जिसमें संदल उड फैक्ट्री, सोप फैक्ट्री, मेटल फैक्ट्री, क्रोम टेनिंग फैक्ट्री, प्रमुख हैं। उनके द्वारा भद्रावती ऑयरन एवं स्टील वर्क्स की स्थापना की गई। मैसूर के दीवान के पद से उन्होंने सन 1918 में स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर लिया। सर विश्वैश्वरैया को सन 1955 में भारत के सर्वोच्च रत्न से सम्मानित किया गया। उनके देश के प्रति अमूल्य योगदान को देखते हुए उनके 100 वर्ष की आयु पूरी करने के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। उन्होंने हैदराबाद शहर को बाढ़ से बचाने के लिए फ्लड प्रोटेक्शन सिस्टम का डिजाइन एवं विकास किया। इसके विकास के बाद सर विश्वैश्वरैया को खासी लोकप्रियता मिली। उन्होंने कावेरी नदी पर बाँध का निर्माण कराया। जब बाँध का निर्माण हुआ तब यह एशिया का सबसे बडा रिजरवायर था। उन्हें फादर ऑफ माडर्न मैसूर की पदवी दी गई। उनके द्वारा अन्य शिक्षण संस्थानों की जो स्थापना की गई उसमें जयाचमा राजेंद्र पालीटेक्निक, बैंगलौर कृषि विश्वविद्यालय, स्टेट बैक ऑफ मैसूर, द सेंचुरी क्लब मैसूर, मैसूर चैंबर ऑफ कामर्स प्रमुख हैं। उनको अपने कार्य के प्रति समर्पण समय प्रबंधन के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। उन्होंने मैसूर राज्य में अनेक नई रेलवे लाइनों की स्थापना की। बैंगलोर में उनके नाम पर बैंगलोर में म्यूजियम का नाम 'द विश्वैश्वरैया इंडस्ट्रियल एवं टेक्नोलॉजिकल म्यूजियम' रखा गया है। इसके अलावा विश्वैश्वरैया कालेज ऑफ इंजीनियरिंग बैंगलोर, सर एम. विश्वैश्वरैया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बैंगलोर एवं विश्वैश्वरैया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नागपुर, कालेज ऑफ इंजीनियरिंग पुणे उनके सम्मान में उनके नाम पर है।

उनको देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। उनको लंदन इंस्टीट्यूट द्वारा सिविल इंजीनियर्स द्वारा लगातार पचास वर्षों तक मानद सदस्यता प्रदान की गईं। प्रजावाणी अखबार द्वारा किए गए सर्वे के अनुसार वह कर्नाटक के सबसे अधिक लोकप्रिय व्यक्ति थे और उन्हें सेलिब्रिटी का दर्जा प्राप्त था। देश की लंबे समय तक सेवा करने के बाद 14 अप्रैल 1962 को उनका स्वर्गवास हो गया।

सी.से.इंजी./आई.एस.ओ.सेल
यांत्रिक कारखाना
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9451859580

लेखकों/रचनाकारों से निवेदन

'रेल रश्मि' में प्रकाशनार्थ तकनीकी, गैर-तकनीकी, लेख, कहानी, कविता, ग़ज़ल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कृपया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर पाठ अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पिन कोड संख्या व संपर्क नंबर अवश्य उद्धृत करें।

कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। साथ ही रचना तीन-चार फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।

रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक
रेल रश्मि
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर-273012
ईमेल: seniorol9@gmail.com

◆ साहित्य ◆

श्रीलाल शुक्लः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डा. कृष्ण चंद्र लाल

सर्जनात्मक ऊर्जा संपन्न हिंदी साहित्यकारों की जो नयी पीढ़ी देश को आजादी मिलने के बाद तैयार हुई, उसमें अपनी विशिष्ट रचना-शैली, मर्मभेदी व्यंग्य विनोद-वृत्ति, प्रगाढ़ लोक संपृक्ति, धारदार व्यंजनापूर्ण चुटीली गद्य-भाषा, नवीन जीवन बोध आदि की दृष्टि से पृथक पहचान बनाने वाले लेखक के रूप में श्रीलाल शुक्ल का नाम विशेष रूप से उल्लेख्य है। वह किसी परंपरा में खप जाने वाले लेखक नहीं हैं।

श्रीलाल शुक्ल का अनूठापन चौंकाने वाला न होकर, नयी सृजनशीलता का परिचायक और नये जीवन बोध से संपन्न कराने वाला है। इसीतरह उनके व्यक्तित्व का अनूठापन भी कोई अजूबा न होकर, सहज आत्मीयता जगानेवाला और अपरिचय की दीवार को बेबाकी और मधुरता को ढहानेवाला रहा। एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में दीर्घकाल तक कार्य करते हुए भी उनके रिश्ते तमाम बड़े-छोटे लोगों के साथ बेहद आत्मीय रहे। अधिकार-मद से सदैव दूर-दूर रहे श्रीलाल शुक्ल।

श्रीलाल शुक्ल सदैव जिज्ञासु लेखक बने रहे। उनका रचनात्मक लेखन उनके छात्र-जीवन से ही प्रारंभ हो गया था। 1945 में जब वह 'प्रयाग विश्वविद्यालय' में पढ़ रहे थे, छात्रावास में पानी और पेयजल की किल्लत होने पर उन्होंने राष्ट्रीय प्रयाण गीत के आधार पर एक पैरोडी लिखी थी-

हम बिना बाथरूम के मर जाएँगे
नाम दुनिया में अपना भी कर जाएँगे
जून में हम नहाकर घर से चले
अब नहाएँगे फिर जब घर जाएँगे
यह न पूछो कि मर कर किधर जाएँगे
होगा पानी जिधर, बस उधर जाएँगे

रचना के उस ऐतिहासिक क्षण को याद करके उन्होंने एक जगह लिखा- 'वह मेरी पहली व्यंग्य रचना थी। पता नहीं कैसे लिख गया, किंतु यह जरूर हुआ कि लगभग दस साल बाद जब व्यंग्य लिखना शुरू किया, तब यह आत्मविश्वास रहा मुझमें कि दस साल की सीनियारिटी वाला लेखक होने के नाते किसी पोच बात को भी सीनियारिटी के सहारे चला सकता हूँ।'

व्यंग्य-लेखन से शुरू हुई श्रीलाल शुक्ल की रचना-यात्रा ने उन्हें बहुत जल्द ही हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्य लेखक के रूप में प्रतिष्ठापित कर दिया। वर्ष 1957 में उनका पहला उपन्यास आया 'सूनी घाटी का सूरज' जबकि 1958 में उनका पहला व्यंग्य संग्रह आया 'अंगद का पाँव' फिर एक अन्य उपन्यास 1962 में 'अज्ञातवास'। इसके बावजूद उन्हें उपन्यासकार नहीं माना गया। वह व्यंग्य लेखक के रूप में ही पहचाने गए और उन्हें हिंदी गद्य साहित्य में व्यंग्य-विधा को प्रतिष्ठित करने का गौरव अवश्य प्राप्त हुआ।

1968 में प्रकाशित हुआ श्रीलाल शुक्ल को अप्रतिम ख्याति दिलाने वाला उपन्यास 'राग दरबारी'। दोनों एक-दूसरे के पर्याय-से हो गए। उनकी ख्याति एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में भी हो ही गयी। दूरदर्शन ने भी 'राग दरबारी' को धारावाहिक के रूप में प्रसारित किया। इसके बाद वह व्यंग्य एवं उपन्यास लेखन में सक्रिय रहे। उनके दो उपन्यास अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए- 'आदमी का जहर' एवं 'मकान'। 'सीमाएँ टूटती हैं' एक अपराध कथा संयोजन वाला उपन्यास है। इसमें दुर्गादास नामक एक व्यक्ति को हत्या के जुर्म में उम्रकैद हो जाती है। हत्या का रहस्य-भेदन करने के क्रम में धर्म, प्रेम तथा अपराध-क्षेत्र के कई क्रूर यथार्थ उजागर होने लगते हैं। हत्या से उत्पन्न स्थितियों के बीच मानवीय संबंधों हत्या के प्रयासों और उन संबंधों को बचाने की कोशिश के बीच की तनावपूर्ण स्थितियों को बड़ी संजीदगी से उभारने में सफल हुए श्रीलाल शुक्ल सीमाएँ टूटती हैं, के जरिये। 'आदमी का जहर' भी एक रहस्यपूर्ण अपराध कथा है जो प्रचलित फुटपथिया जासूसी उपन्यासों से अलग हटकर भद्र समाज की वास्तविकता को इस तरह सामने लाता है कि पाठक अपराध जगत की भयावहता से परिचित होने के साथ ही कथा को रोमांचक ढंग से एक ही बैठक में पढ़ जाता है। 'मकान' उनके तमाम उपन्यासों की तुलना में कुछ जटिल उपन्यास है जिसमें एक मध्यमवर्गीय नौकरी पेशा आदमी के लिए मकान पाने की समस्या के विचित्र ढंग से हास्यास्पद और कठोर

अनुभवों को उजागर किया गया है। इस उपन्यास की कथा के केंद्र में है एक संगीत-साधक नारायण बनर्जी। विडंबना यह कि मकान उन्हें जब खूब भटकाव के बाद मिलता है; तब उनकी इस नश्वर संसार से विदाई ही हो जाती है। उनकी हत्या हो जाती है जिसके बाद होती हैं तमाम शोक सभाएँ। उनकी संगीत साधना की प्रशंसा की जाती है। पुलिस भी चुस्ती दिखाती है और अपराधी भी पकड़ लिए जाते हैं। इसतरह मकान की समस्या के बहाने वह सामाजिक यथार्थ का विडंबनापूर्ण त्रासद चित्र उकेरते हैं वह। मकान उपन्यास में कलाकार की जिंदगी के वे व्यक्तिगत संदर्भ भी हैं जिनमें विलासिता, कामुकता और लंपटता के दृश्य मनोरम सजीवता के साथ अंकित हैं। नगर निगम के भ्रष्टाचार और कर्मचारियों के आंदोलनों का चित्रण करके लेखक ने इसे व्यक्तिगत अनुभव होने से बचा लिया है।

'राग दरबारी' जैसा कालजयी उपन्यास हिंदी साहित्य-जगत को देने के बाद श्रीलाल शुक्ल कुछ समय के लिए भिन्न दिशा में मुड़कर 'लोकप्रिय साहित्य' के रूप में जासूसी एवं अपराध-विषयक उपन्यास लिखने जरूर लगे, किंतु पहला पड़ाव (1987) वह पुनः पुराने रूप में व्यंग्य की पैनी और कसी हुई धार के साथ ही अवतरित हुए। उन्होंने राग दरबारी में व्यवस्था के शोषण तंत्र पर निर्ममता के साथ प्रहार किया था और अमानवीयता की परतों को निस्संगता के साथ किया था रूपायित; किंतु पहला पड़ाव के बारे में तो कहा गया है- 'यह कथाकृति बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में ईंट-पत्थर और नट-बोल्ट होते जा रहे आदमी की त्रासदी को अत्यंत मानवीय और एक यथार्थवादी फलक पर उभारती है।' तीन भागों में विभक्त इस उपन्यास की कथा विलासपुर के श्रमिकों, ठेकेदारों, इंजीनियर और शिक्षित बेरोजगारों पर केंद्रित है। उन्होंने विलासपुर के मजदूरों के संघर्ष को केंद्र में रखकर समाज के उस वर्ग के चरित्र को उभारा है जो किसी न किसी रूप में उनसे जुड़ा है। इन श्रमिकों का मुंशी है सत्ते उर्फ संतोष कुमार। यह भारतीय समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो युवा है, लाचार, बेरोजगार और जैसे-तैसे जीविका के साधन की तलाश में भटकता फिरता है। सत्ते को मजदूरों से सहानुभूति है। वह उन्हें शोषण के जाल से मुक्त कराना चाहता है, किंतु जिस तरह की व्यवस्था में रहकर वह काम कर रहा है, वह उसको वैसा करने का इजाजत नहीं देती। दूसरी तरफ वकील, ठेकेदार, नेता आदि हैं जो आम आदमी और श्रमिकों के नियामक हैं। 'नेता' नामक एक मजदूर की हत्या अथवा रहस्यमय ढंग से हुई 'मृत्यु' के बाद सत्ते 'उ.प्र. दैनिक मजदूर संघ' का गठन करता है, किंतु सत्ताधीशों की चाल के चलते नाकाम हो जाता है। यह उपन्यास यह भी रेखांकित करता है कि प्रभुत्वशाली वर्ग इतना ताकतवर हो गया है कि मजदूरों के संगठन की शक्ति भी कमजोर पड़ गयी है। वैसे श्रीलाल शुक्ल अपने पात्रों की संघर्ष शक्ति को कमजोर नहीं पड़ने देता। जैसे ही वह टूटती-बिखरती है, एक नये संघर्ष का वातावरण बना देता है किंतु सभी संघर्ष समाप्त होते हैं एक तरह की परिणामशून्यता में। मजदूरों की दुर्दशा का यह आख्यान रोमांचक है। यह उपन्यास राग दरबारी की तरह निराशा और पराजय में समाप्त नहीं होता। सत्ते अंत में तय करता है कि वह कानून की पढ़ाई करेगा और उसी से लौह-जाल तोड़ेगा। संभवतः लेखक की दृष्टि में सत्ते की जिंदगी का यही पहला और सार्थक पड़ाव है।

पहला पड़ाव के लगभग ग्यारह वर्षों के बाद श्रीलाल शुक्ल का बहुचर्चित, सुविख्यात और व्यास सम्मान से पुरस्कृत उपन्यास 'विस्रामपुर का संत' (1998) प्रकाशित हुआ जिसमें उनकी रचनात्मक प्रतिभा का हिंदी जगत ने सोत्साह स्वागत किया। उन्होंने तमाम प्रशासकीय जिम्मेदारियों और व्यस्तताओं के बीच जिसतरह का सर्जनात्मक लेखन किया, गौरतलब है। न तो उनके लेखन में सरलीकरण और सतहीपन है और न ही किसी किस्म का प्रशासनिक अहंकार। भाषा इस कदर सर्जना से परिपूर्ण रचनात्मक कसाव लिए कि चकित रह जाना पड़ता है कि उन्होंने कैसे यह भाषायी-बोध अर्जित किया। उनका लेखन उनकी सतत् साधना का फल है।

'राग दरबारी' की रचना-प्रक्रिया के बारे में उन्होंने बताया था कि किताब लिखने के लिए उन्हें कोई जगह बाजिब ही नहीं जान पड़ती। अस्तु, अपना मकान बीवी, बच्चों, शुभेच्छुओं के लिए छोड़कर अलग से दूसरा फ्लैट ले लिया। वीराने में मोटरकार खड़ी करके उसी की सीट पर पसर का लिखते रहे। दूर के डाक बंगलों में रहकर लिखा। रचना के साथ प्रेमिका भाव रखकर ही रचीं अपनी ज्यादातर रचनाएँ। गँवार चरित्रों के बीच रहने, उठने-बैठने से जबान खराब हो गयी। भद्र

महिलाएँ तो डिनर टेबिल पर भौंहे उठाकर तरेरती थीं मुझे।

शुक्ल जी यह भी रेखांकित करते हैं कि व्यंग्य-लेखन महज तीता-बुझा और गाली-गलौज नहीं बल्कि एक सुशिक्षित मस्तिष्क की देन है। इसमें जहाँ पुराने साहित्य और इतिहास से सामान्य ज्ञान वाली संदर्भ बहुलता सूक्ष्म संकेतों का तेवर और धार देती है, वहीं व्यंग्यकार भाषा-प्रयोगों की उच्छलता, विडंबना और पैरोडी, लोक-मानस में व्याप्त कथाओं, गीतों और रीति-रिवाजों के संकेतों को एक साथ लेकर कुछ ऐसी कृति का सृजन करता है जो चोट करती है और चोट के दायरे से दूर रहने वालों का मनोरंजन भी। जिन पर चोट होती है, वह तिलमिला उठते हैं। ऐसा लेखन आदर्शों के ह्रास और मानसिक तिलमिलाहट की ही नहीं, अच्छी तैयारी की अपेक्षा करता है। वह व्यंग्य को गंभीर और दायित्वपूर्ण लेखन मानते हैं। बिना जीवन-जगत के व्यापक अनुभव, साहित्य, धर्म, इतिहास, भौगोलिक संरचना, दर्शन, आदर्श समाज-व्यवस्था की परिकल्पना और समृद्ध भाषा-स्रोत के कोई अच्छा व्यंग्यकार नहीं बन सकता। वह मानते थे कि व्यंग्य का रास्ता बहुत ही पेंचदार होता है। जटिल और अत्यंत दुरूह कर्म है व्यंग्य-लेखन। उन्होंने लिखा है- व्यंग्य सत्य की खोज नहीं, झूठ की खोज है। यही है उसका पेंचदार रास्ता। झूठ की खोज के सहारे अथवा उसके बहाने ही यहाँ सत्य को पहचानने की प्रक्रिया चलती है। व्यंग्य लेखन में विषय क्षेत्र की कोई सीमा नहीं है। व्यक्तिगत राग-द्वेष, पसंद-नापसंद आड़े नहीं आता। यही वजह रही कि सरकारी नौकरी में रहते हुए भी उन्होंने सरकारी नीतियों, कार्यालयों, कार्यों, अधिकारियों और कारकुनों की आलोचना करने में कोई हिचक नहीं दिखाई। जीवन की कुरीतियों-विकृतियों, सामाजिक असंगतियों की बिना लाग-लपेट के शल्य क्रिया के लिए उन्होंने व्यंग्य को विधा के रूप में अपनाया और उसी के जरिये देश और समाज की विसंगतियों की आलोचना करने के साथ ही राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी उकेरा।

अंगद का पाँव, यहाँ से वहाँ, आओ बैठ लें कुछ देर, यहाँ से वहाँ, कुछ जमीन पर कुछ हवा में जैसे उनके व्यंग्य संग्रह में कुछ ऐसे रोचक शीर्षक हैं कि पाठक उन्हें पढ़ने के लिए एकबारगी तो बेचैन हो उठता है और जब तक पूरा पढ़ नहीं लेता, उसको चैन नहीं मिलता। इसके बावजूद व्यंग्य लेखन में प्रतिष्ठित होने के बाद जब श्रीलाल शुक्ल ने सूनी घाटी का सूरज के जरिये उपन्यास के क्षेत्र में कदम रखा तब किसी ने नोटिस नहीं ली। 'राग दरबारी' को 'कहानी' पत्रिका के संपादक श्रीपत राय ने तो उसे ऊब का महाग्रंथ तक कहा। कुरुचिपूर्ण कुरचित कृति बताते हुए उन्होंने यहाँ तक कह दिया था कि यह 'अपठित' ही रह जाएगी। नेमिचंद जैन ने भी राग दरबारी को असंतुष्ट, क्षुब्ध व्यक्ति की शिकायतों और खीझ के आक्षेपों का अंतहीन सिलसिला कहा, किंतु राग दरबारी को न केवल साहित्य अकादमी सम्मान मिला, बल्कि वह श्रीलाल शुक्ल की पहचान और कालजयी कृति के रूप में समादृत हुआ। जनतंत्र को लूटतंत्र दर्शाने के लिए उन्होंने शिवपालगंज को चुना जो देश के लोकतंत्र के घिनौने चेहरे को विद्रुपता के साथ दिखाता है। वह हमारे समय के एक निर्विवाद बड़े लेखकों में रहे।

डी-55, सूरजकुंड कालोनी
गोरखपुर-273015
संपर्क: 9451958715

जितनी दिल की गहराई हो उतना गहरा है प्याला,
जितनी मन की मादकता हो उतनी मादक है हाला,
जितनी उर की भावुकता हो उतना सुंदर साकी है,
जितना ही जो रसिक, उसे है उतनी रसमय मधुशाला!

हरिवंश राय 'बच्चन'

◆ साहित्य ◆

कह रैदास...

उदय प्रताप सिंह

इक्कीसवीं सदी के भारतीय सुनो! शताब्दियों पूर्व की बात है बनारस की सँकरी और धुमावदार गलियों में लोट-पोट कर मेरा बचपन बीता। माँ घुरबिनिया और पिता रग्घू मुझे गंगा की पावन जलधार में स्नान कराते-कराते इतना पवित्र बना गए कि 'कठवत का जल भी मुझे गंगा का आभास' कराने लगा। वैसे आज गंगा की दशा देख मेरा मन खिन्न हो उठता है। फिर भी गंगा तो गंगा हैं। इनके काशी में ही अस्सी-पच्चासी घाट हैं। इन्हीं के आसपास मेरी जन्मभूमि है। मैं रोजी-रोटी की तलाश में पुश्तैनी धंधा जूता गाँठने से जुड़ गया। फिर क्या था। काशी की फिजाँ में धर्म का रंग मुझपर भी चढ़ने लगा। प्रभुस्मरण और जूता गाँठना मेरा पारिवारिक संस्कार जो ठहरा! जूता गाँठते हुए और गाँठने के बाद जब भी समय मिला प्रभु को याद कर लिया। उन्हें माथे से लगा लिया। उनका और मेरा संबंध चंदन और पानी का है। वह दीपक है और मैं बाती। वह सोना है मैं सुहागा। वह बादल पर है और मैं उनकी तान पर नाचने वाला मत्त मयूर। मेरे और प्रभु के अनेक नाते हैं- 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।'

मेरी जन्मभूमि काशी शताब्दियों से समभाव की केंद्र है। भगवान बुद्ध इसके साक्षी हैं। समता, ममता, करुणा, दया और अहिंसा यहाँ के आचरण में पगी, जीवन में दिखती हैं। यहाँ का मेहतर शंकराचार्य को चेताता हुआ महत्तर बन जाता है। वह कहता है कि आत्मा का स्वरूप जब एक है तब भेद कैसा गुरुदेव? फिर मैं क्यों चुप रहता- 'सों कहाँ जानै पीर-पराई जाकै दिल में दरद न आयी।' सुदूर ईरान से आकर शेख अली यहाँ के औलिया बन गए। हिंदू धर्मग्रंथों के प्रेमी दाराशिकोह को उपनिषद पढ़ाने वाले ब्राह्मण परिवार आज बनारस में मौजूद हैं। शताब्दियों से मेरे गाँवनुमा संस्कृति वाले शहर बनारस में जातियों, भाषाओं, प्रांतों, रीति-रिवाजों, मजहबों एवं धर्मों के फूल एक ही वृक्ष पर खिलते रहे हैं। यहाँ सभी गंगा जल से आचमन करते हैं। मेरा शहर लघु भारत जो ठहरा। इसकी विविधता में एकता मुझे संतुष्टि देती है। सबके अपने मुहल्ले, घाट, खानपान और उपास्य हैं, पर नहाते हैं सभी गंगा में, जमाते हैं मगही पान और बुनते हैं भाईचारे का ताना-बाना। हमारे अवढरदानी शिव को देखिए न- 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर पर करते सबकी खैर।' इस माहौल में मेरे मुँह से अनायास ही निकल पड़ा- 'नीचे ते प्रभु ऊँच कियो है।'

मैं बहुत छोटा था, अभी रंपी की धार भी नहीं पहचान सका था, जूता गाँठना तो दूर की कौड़ी थी। एक दिन गंगा की 'बहरी अलंग' में एक तेजस्वी संन्यासी दिखा। मन ललक उठा उससे बातें करने का। डरते-सहमते उसके करीब गया। लगा कि ज्योति से ज्योति मिल गई। आत्मा खिल गई। उसने पूछा- 'कौन?' मैंने कहा- 'गुरुदेव मेरा नाम रैदास।' कुशलक्षेम हुआ। कहा- 'कल आओ'। मैं कल पहुँच गया। उसने फिर कहा- 'कल आओ'। इस तरह आते-जाते सैंकड़ों दिन बीत गए। मुझे खीझ उत्पन्न हुई। मैं क्रोधित भी हुआ, पर संन्यासी का रहस्य मेरी समझ से परे था। अकस्मात् एक दिन उस तेजस्वी संन्यासी ने अपने प्रधान शिष्य अतंतानंद से कहा- 'इसे कंठी दे दो, राम-नाम जपे।' एक वर्ष बाद देश के साधु-संतों को पंचगंगा बुलाओ। संतों का भंडारा करो। उसी में रैदास को शिष्य बनाने की घोषणा होगी। मैं तो फूला नहीं समाया। मुझे तो 'रामरतन' मिल गया। प्रभु कृपा से मेरा कंठ फूट पड़ा-

रामानंद मोहि गुरु मिल्या, पायो ब्रह्म बिसास।
रामनाम अमीरस पीयौ, रैदास ही भयौ पलास।।

अब राम-नाम की रट लग गई। बालपन का संसार न जाने कहाँ छूट गया। समाज की मनोग्रंथियाँ न जाने कब विगलित हो बह गई। एक दिन औचक बड़े भाई कबीर टहलते हुए उसी घाट पर मिल गए। पता चला उनका गुरु भी यही संन्यासी (वैरागी) है। मुझे अपने किए पर संतोष हुआ। कबीर भी सच्चे धर्म की तलाश में उस संन्यासी तक पहुँच सके थे। फिर कभी सेन, कभी धन्ना, कभी पीपा, कभी सुरसरि तो कभी-कभार पद्मावती मिलती रहीं। इन सबमें मैंने प्रभु भजन के साथ कर्मनिष्ठा की अद्भुत ललक देखी। कबीर को करघे पर कपड़ा बुनते और रसना से राम-नाम जपते देख मेरे मन

में भी रोटी और राम की साध जगी, प्रभु कृपा हुई, बानी चल पड़ी-

'जिह्वा सों हरि नाम जपि, हत्थन सों करि काम।'

जीविका के लिए जूता गाँठना और स्वयं के साथ समाज के उद्धार के लिए रामनाम का जप मुझे जम गया। कुछ ही दिनों में रामनाम की 'तारी' लग गई, पर अपने ही शहर में कुछ नासमझ ब्राह्मणों ने मेरा घोर विरोध शुरू कर दिया। मुझसे घृणा करने लगे और लोगों से मुझे घृणित-अछूत बताने लगे। मैंने उनसे बहुत बार कहा कि प्रभु पर सबका समान अधिकार है। मंदिर, देवालय सभी के हैं। हम सभी एक ही परमपिता की संतान हैं। पर अपने अहमन्यता में चूर वे कहाँ मानने वाले वाले? मैं जितना प्रभु में लीन होता गया वे उतना ही मेरे विरोध में खड़े होते गए। उनका काम मैं करने लगा पर वे घमंड में अंधे हो गए थे। वे मुझे अब भी अछूत ही मान रहे थे। वे भगवान व धर्म को अपनी पैतृक संपत्ति जो समझते हैं। मैंने प्रभु से उलाहना दिया। उसने कहा- 'धर्म पर डटे रहो एक दिन विजयी बनोगे।' मैंने ऐसा ही किया। वर्षों बाद बड़े-बड़े विप्र मेरा चरण छूकर नमस्कार करने लगे। अब क्या था? प्रभु मुझे और मीठे लगने लगे। प्रतिदिन की सत्संगति में एक दिन विश्वास भरा स्वर फूट ही पड़ा- 'जाति ते कोई पदि न पहुँच्या।' उस दिन खुशी का पारावार उमड़ पड़ा जब मेरी प्रभु निष्ठा को उन्हीं विरोधी ब्राह्मणों ने सराहा-

जाके कुटुंब ढोर-ढोवत फिरत अजहूँ बनारस के आसपासा।
आचार सहित विप्र करैं दंडवत विनतनय रैदास दासानुदासा।

वर्षों की लंबी तंद्रा से अकस्मात् मेरी आँखें खुलीं तो देखता हूँ कि बनारस उसी तरह आडंबर की चादर ओढ़े सोया है। हर जाति अपने से एक छोटी जाति खोज श्रेष्ठता का प्रदर्शन कर रही है। जातीय संगठन मजबूत हो गए हैं। जाति को केंद्र में रखकर राजकाज चल रहे हैं। काशी की यह दुरवस्था देख मेरा हृदय फटा जा रहा है। कभी मैं छूत-अछूत का शिकार बना था। उसीप्रकार आज मेरा समुदाय सामाजिक विषमता के विषदंत से विह्वल है। कई शासन-सरकारें आयीं पर समाज के स्तर पर गैर-बराबरी बनी हुई है। रोटी-बेटी के संबंध आज भी नहीं है। नेता-मंत्री, शासक, प्रशासक आते गए। स्वयं को मोटा करने में समाज को क्षीण करते गए। ये स्थितियाँ देख मुझे बहुत कष्ट होता है।

बनारस आज भी पंडा-पुजारी से भरा है। शताधिक मंदिर और देवालय हैं। घाट और अनेक सार्वजनिक स्थल हैं; पर शायद ही कोई धार्मिक स्थल हो जहाँ मेरे समुदाय का कोई व्यक्ति धार्मिक अधिष्ठान पर बैठा हो। कई शताब्दियाँ बीत गईं। देश भी स्वतंत्र हो गया, पर यहाँ का समाज अब भी भेड़चाल ही चल रहा लकीर का फकीर है। बदला नहीं। कमोबेश यही स्थिति पूरे समाज की है। काशी उसी का नमूना है। मैं किससे कहूँ। अब मेरी सुनता कौन है। मैंने बाल्यकाल से ही प्रभु को दीपक माना था, स्वयं को बाती। उससे अनेक प्रकार के नाते जोड़े थे। रोटी की कमी होने पर उलाहना देता था। विनती करता था, उसकी शरण में जाता था। उस समय जो बहुत कट्टर थे वे मेरे विरोधी बन गए। पर वे भी प्रभु की भक्ति पर रीझते थे, एक साथ भजन गाते थे। आज वह माहौल नहीं है। राजनीतिक लाभ के लिए लोग जमीर ही बेच दे रहे हैं। 'स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह:' को बिसर गए हैं।

कभी-कभी मन में आता है कि इससे अच्छा तो छ: सौ वर्ष पीछे का अपना बाल्यकाल ही था। उस समय गुरुवर रामानंद अपने शिष्यों को कितना प्यार उड़ेल देते थे। कितने उदार थे। संस्कृत के पारंपरिक आचार्य थे। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ था। शास्त्र निर्माता थे, पर उनके चेलों में अधिसंख्य निम्नवर्ग से आए थे। उनकी जुबान बोल-चाल की भाषा हिंदी थी। गुरुवर भी कम दूरंदेशी नहीं थे। उन्होंने हम सबों को अपनी हिंदी रचनाओं से ही प्रेरित किया। कबीर की जाति-पाँति का लता-पता नहीं था। मैं अछूत ही था। सेन और तमाम साधुओं की जमात निचले तबके से आयी थी। इतनी लंबी यात्रा के बाद क्या हम वहाँ तक भी नहीं पहुँच पाए हैं। हम पीछे जा रहे हैं या आगे? हम राजनीति कर रहे हैं या आत्मघात? हम अस्पृश्यता मिटा रहे हैं या उसके नाम पर सुविधा का लालच देकर समाज में नई खाई खोद रहे हैं?

इसी बनारस ने मुझे कभी अपना सपूत कहा था। मान-सम्मान दिया था। सर आँखों पर चढ़ा लिया था। मेरी प्रशंसा में कसीदे गढ़े थे। बड़े-बड़े विप्र मेरा अभिवादन करने लगे थे। मेरे नाम पर कई कहानियाँ गढ़ ली गई थीं। आग्नेय नेत्रों से देखने वाले पंडे-पुरोहित मुझे संत-साधक बताकर अपनी दुकान खोलने लगे थे। पर न जाने कौन

सी हवा चली कि मैं घाटों के किनारे एक उपेक्षित घाट पर बैठा दिया गया। विद्वत्-समाज की आँखों से ओझल हो गया। मेरी इच्छा थी कि कबीर की तरह मैं जनम-जनम गुरुवर रामानंद के चरणों से ठोकर खा-खाकर सुरखुरू बनता रहूँ, पर यह हो न सका। मैं गुरुवर से बहुत दूर हो गया। पंचगंगा के पुरोहितों ने मुझे अपने से सटने ही नहीं दिया।

समय ने करवट ली। संप्रदायों का निर्माण होने लगा। जाति के हिसाब से साधु-संत भगत का सम्मान होने लगा। तब तक देश में लोकतंत्र आ गया था। वोट का महत्व बढ़ने लगा। रविदासी समाज की संख्या अधिक थी। अत: मेरे नाम पर भी राजनीति होने लगी। मेरे जन, परिजन, पुरजन पिछड़ गए। बाहर के लोगों ने कब्जा जमा लिया। सोने की पालकी और मुकुट बनने लगा। अखबारों की सुर्खियों में मेरी जन्मभूमि आ गई। मेरे नाम पर पार्क और मंदिर बनाने की होड़ मच गई। यह सब होता रहा और मेरे प्रभु को सब भूलते रहे। आडंबर बढ़ता गया। प्रभु उसी में ढँकता गया। हे बनारसी भाइयो! इसका मुझे गहरा मलाल है। इमारतें बनती गईं, इबारतें मिटती गईं। भक्ति और प्रेम द्वारा समाज बनाने का मेरा संकल्प औंधे मुँह गिर पड़ा।

बहुत दिनों बाद विद्वानों का ध्यान मेरी तरफ गया। मेरी 'बानियों' का पाठ-पुनर्पाठ होने लगा। मेरे नाम पर रामायण भी रचा गया। विद्वानों ने मेरी मूल भावना को समझा। मैं वेद, शास्त्र, उपनिषद् और अपनी माटी में उपजे ज्ञानग्रंथों का समर्थक हूँ; पर कुछ बाहरी चश्मा वाले और कुछ राजनीतिक ग्लास चढ़ाए बुद्धिजीवी मुझे परंपरा का विरोधी सिद्ध करने लगे। मैं तो केवल विकृतियों के निरसन की बात करता था पर वे मेरे नाम पर शास्त्रों को ही खारिज करने लगे। मुझे कष्ट हुआ। पर कुछ ऐसे भी थे जो शास्त्रों की विकृत आख्यायिकाओं में भी अपनी पातालगामी जड़ें देख लेते थे। ऐसे ही ज्ञानवान ज्ञानेश्वर, बशेश्वर और कबीर ने मुझे अपना कहा। कुछ ने तो मेरे नाम पर अकादमियों की स्थापना किया, आधुनिक रोशनी में नहायी कई पुस्तकों का प्रकाशन करवाया। कुछ ने मेरी 'बानियों' को मेरे नाम के मंदिर में उत्कीर्ण कराकर मेरे ही काम को आगे बढ़ाया। मेरे प्रति कवि 'निराला' की सदाशयता देखते बनती है-

ज्ञान के आगर मुनीश्वर थे परम, धर्म के ध्वज हुए उनमें अन्यतम।
पूज्य अग्रज भक्त कवियों के प्रसर, कल्पना की किरण नीरज पर सुघर।
पड़ी ज्यों अंगड़ाइयाँ लेकर खड़ी, हो गयी कविता की आई शुभ घड़ी।
जाति में देखा सभी ने मींचकर, दृग तुम्हें श्रद्धा सलिल से सींचकर।
रानियाँ अवरोध की घेरी हुईं, बाणियाँ ज्यों बनी जब चेरी हुई।
छुआ पारस भी नहीं तुमने, रहे धर्म के अभ्यास में अविरल बहे।
ज्ञानगंगा में समुज्ज्वल चर्मकार, चरण छूकर कर रहा मैं नमस्कार।

हाँ, मैं रैदास आज से छ: सौ वर्ष पूर्व कही अपनी ही 'बानियों' को दोहरा रहा हूँ- जाति से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। सभी 'राजाराम' के बंदे हैं। सबका मालिक एक। सबकी जाति एक। एक प्रेम ही है जिससे सभी जुड़ सकते हैं। मनुष्य क्या देवता भी वही चाहते हैं। मेरी भक्ति प्रभु के प्रति उसी भाव की है। गैर बराबरी और कटुता से समाज टूटता है। आज मुझे लगता है कि धर्म के वास्तविक स्वरूप से सभी संप्रदाय दूर होते जा रहे हैं। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई प्रदर्शन और बाह्याडंबर से एक दूसरे को कट्टर और विद्वेषी बना रहे हैं। जातियों का जाल घना होता जा रहा है। हिंसा में बढ़ोत्तरी और सहनशीलता में कमी आयी है। वैभव का मद बढ़ा है। एक साखी से सतर्क करते हुए मैं आप सब से विदा लेता हूँ-

जात-जात में जात है ज्यौं केलन में पात।
रविदास मनुज न जुड़ सकै जब लौं जात न जात।।

बी.एफ.एस.-13
हरनारायण विहार, सारनाथ
वाराणसी-221007
संपर्क: 9415787367

मधु-व्रत में रत वधू मधुर फल
देगी जग को स्वाद-तोष-दल,
गरलामृत शिव आशुतोष-बल
विश्व सकल नेगी,
वसन वासंती लेगी।

'गीतिका' सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

◆ लेख ◆

वनन में बागन में बगर्‌यो वसंत है

डा. राजेश हजेला

प्राकृतिक रमणीयता की दृष्टि से भारत षड्-ऋतुओं का अभिनव संग्रहालय है। प्रत्येक ऋतु की कमनीय कांति नवोढ़ा नायिका की भाँति उसका नित नूतन नवल शृंगार है। ये सभी ऋतुएँ देवलोक की अप्सराओं की भाँति अपनी मादक पायल की रुनझुन के साथ पृथ्वी लोक में अवतरित होती हैं। अपने मनमोहक हास-विलास और अठखेलियों के साथ जनमानस की चेतना को झकझोरती हुई आने वाली ऋतु के स्वागत में तत्पर होकर उसी में समाहित होती हुई ये ऋतुएँ समय के चक्र को गतिशीलता प्रदान करती हैं। प्रकृति के इस क्रमबद्ध परिवर्तन में वसंत ऋतु को प्रथम वरीयता प्राप्त है। इसीलिए वसंत ऋतु को ऋतुराज की संज्ञा से आभूषित किया गया है। यह अपने में अनुपम, अप्रमेय और अभिनव है। इसमें जहाँ एक ओर भूमि अपनी नवीन उर्वरा शक्ति के साथ बीजों को नवांकुर प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर पादप, लताएँ और वृक्ष अपनी डालियों को कलियों और फूलों के भार से बोझिल हो थोड़ा-सा झुककर मानो ऋतुराज के चरणों में अपनी प्रणति निवेदित करते हैं, जिसका अवलोकन करके हृदय में अंकुरित भावनाएँ स्वर, लय और ताल में आबद्ध होकर जनमानस को गुनगुनाने और गाने के लिए विवश कर देती हैं। भ्रमरों के गुंजन में कोयल की कूक और पपीहा की हूक से काव्य धारा फूटती हुई परिलक्षित होती है जो संपूर्ण मानवता को प्रेमोन्माद में सराबोर होकर उसमें अवगाहन करने हेतु आमंत्रण देती है। रसिक-जन वसंत ऋतु में इन स्वर लहरियों का आनंद प्राप्त करते हैं और ऋतुराज की गौरव-गरिमा का गुणगान करते हैं।

मध्यकालीन कवियों में पद्माकर का भावाकाश अत्यधिक विस्तृत एवं नक्षत्रिकाओं से परिपूर्ण है, जो वसंत ऋतु की सर्वव्यापकता को जन-जन तक पहुँचाता हुआ दृष्टिगोचर होता है-

कूलन में, केलिन में, कछारन में
कुंजन में, क्यारिन में
कलित कलीन किलकंत है
वीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में
वेलिन में
वनन में, बागन में
बगर्‌यो वसंत है

राष्ट्रकवि सोहन लाल द्विवेदी विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से वसंत के आगमन का उद्घोष करते हैं। बौराये आमों की गंध जहाँ एक ओर वासंती उन्माद उत्पन्न करती है वहीं दूसरी ओर प्रेमोन्मत्त नायिका फूली हुई सरसों जैसी पीली साड़ी पहने हुए और बेला की गंध से महकती हुई वसंत के स्वागत में तत्पर प्रतीत होती है-

आया वसंत आया वसंत
छायी जग में शोभा अनंत
सरसों खेतों में उठी फूल
बौरे आमों में उठी झूल
बेला में फूले नये फूल
पल में पतझड़ का हुआ अंत
आया वसंत आया वसंत

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने वसंत के सर्जनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों ही रूपों का चित्रण किया है। उनके काव्य में अप्रत्यक्ष में वसंत को शिव का स्वरूप मानते हुए जहाँ एक ओर ग्रीष्म ऋतु से उत्पन्न होने वाले कालकूट विष को पान करते हुए दिखाया गया है वहीं दूसरी ओर पादप लताओं में नवांकुरों एवं पुष्पों का सृजन करते हुए उनके रचनात्मक स्वरूप का दिग्दर्शन परिलक्षित होता है-

चिर वसंत का यह उद्गम है
पतझर होता एक ओर है
अमृत हलाहल यहाँ मिले हैं
सुख-दुःख बँधते एक डोर हैं

प्रगतिशील साधक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने प्रकृति के नवल शृंगार और मादक रमणीयता को परिलक्षित करके वसंत के आगमन की सूचना प्रदान की है। जब मायामय प्रकृति परिवर्तित रूप-शृंगार के साथ वसुधा पर अवतरित होती है तब वसंत के आगमन का स्वर्णिम क्षण होता है-

लता मुकुल हार गंध भार भर
बही पवन बंद मंद मंदतर
जागी नयनों में बन

यौवन की माया
सखि वसंत आया

प्रयोगवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल को वसंती हवा से ही प्रकृति का कण-कण हास-विलास में तल्लीन प्रतीत होता है। संपूर्ण सृष्टि वसंतागमन से प्रमुदित होकर जनमानस को नवचेतना प्रदान करती हुई वासंती लहर में तिरोहित-सी लगती है-

हँसी जोर से मैं
हँसी सब दिशाएँ
हँसे लहलहाते हरे खेत सारे
हँसी चमचमाती भरी धूप प्यारी
वसंती हवा में हँसी सृष्टि सारी
हवा हूँ हवा मैं वसंती हवा हूँ

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने वसंत को पूर्णत: नवीन दृष्टि से देखा है। यहाँ पर कवि ने एक रहस्यमय ढंग से ऋतुराज का प्राकट्य मानते हुए इस परिवर्तनशील संसार में कुसुमाकर के विराट स्वरूप का मौलिक चित्रण किया है-

दीप्त दिशाओं के वातायन
प्रीति साँस-सा मलय समीरण
चंचल नील नवल भू यौवन
फिर वसंत की आत्मा आयी
आम्र मौर में गूँथ स्वर्ण कण
किंशुक को कर ज्वाल वसन तन

कवि नागार्जुन यद्यपि नयी कविता के प्रवक्ता हैं लेकिन वसंत के आते ही उनका प्रकृति प्रेम जाग्रत हो जाता है। वासंती सौंदर्य की इस मधुर बेला में कवि आम्र मंजरी के इठलाते हुए स्वरूप पर मंत्रमुग्ध-सा होता हुआ नये भाव-जगत की सृष्टि करता है-

रंग-बिरंगी खिली-अधखिली
किसिम-किसिम की
गंधों-स्वादों वाली
ये मंजरियाँ
तरुण आम की डाल-डाल
टहनी -टहनी पर झूम रही हैं

नयी कविता के पुरोधा और तार सप्तक के संपादक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को वसंत ऋतु सोते से जगाती है। मलयज का झोंका उनके लिए संदेश वाहक का कार्य करता है। कवि भाव-गगन में उड़ते-उड़ते कुछ पलों के लिए विश्रांति का अनुभव करता है तभी अचानक वसंत ऋतु के आलोड़न से अंतर में नवचेतना का उन्मेष होता है और कवि का रोम-रोम पुलकित हो कह उठता है कि जागो वसंत आ गया-

मलयज का झोंका बुला गया
खेलते से स्पर्श से
रोम-रोम को कँपा गया
जागो-जागो
जागो सखि वसंत
आ गया जागो

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने वसंत का चित्रण क्रांति-वेला के रूप में किया है। कवयित्री ने जब इस गीत का सृजन किया था उस समय देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन चल रहे थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने उदात्त-भावों से परिपूर्ण इस क्रांतिकारी गीत की रचना की थी। वस्तुत: शृंगार रस की परिपक्वता वीरत्व पर निर्भर है। इसी को साकार करते हुए वसुधा वधू वीर नायक को रिझाने के लिए अपना मादक शृंगार करती है-

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वधु वसुधा पुलकित अंग-अंग
है वीर देश में किंतु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

वास्तविकता तो यह है कि वसंत ऋतु में सुकुमार प्रकृति एक नवयौवना युवती की भाँति प्रकट होती है। यह सुकुमार प्रकृति जहाँ एक ओर जनमानस को सौंदर्य-बोध के साथ उसके रोम-रोम में आनंद भर देती है वहीं विश्व मानवता के लिए संघर्ष करने वाले वीर सपूतों को नयी शक्ति, आशा और नव-चेतना प्रदान करती है। अत: साहित्यकारों ने वसंत का दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण और सफल चित्रण किया है जो आज भी उर-वीणा के तारों को झंकृत करते हुए सृजन को गति प्रदान करता है।

सदस्य, जेड.आर.यू.सी.सी.
4/105, नवाब न्यामत खाँ पश्चिम
फर्रूखाबाद-209625 (उ.प्र.)
संपर्क: 09450205346

◆ लेख ◆

वास्तविक उन्नति

हरगोविंद लाल

संसार में हरेक मनुष्य जिस श्रेणी अथवा स्तर का होता है, जैसे भी उसके ख्यालात होते हैं, वह अपनी योग्यतानुसार संसारी कामों में उन्नति चाहता है। कोई भी मनुष्य एक ही परिस्थिति में नहीं रह सकता, वह उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहता है, ऊपर उठना चाहता है। उदाहरणतया एक विद्यार्थी जो अभी स्कूल में पढ़ता है, उसकी अभिलाषा होती है कि वह बी.ए. अथवा एम.ए. की डिग्री प्राप्त करे। उसके बाद वह और भी ऊँचा उठे और उच्च-स्तर तक पहुँच सके। निर्धन की इच्छा होती है कि धनवान बन जाए। क्लर्क चाहता है कि बड़ा अधिकारी बन जाए। अभिप्राय यह है कि प्रत्येक इंसान के दिल में उन्नति करने की अभिलाषा लगी रहती है, चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरुष, जवान हो अथवा कोई भी हो, एक ही अवस्था में रहना पसंद नहीं करता।

प्रत्येक प्राणी ऊँचा दर्जा प्राप्त करना चाहता है। परंतु देखना यह है कि इंसान किस चीज की उन्नति चाहता है संसारी पदार्थ मिल जाए, बड़ा पद मिल जाए, धन अथवा विद्या की प्राप्ति हो जाए- ये सब मायावी सामान हैं। मान-प्रतिष्ठा-पद की इच्छा केवल शरीर तक ही सीमित है। जब शरीर चला गया तो इसको क्या मिला? विद्या, धन व अन्य सामान शरीर के लिए है। शरीर विनष्ट हो जाने पर ये भी विनष्ट हो जाते हैं। इनकी उन्नति शरीर तक सीमित रही और नष्ट हो गई। यह उन्नति हुई या अवनति। महापुरुषों की दृष्टि से देखा जाए तो इसने अपने अंदर ऐसे ख्याल पैदा किए कि वह पतन की ओर चला गया। जिस दर्जा से उठकर मानव-तन पाया था, इससे ऊपर उठता तो उन्नति थी। यह तो उल्टा चौरासी की ओर चला गया। महापुरुषों का कथन है-

लख-चउरासीह भ्रमतिआ दुर्लभ जनमु पाइओइ।।
नानक नामु समाले तू सो दिन नेड़ा आइओइ।।
-गुरुवाणी

कभी पशु, प्रेत, पेड़, पर्वत, पक्षी आदि बनकर चौरासी की निम्न योनियों में भरमता रहा। चौरासी लाख योनियों के बाद मानुष का दर्जा प्राप्त किया। अब अपने अंदर मायाबी ख्यालात भर लिए, दुनियावी उन्नति को समझना, आत्मा की उन्नति तो नहीं है। झूठे मायाबी ख्यालों से चौरासी खरीदी तो इसका पतन हो गया। उन्नति किससे होती है? आत्मा से ऊपर का स्तर परमात्मा का है। निम्न स्तर पशु-पक्षी नीच योनियों का है। यदि इसके ख्याल विषयों की ओर जाते हैं तो नीचे का दर्जा अर्थात चौरासी लाख योनि खरीद ली। यदि ख्याल भक्ति की ओर जाते हैं तो ऊँचा दर्जा प्राप्त कर लिया। अब यह अपने ख्यालों पर निर्भर है कि जिस तरह की चाहे ख्याल अंदर भरें। महापुरुषों का कथन है-

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मन।।
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तन।।
-गुरुवाणी

यदि मालिक की भक्ति व याद दिल में नहीं है? भगवान की ओर इंसान का मुख नहीं है तो निश्चय ही पतन होगा। ईश्वर कहाँ रहता है? यदि किसी छोटे बच्चे से भी पूछा जाए कि कौन ऊँचा है तो वह ऊपर की ओर उंगली करता है अर्थात ईश्वर ही बड़ा है। ऊँचाई की ओर इंसान तब जा सकता है जब उसकी ओर रुख करेगा। वरना संत फरमाते हैं- 'जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तन।' यदि भक्ति नहीं की तो सुअर और कुत्ते अर्थात पशु का दर्जा मिलता है। यह है इंसान की उन्नति से अवनति का मार्ग। यह है मायावी ख्यालों का परिणाम। यदि उन्नति करनी है तो भक्ति को दिल में बसाना होगा। मालिक की याद में दिल लगाना होगा, फिर उन्नति होगी। पुनः देखो कि क्या दर्जा मिलता है। महापुरुष फरमाते हैं-

जिस घाटे सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु।।
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु।।

जिस इंसान के दिल में मालिक की याद है, वह मुक्त है, आजाद है और सुखल्प है। ऐसे मानुष का दर्जा बहुत ऊँचा है। उस मानुष अर्थात हरि कुल मालिक में कोई अंतर नहीं। यह सच कर जानो कि उनका दर्जा एक ही है। वह इंसान ईश्वर का रुप हो जाता है। केवल करना यह है कि अपने दिल में विषय विकारों के अक्षम ख्यालों को निकालना है और मालिक की याद के विचारों को दिल में बसाना होगा। ये कोई लंबा-चौड़ा

काम नहीं, केवल यही काम करना है। मन के रुख को बदलना है। कहीं जंगलों अथवा पहाड़ों में जाने की जरूरत नहीं। मन के ख्यालों का काँटा बदल दो। मन के ख्याल कहाँ परिवर्तित होते हैं, केवल सत्पुरुषों की संगति में मन का काँटा बदला जा सकता है। संगति का प्रभाव भारी होता है। जैसा संग वैसा रंग। सत्पुरुषों का फरमान है-

दोहा- जिन जैसी संगति करी, तिन तैसो फल लीन।
कदली सीप भुजंग मुख, बूँद एक गुण तीन।।

स्वाति नक्षत्र की बूँद ने जैसी संगति की वैसा ही रूप धारण कर लिया। अगर सीप के मुँह में गिरी तो चमकीला कीमती मोती बन गई, वही बूँद यदि केले के फूल पर गिरी तो कपूर बन गई और यदि साँप के मुँह में जा पड़ी तो विष बन गई। एक ही बूँद ने अलग-अलग संगति से क्रमशः रूप धारण कर लिया। यह है संगति का प्रभाव।

आपने सुना होगा कि वाल्मीकि डाकू था। मार्ग चलते यात्रियों को लूटता भी था और जानलेवा भी बना हुआ था। अपने स्वार्थ के लिए लोगों को दुख देता था। जब संतों की संगति में आया तो वही डाकू वाल्मीकि ऋषि बन गया। यदि कोई ख्यालों को पलटना चाहता है और उन्नति करना चाहता है तो सत्पुरुषों की संगति आवश्यक है। सत्पुरुषों की संगति बड़े भाग्य से मिलती है, प्रत्येक को यह सौभाग्य नहीं मिलता। जीव के जब पूर्व पुण्य उदित होते हैं तो सत्पुरुषों की संगति का संयोग बनता है।

बड़े भाग्य से मानुष देह व सत्पुरुषों का संग मिलता है। अब हरेक का कर्तव्य हो जाता है कि सच्ची उन्नति करे। दुनियावी एवं शारीरिक उन्नति शरीर के नष्ट होने के साथ-साथ मिट जाती है। आत्मोन्नति शाश्वत रहेगी। यह जीव को ईश्वर से मिलाएगी। इसलिए सत्पुरुषों की संगति से नसीहत मिलती है कि भले ही संसार में रहो लेकिन मालिक की याद को दिल में बसाए रखो। अन्य ख्यालों को दिल में स्थान मत दो। भक्तिवाले ख्यालों को बढ़ाओ। सुखी वही रहेगा जिसका मन शांत हो। शांति मालिक की याद से ही प्राप्त होगी और इसी को ही प्राप्त करना है।

जब शरीर नश्वर है और इसे कूच कर जाना है, यदि यह इस संसार में दुखी रहा तो आगे इसको सुख कैसे मिलेगा? आगे भी वही फल मिलेगा अर्थात दुख ही मिलेगा। सुख के साधन के लिए भजनाभ्यास, सेवा, सत्संग और दर्शन-ध्यान इन नियमों को आचरण में लाना है। ये सब साधन जीव को सुखी बनाने वाले हैं।

इसीलिए मानुष जन्म मिला है। जीव गलतफहमी में पड़कर माया की ओर चला जाता है। पहले की कमाई भी व्यर्थ चली जाती है और जीव भी जन्मों तक चौरासी की यंत्रणाएँ सहन करता है। ऐसा कर्म कर चलें कि जिससे आत्मा बंधन से छूट जाए, मालिक से मिलकर एक हो जाए यही जीवन का लक्ष्य है। जीव को पूरा लाभ तभी हो सकता है यदि महापुरुषों के उपदेशानुसार भक्ति के साधनों को अपनाएँ। पुनः यह स्वयं ही अनुभव करेगा कि शांति मिल गई है। मृत्योपरांत शांति, सुख आपके साथ जाएगा। यही सच्ची उन्नति है।

कनिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक(राजभाषा)
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी

देख वसुधा का यौवन भार
गूँज उठता है जब मधुमास,
विधुर उर के-से मृदु उद्‌गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्‌वास,
न जाने, सौरभ के मिस कौन
संदेशा मुझे भेजता मौन!

'पल्लव' सुमित्रानंदन पंत

◆ आलेख ◆

गोपाल शरण सिंह नेपाली का काव्य वैभव

नवीन चतुर्वेदी

हिंदी काव्य-जगत में गीतों के राजकुमार के रूप में कवि सम्मेलनों के मंच पर समादृत गोपाल शरण सिंह नेपाली अपनी रचनात्मक भाव-प्रवणता से लगभग तीन दशक तक रसिक श्रोताओं को मोहित करते रहे। 11 अगस्त 1911 को बेतिया, जिला चंपारण, बिहार में जन्मे गोपाल शरण सिंह उत्तर छायावादी काल के यशस्वी कवि, सुमधुर गीतकार और भावुक एवं संवेदनशील फिल्मकार के रूप में अपनी सामर्थ्य की छाप छोड़ने में सफल रहे।

नेपाली जी की रचनात्मक ऊर्जा और जिजीविषा ने निरंतर संघर्षों के बीच भी उन्हें सतत युद्धमुद्रा में आजीवन हिंदी के ध्वज-वाहक गीतकार के रूप में क्रियाशील रखा। उनकी इसी सक्रियता का प्रमाण सात काव्य संकलनों उमंग(1933), पंछी(1934), रागिनी(1935), पंचमी(1942), नवीन(1944), नीलिमा(1945) और हिमालय ने पुकारा(1963)के रूप में रसज्ञ पाठकों को मिलता रहा।

कवि सम्मेलनों के मंचों पर शृंगार रस के रस सिद्ध गीतकार के रूप में उनकी वाणी की अनुगूँज लगभग तीन दशकों तक गूँजती रही। प्रेम के प्रति सामाजिक वर्जना के भाव ने उनसे एक गीत लिखवाया जिसमें उन्होंने प्रेम को अपराध मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने इस गीत में खुल कर कहा-

सुन कर प्राणों के प्रेम गीत
निज कंपित अधरों से सभीत।
मैंने पूछा था एक बार,
है कितना मुझ से तुम्हें प्यार?
मैं हूँ अपराधी किस प्रकार?

गोपाल शरण सिंह नेपाली के भाव-प्रवण काव्य से मेरा पहला परिचय प्राथमिक कक्षाओं में ही हो गया था। पाठ्य-पुस्तक बाल भारती में तब उनका एक गीत संकलित था, जो आज भी किसी नदी के गिरते हुए प्रपात को देखकर बरबस होठों पर आ जाता है-

यह लघु सरिता का बहता जल,
कितना शीतल, कितना निर्मल।
हिम गिरि के हिम से निकल निकल,
यह विमल दूध-सा हिम का जल,
कर-कर निनाद कल-कल, छल-छल,
बहता आता नीचे पल-पल।
तन का चंचल, मन का विह्वल,
यह लघु सरिता का बहता जल।

नेपाली जी की काव्यधारा का प्रवाह भी एक ऐसी ही लघु सरिता के समान शीतल और विमल है जो कि मन को विह्वल कर देता है। प्रकृति ने उन्हें सर्वदा सम्मोहित किया। पर्वतों में गूँजते स्वर, सतत प्रवाहित नदियाँ, खेत और जंगल उनकी कविताओं में बार-बार भोर के स्वप्न जैसे आए हैं। जब वे मुंबई में रहे तब सागर के चुंबकीय आकर्षण ने उन्हें अपनी ओर खींचा, तभी वे यह कालजयी गीत रच सके जिसमें उन्होंने सागर की लहरों का नृत्य और गान साकार कर दिया-

प्रातः समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावली-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच-नाच
करती हैं लहरें मधुर गान।

उनके संवेदनशील मन ने अपनी कविता में केवल प्रकृति के अनुपम रेखाचित्र ही नहीं खींचे, वरन देश में गरीबी और दरिद्रता से ग्रस्त परिवारों के बच्चों की कुम्हलाई आशाओं के बिंब भी उन्होंने अपनी कविता के फूल के माध्यम से अभिव्यक्त किए। इस कविता में छिपा प्रश्न आज भी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है-

अभी अभी तो खिल आए थे
कुछ ही विकसित हो पाए थे,
वायु कहाँ से आकर इन पर
डाल गई है धूल, कुम्हलाए हैं फूल।

भारत के भाल से दरिद्रता का अभिशाप मिटाने के लिए उनकी लेखनी निरंतर गतिशील रही। उन्होंने ऐसे कई गीत रचे हैं जिनमें वे देश की जवानी का आवाहन करते हैं कि वे इस कुटिल संसार को मिटा कर नई दुनिया रचें। उन्हें लगता है कि धर्म-कर्म की बातें और उपदेश तो दिल में सुलगते अंगार को और भी हवा देते

हैं। युवाओं को परिवर्तन के लिए उनका आमंत्रण क्या आज भी प्रासंगिक नहीं है? वे कहते हैं-

यह उपदेशों का संचित रस तो फीका फीका लगता है,
सुन धर्म कर्म की ये बातें दिल में अंगार सुलगता है,
चाहे यह दुनिया जल जाए, मानव का रूप बदल जाए,
तुम आज जवानी के क्षण में, कुछ ऐसा खेल रचो साथी।

देश की स्वतंत्रता के लिए उनका मतवाला युवा मन शहीदों के गीत गाता था। उन्हें लगता था कि जैसे मौसम एक रंगरेज है जिसप्रकार शहीद भगत सिंह ने मन की गहराइयों से गाया कि- 'मेरा रंग दे वसंती चोला, माई रंग दे वसंती चोला।' वैसे ही नेपाली जी ने रंगरेज मौसम से भारत को विविध रंगों से रंग देने का आग्रह किया। इस आग्रह के पीछे आजादी की गहरी आकांक्षा मुखरित हुई है। वे कहते हैं-

जिस पथ से शहीद जाते हैं, वही डगरिया रंग दे रे,
अजर-अमर प्राचीन देश की, नई उमरिया रंग दे रे,
मौसम है रंगरेज, गुलाबी गाँव, नगरिया रंग दे रे,
तीस करोड़ बसे धरती की हरी चदरिया रंग दे रे।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष में जब हिंदी के अन्य कवि जागरण और बलिदान के गीत गा रहे थे, तब नेपाली जी कैसे चुप रह सकते थे। उन्होंने सतत जागरण के लिए संघर्ष के दिनों में युवाओं को संदेश दिया कि स्वतंत्रता की भावना का यह दीपक कैसी भी विपरीत परिस्थितियाँ हो बुझना नहीं चाहिए। यह गीत स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों में युवकों के अधरों पर बार-बार मचलता रहा-

झूम झूम बदलियाँ, चूम चूम बिजलियाँ,
आँधियाँ उठा रही, हलचलें मचा रही,
लड़ रहा स्वदेश हो, यातना विशेष हो,
क्षुद्र जीत हार पर, यह दिया बुझे नहीं,
यह स्वतंत्र भावना का स्वतंत्र गान है।

भारत को जब चिरवांछित स्वतंत्रता मिली तो नेपाली जी ने राष्ट्र के नव निर्माण के लिए राष्ट्रीय नेतृत्व और युवा वर्ग को लक्ष्य कर एक जागरण गीत 'नवीन कल्पना करो' की रचना की। इस गीत में उन्होंने सृजन की कल्पना के साथ-साथ एक चेतावनी भी दी थी कि कहीं ऐसा न हो कि हम अपनी गुलामी के उन दिनों को भूल जाएँ। उन्होंने कहा-

हम थे अभी अभी गुलाम, यह न भूलना,
करना पड़ा हमें सलाम, यह न भूलना,
था फूट का मिला इनाम, यह न भूलना,
बीती गुलामियाँ न लौट आएँ फिर कभी,
तुम भावना करो, स्वतंत्र भावना करो,
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।

देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्र भारत के जिस स्वर्णिम स्वरूप की कल्पना की थी, जो सपने देखे थे, वे सपने भ्रष्टाचार के पत्थरों से चूर-चूर हो गए। अपने ही लोगों द्वारा देश की यह लूट गोपाल शरण सिंह नेपाली से देखी न गई। उनकी वेदना उनकी प्रसिद्ध कविता 'बदनाम रहे बटमार' में पूरी शक्ति से अभिव्यंजित हुई है। वे कहते हैं-

बदनाम रहे बटमार मगर, घर तो घर वालों ने लूटा,
मेरी दुल्हन-सी रातों को, नौ लाख सितारों ने लूटा।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में समता-मूलक समाज की स्थापना का स्वप्न भी अधूरा ही रह गया। नेपाली जी ने देखा कि राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक असमानता की खाई दिनों-दिन गहरी होती जा रही है। नेपाली जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वंचित भारत का सलाम देश के कर्णधारों को तभी मिल सकेगा जब वे गरीबों के साथ न्याय करेंगे। उन्होंने अपनी कविता 'कर्णधार' में साफ-साफ ललकारते हुए कहा-

यह स्वतंत्रता नहीं कि एक तो अमीर हो,
दूसरा मनुष्य तो रहे, मगर फकीर हो,
न्याय हो तो आर-पार एक ही लकीर हो,
वर्ग की तनातनी न मानती है चाँदनी,
चाँदनी लिए चला तो घूम हर मुकाम ले,
त्याग का न दाम ले,
दे बदल नसीब, तो गरीब का सलाम ले।

हमारा नव-स्वाधीन देश अभी अपनी पंचवर्षीय योजनाओं के सुखद स्वप्नों में खोया, विश्व शांति के लिए किए जा रहे प्रयत्नों और पंचशील के सिद्धातों के सफल होने की कामना ही कर रहा था कि 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के नारे लगाने वाले चीन ने एकाएक हमारी पूर्वोत्तर सीमा और लद्दाख पर आक्रमण कर दिया। हमारा राष्ट्रीय नेतृत्व इस आक्रमण से भौंचक्का रह गया और सैनिक पराजय के दंश झेल मात्र विरोध-पत्रों के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाने का व्यर्थ प्रयत्न ही करता रहा। गोपाल सिंह नेपाली का आहत कवि-मन अपनी अंतर्वेदना

'शासन चलता तलवारों से' कविता के माध्यम से देश के नेतृत्व को संदेश देकर अभिव्यक्त करता रहा। उन्होंने दिल्ली की सरकार को संबोधित करते हुए कहा कि-

तुम उड़ा कबूतर अंबर में संदेश शांति का देते हो,
चिट्ठी लिखकर रह जाते हो, जब कुछ गड़बड़ सुन लेते हो
वक्तव्य लिखो कि विरोध करो, यह भी कागज वह भी कागज,
कब नाव राष्ट्र की पार लगी यों कागज की पतवार से,
ओ राही! दिल्ली जाना तो कहना अपनी सरकार से,
शासन चलता तलवार से।

गोपाल सिंह नेपाली जी के लिखे मुक्तक उनके व्यक्तित्व के अनदेखे अनछुए पहलुओं को अनचाहे ही उजागर कर जाते हैं। अपने जीवन की सफलता, असफलता को उन्होंने इस मुक्तक में मार्मिक अभिव्यक्ति दी है-

अफसोस नहीं इसका हमको, जीवन में हम कुछ कर न सके,
झोलियाँ किसी की भर न सके, संताप किसी का हर न सके,
अपने प्रति सच्चा रहने का, जीवन भर हमने काम किया,
देखा-देखी हम जी न सके, देखा-देखी हम मर न सके।

एक संवेदनशील कलाकार के नाते नेपाली जी स्वयं को अपने आदर्शों के लिए संघर्ष में प्राय: अकेला ही पाते थे। 'मुझे अकेला ही रहने दो' कविता में वे अपने मन की व्यथा व्यक्त करते हुए कहते हैं-

नहीं चाहता हूँ मैं आदर, हेम तथा रत्नों का सागर,
नहीं चाहता हूँ कोई वर, मत रोको इस निर्मम जग को,
जो जी में आए कहने दो, मुझे अकेला ही रहने दो।

नेपाली जी का कवि-हृदय जीवन भर खुदी और बेखुदी के बीच झूलता रहा। उनका स्वाभिमान उन्हें समर्पण नहीं करने देता था। एक कविता 'अपनेपन का मतवाला' में वे अपने व्यक्तित्व के इसी पहलू को अनावृत्त करते हुए कहते हैं-

अपनेपन का मतवाला था, भीड़ों में भी मैं खो न सका,
चाहे जिस दल में मिल जाऊँ, इतना सस्ता मैं हो न सका।

नेपाली जी को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वाधिक प्रिय थी। अपनी कलम की स्वाधीनता की घोषणा वे अपनी चर्चित कविता 'मेरा धन है स्वाधीन कलम' में उद्घोष करते हुए कहते हैं-

तुझ-सा लहरों में बह लेता, तो मैं भी सत्ता गह लेता,
ईमान बेचता चलता तो, मैं भी महलों में रह लेता,
तू दलबंदी पर मरे, यहाँ लिखने में है तल्लीन कलम
राजा बैठे सिंहासन पर, यह ताजों पर आसीन कलम,
मेरा धन है स्वाधीन कलम।
जिसने तलवार शिवा को दी, रोशनी उधार दिवा को दी
पतवार थमा दी लहरों को खंजर की धार हवा को दी
अगजग के उसी विधाता ने, कर दी मेरे अधीन कलम,
मेरा धन है स्वाधीन कलम।

गोपाल शरण सिंह नेपाली ने अपने स्वाधीन व्यक्तित्व की रक्षा के लिए क्या-क्या नहीं किया। वे एक यायावर की तरह हिंदी के कवि सम्मेलनों में निरंतर घूमते रहे। पत्रकारिता के दौर में 'रतलाम टाइम्स', 'चित्रपट', 'सुधा' एवं 'योगी' जैसे पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्होंने अपने जीवन के दो महत्वपूर्ण दशक हिंदी फिल्म संसार में बिताए। एक फिल्मी गीतकार के रूप में उन्होंने लगभग 400 गीत लिखे, लेकिन यहाँ भी उन्होंने अपनी स्वाधीन कलम को पराधीन नहीं होने दिया। फिल्मों में अपनी रचनात्मक मेधा को नये पंख देने के लिए उन्होंने हिमालय फिल्म्स और नेपाली पिक्चर्स जैसी निर्माण संस्थाएँ भी बनाईं। उन्होंने नजराना, सनसनी और खुशबू जैसी कलात्मक फीचर फिल्मों के निर्माण में अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया। फिल्मी गीतकार के रूप में उनके जिन गीतों ने उन्हें राष्ट्रीय ख्याति दिलाई उनमें अधिकतर गीत धार्मिक फिल्म के थे। वह दौर ही धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक फिल्मों का था। फिल्म तुलसीदास में लिखे उनके गीत 'मुझे अपनी शरण में ले लो राम' या 'कहाँ छिपे हो राजाराम' या 'धन्य सुहागन वो जिसने' लोकप्रियता के नये कीर्तिमान स्थापित किए। फिल्म जय भवानी में लिखा उनका गीत-

यहाँ रात किसी की रोते कटे, या चैन से सोते सोते कटे
तकदीर में कैसी रात मेरी, ना सोते कटे ना रोते कटे।

संगीत प्रेमियों की जबान पर चढ़ा रहा। फिल्म नरसी भगत के जिस गीत ने अभी हाल में एक न्यायालयीन विवाद को जन्म दिया वह अपने समय का अत्यंत लोकप्रिय गीत था। विश्वविख्यात फिल्म निर्देशक डैनी बायल ने आस्कर एवार्ड विजेता फिल्म 'स्लमडॉग मिलेनियर' का निर्माण किया। जिसने भारतीय संगीतकार ए. आर. रहमान और गीतकार गुलजार को आस्कर एवार्ड दिलाया, उसी फिल्म के चर्चित दृश्य में हॉट सीट पर बैठे प्रतिस्पर्धी से पूछा गया कि- 'दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखिया प्यासी रे।' गीत की रचना किसने की? प्रतिस्पर्धी ने इस गीत का रचनाकार महाकवि सूरदास को

बताकर एक करोड़ का पुरस्कार प्राप्त कर लिया। यह भूल किस स्तर पर और कैसे हुई यह तो पता नहीं, किंतु इसने अकारण एक न्यायालयीन विवाद को जन्म दे दिया। अब गोपाल शरण सिंह नेपाली के पुत्र श्री नकुल सिंह नेपाली ने अदालत में वाद प्रस्तुत किया है कि इस फिल्म के निर्माता निर्देशक ने उनके पिता द्वारा लिखे गए गीत सूरदास का गीत बताकर उन्हें आघात और वेदना दी है, अत: उन्हें मुआवजे के रूप में पाँच करोड़ रुपये दिलवाए जाएँ। वस्तुत: यह गीत गोपाल सिंह नेपाली ने फिल्म 'नरसी भगत' के लिए लिखा था, जिसके बोल थे-

पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ
आँख मिचौली छोड़ो अब तो, घट घट वासी रे,
दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखिया प्यासी रे।

फिल्म 'नागपंचमी' में लिखी उनकी आरती आज भी घर-घर में गायी जाती है, जिसके बोल हैं-

आरती करो हरि हर की करो नटवर की,
भोले शंकर की, आरती करो नटवर की।

नेपाली जी के हृदय में देशभक्ति का भाव तूफान बन कर उमड़ता रहा। जब साम्यवादी चीन ने सन 1962 में भारत पर सैनिक आक्रमण कर हजारों वर्ग किलोमीटर भारतीय भूमि पर अधिकार कर लिया तो नेपाली जी की व्यथित आत्मा ने उनके आँसुओं को क्रोधाग्नि में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने इस बीच कई देश भक्ति के गीत लिखे जो उनकी चर्चित पुस्तक 'हिमालय ने पुकारा' में संग्रहीत है। उन्होंने कहा-

शंकर की पुरी, चीन ने सेना को उतारा
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।

सारे देश में कवि सम्मेलनों के मंच से नेपाली जी ने अपने गीतों से ऐसी अलख जगाई कि भारत भर में चेतना की लहर दौड़ गई। उन्होंने भारत के युवाओं से कहा-

युद्ध में पछाड़ दो, दुष्ट लाल चीन को,
मार कर खदेड़ दो, तोप से कमीन को,
मुक्त करो साथियों, हिंद की जमीन को,
देश के शरीर में, नवीन खून डाल दो।

इसीप्रकार भारत की तरुणाई को अपनी ओजस्वी रचनाओं से जगाते-जगाते अपने जीवन के अंतिम कवि सम्मेलन से कविता पाठ कर लौटते हुए कवि गोपाल सिंह नेपाली भागलपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं. 2 पर सदा के लिए सो गए। कवि गोपाल सिंह नेपाली का काव्य-वैभव, शृंगार-रस, भक्ति-रस, वीर रस की सीमाओं का अतिक्रमण कर अपने सरल शब्द और सहज प्रवाह के साथ प्रत्येक हिंदी प्रेमी की धरोहर है जो हमारी स्मृतियों में सर्वदा सुरक्षित रहेगी।

जी-1, सार्थक एनक्लेव
113, साउथ सिविल लाइंस
जबलपुर (म.प्र.)-482001
संपर्क: 07389366590

सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना

(आधार वर्ष-2013)

पिछले कई वर्षों से रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक व प्रशंसनीय प्रयोग करने वाले रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया जाता रहा है। इस योजना के अंतर्गत, प्रत्येक वर्ष रेलवे/ उत्पादन कारखानों के लिए निर्धारित कोटा के अनुसार अधिकारियों/कर्मचारियों को **₹ 1500-1500/-** के नकद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

वर्ष 2013 (01.01.2013 से 31.12.2013) के दौरान उपर्युक्त योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने वाले पात्र अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों की अनुशंसा **30.05.2014 तक** बोर्ड भेजी जानी है। रेलवे बोर्ड द्वारा **पूर्वोत्तर रेलवे का कोटा 04** निर्धारित है। अनुशंसित अधिकारियों/कर्मचारियों में सभी मंडलों का प्रतिनिधित्व अवश्य होगा।

(रेलवे बोर्ड का 31.01.2014 का पत्रांक हिंदी-2014/प्र.-7/1)

◆ लेख ◆

वैदिक राष्ट्र में कृषि यज्ञ

सुनील कुमार

'आब्रह्मणन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतमा राष्ट्रे राजन्य:' अर्थात हे भगवान! हमारे राष्ट्र में सब ओर ब्रह्मवर्चस् से युक्त ज्ञान-संपन्न, तेजस्वी, परोपकारी, नि:स्वार्थ एवं अत्यंत प्रभावशाली ब्राह्मण होवें जो अपने विशाल ज्ञान एवं तपोबल से जनता का उचित पथ-प्रदर्शन कर सकें तथा राजा और प्रजा को धर्म की मर्यादा में चला सकें। हमारे क्षत्रिय अर्थात शासक और रक्षक-वर्ग शूर-वीर होवें। वे अस्त्र-शस्त्र से युक्त एवं युद्ध विद्या में प्रवीण होवें, नीरोग एवं स्वस्थ और सबल होवें। हमारे देश में प्रचुर दूध देनेवाली गायें हों जिससे बैल मजबूत होकर कृषि कार्य की उन्नति कर सकें। इसीप्रकार संसार की सभी माताएँ प्रचुर दूध देनेवाली हों जिससे उनकी अपनी संतानें खूब मजबूत होकर विविध प्रकार से राष्ट्र की उन्नति करें। राष्ट्र के सारे गृहस्थ यज्ञ करने वाले हों। हमारे नवयुवक जिष्णु अर्थात जयशील होवें। पक्की लगनवाले हों एवं ऐसे उद्यमशील हों कि जिस काम को हाथ में लें उसमें उनको सदा सफलता ही प्राप्त हो। उनके हृदय में अदम्य उत्साह एवं उमंग होवें कि वे सर्वत्र विजयी हों। यज्ञादि के द्वारा वृष्टि अनुकूल होवें। औषधियाँ अर्थात अन्नादि एवं फल, मूल, कंदादि प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होवें।

कृषि यज्ञ सभी यज्ञों से महान यज्ञ है। इसी यज्ञ से समस्त प्राणियों की उत्पत्ति व उसका निर्वाह होता है क्योंकि अन्न के बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। सृष्टि का आधार भी कृषि ही है। इतिहास गवाह है कि मिथिला के महान सम्राट राजा शीरध्वज जनक स्वयं खेती करते थे तथा हल जोतते थे। यही कारण था कि उनकी प्रजा में कोई भी मनुष्य आलसी व निकम्मा नहीं था। उनकी बुद्धि अनंत और अपार थी क्योंकि बुद्धि का विकास मधु-रस-युक्त अन्न में ही होता है। वे ऋतुकाल में अपने बल-परिश्रम द्वारा दुग्धयुक्त अन्न पैदा करते थे और अपने संतति को कृषि द्वारा स्वावलंबी बनने की शिक्षा देते थे।

राजा पृथु ने भी स्वयं कृषि कर्म द्वारा मधुर-रस वाले अन्न पैदा किए तथा अपनी प्रजा को यथेष्ट अन्न खिलाया ताकि उनकी प्रजा सुखी एवं वलिष्ठ रहे। महामहिम् महर्षि वशिष्ठ जी भी कृषि कर्म करते थे तथा उससे यथेष्ट फल प्राप्त करते थे। वे पृथ्वी माता को कामधेनु नंदिनी नाम से पुकारते थे क्योंकि पृथ्वी यथेष्ट फल देने वाली है। अत: कामधेनु (पृथ्वी) संपूर्ण धन देने वाली है। इसी से पृथ्वी वसुंधरा नाम से भी पुकारी जाती है किंतु वह धन उद्योग द्वारा प्राप्त होता है।

महर्षि कण्व की पुत्री शकुंतला अपनी सखियों सहित कृषि कर्म करती थीं। अपने पेड़-पौधों को भ्रातृवत् स्नेह देकर उनकी रक्षा करती थी। उन्हें जितना प्रेम-स्नेह अपने पिता कण्व से था उतना ही स्नेह पेड़-पौधों से भी था।

कृषि कर्म का कितना प्रभाव था यह आप भूतकाल में भी पाते हैं। गोकुल के निवासी नंदजी भी खेतिहर थे जिनका संपूर्ण जीवन कृषि में ही सन्नद्ध रहा और खेती द्वारा ही वे गोरस (अन्न) प्राप्त करते थे।

पहले सभी गृहस्थ खेती ही करते थे तथा प्राकृतिक आहार उनको मिलता था। वे किसी से भी याचना नहीं करते थे। इस समय कृषि से विमुख होने के कारण ही मनुष्यों की यह दशा हो गयी है। वे अपने उदर पूर्ति के लिए भी पराधीन और पराश्रित हो गए हैं। उनकी आगे क्या दशा होगी यह तो ईश्वर ही जाने। इस यज्ञ में यजमान बीजवपन करने वाला होता है जो कि हल चलाता है। यजमान पहले पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश पंचतत्वों का आवाहन करता है जैसे-

हे पृथ्वी! तुम सावधान हो जिससे में बीज वपन करुँ।

हे जल! तुम सहस्र धाराओं से बरसो जिससे बीजोत्पत्ति हो।

हे वायु! तुम यहाँ आओ और मेरे अन्न को प्राण दो क्योंकि तुम प्राण देने वाली हो।

हे तेज! तुम प्रकाश करो जिससे मेरा अन्न बढ़ सके।

इसप्रकार आवाहन कर यजमान अपने बैलों से खेतों में बीजों का वपन करता है। बीजों के बोने से ही

अन्न की उत्पत्ति होती है तथा सृष्टि में विद्यमान पंच तत्व उसकी रक्षा करते हैं। अन्न से ही सृष्टि की रचना एवं पालन-पोषण होता है।

विष्णोः प्रार्थयमेदिनीं पशुपते वीर्यं बलात्कारणम्।
प्रेतेशान्महिषं तवास्ति वृषभः फालं त्रिशूलं कुरु।।
शक्ताऽहं तवचान्न-पान नयने स्कंदोगवां रक्षणे।
भिक्षां संत्यज गर्हितां कुरु कृषिं गौरीवचः पातुवः।।

अर्थात भगवती गौरी भगवान शंकर से प्रार्थना करती हैं कि हे पशुपते! उतिष्ठ, पराक्रम को धारण कर, आलस्य को छोड़, निंदनीय भिक्षावृत्ति को त्याग कर श्रमयुक्त कृषि करो जिसके लिए विष्णु से पृथ्वी, प्रतेश (यमराज) से महिष ग्रहण करो तथा वृषभ आपके पास है, त्रिशूल का हल बनाओ। मैं आपके लिए अन्न-पानादि लाने में समर्थ हूँ। स्कंद (कार्तिक स्वामी) को गौ रक्षा के लिए नियुक्त करो। इसप्रकार सुचारु रूप से कार्य में संलग्न हो जाओ। यह जो उपदेश है वह संसार के तमाम गृहस्थियों के लिए प्रयोजनीय है। अतः आलस्य को छोड़कर अपने पैरों पर खड़े होओ। परमुखापेक्षी मत बनो, पुरुषार्थ करो।

अश्वमेध यज्ञ, गोमेध यज्ञ भी कृषि यज्ञ के ही पर्यायवाची नाम है। अश्व शब्द और गो-शब्द व्यापक शब्द हैं-

हर जोतै अरु हरि भजै, यथाशक्ति कछु देय।
ताहु पै हरि ना मिले, मुजरा हमसे लेय।।

पृथ्वी माता की वंदना इसप्रकार भी की गई है-

वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम्,
गोविंदं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम्।
गो गोपाल परीवारं गोपकन्यासमावृतम्,
विद्युत्पुंज प्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्।।

हे पृथ्वी माता! (विष्णुं) विष्णुरूप भी आप हो। जैसे विष्णु जगत का पालक तथा स्वामी है तो आप ही जगत के पालक और स्वामी हो तथा क्षीर-सागर में आप विराजमान हो। चारों ओर समुद्र से घिरी हुई हो। शेषनाग पर स्थित हो और जल से ओतप्रोत हो। आपकी नाभि से अन्न उत्पन्न होता है। अन्न से ही सृष्टि की रचना होती है। अतः आप ही विष्णु हो। आप वासुदेव हो अर्थात धन को निरंतर देने वाली हो। वसुंधरा हो। वसु नाम धन का है। आप रत्नगर्भा हो। सर्व रत्न भी पुरुषार्थ द्वारा आप ही से मिलते हैं। हमें प्रत्येक ऋतु में भाँति-भाँति के अन्न आप से ही प्राप्त होते हैं।

'सर्वं ब्रह्ममयं जगत्' इसके अनुसार संपूर्ण जगत् ही ब्रह्ममय और आपकी उपासना में लीन है-

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभंगम्।।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं यागिभिर्ध्यानगम्यम्।
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।।

अर्थात हे पृथ्वी माता! (विष्णु) आप शांत आकार वाली हो यानी सभी प्राणीमात्र के अपराधों को क्षमा करके शीलवती हो। शेषनाग पर आप स्थित हो। आपकी नाभि से पद्म (अन्न-पुष्पादि) की उत्पत्ति है। देवताओं की जननी होने के कारण उनकी स्वामिनी भी आप हो। संसार के आधार भूत आप ही हो, आप अनंत विस्तार वाली हो। मेघ के समान आप अनेक वर्ण वाली हो। जैसे वर्षा के समय मेघों का रंग सफेद हो जाता है ऐसे ही जलमय स्थान पर आप सफेद वर्णवाली हो, जल रहित स्थान पर आप मेघ के समान कृष्ण वर्णवाली हो और सूर्य की किरणों से जैसे मेघों में पीला रंग दिखाई देता है वैसे ही कहीं आप पीलापन भी लिए हुए हो। इंद्रधनुष जब मेघों में दिखाई देता है तो विचित्र रंग उसमें होते हैं। ऐसे ही देशभेद से आप लाल आदि रंग भी धारण करती हो। अतः यह कहना भी उपयुक्त हो सकता है कि मेघों में जो-जो वर्ण हैं वे आपकी छाया को ही प्रकट करते हैं। आपका प्रत्येक अंग शुभ है। प्राणीमात्र के लिए आप सदैव शुभकारक हो। आप वसुंधरा एवं रत्नगर्भा, रत्नों का भंडार होने से लक्ष्मी की तरह शोभायमान हो। कमल आदि वनस्पतियाँ आपके नयन हैं। आप योगियों से ध्यानगम्य हो। 'कर्मणायुज्यते इति योगी' के अनुसार योगी का अर्थ है कृषक। वे निरंतर आपके ध्यान में लगे रहते हैं उससे वे निरंतर यथेष्ट फल आप से प्राप्त करते हैं।

योगी नंदजी महान कृषक थे, वे एक बड़े भूमिहर थे। वे सर्वदा पृथ्वी देवता की उपासना करते रहते थे। उन्हें बहुत अधिक परिमाण में पृथ्वी उपलब्ध थी। प्रत्येक ऋतुकाल में पृथ्वी से नाना प्रकार के अन्न उत्पन्न करते थे। उनके यहाँ मधुर और दुधिया अन्न-धन के भंडार भरे रहते थे। उनके विषय में कहा जाता था- 'नो लख धेनु (गाय) नंद घर दूजै, एक न बाखड़ ली।' अर्थात नंदजी के नोलख (गज या अन्य तात्कालिक माप में) पृथ्वी थी, सब पृथ्वी को उन्होंने फलदात्री बना

रखी थी, अतएव थोड़ी भी पृथ्वी बाखड़ी (ऊपर) नहीं थी। उनके हलधर नामक पुत्र थे। हलधर का मतलब है हल को धारण करने वाले। हलधर जी सदैव अपने पास हल रखते थे। वे जीवन की सफलता हल से ही समझते थे। इसीप्रकार उनका नाम सीरपाणि संकर्षण पड़ा। उनका एक नाम कालिंदी-भेदन भी है जिसका अभिप्राय यमुना गंगादि नदियों से अपनी खेती को पानी पहुँचाने वाले हैं। नंद जी कृष्ण के उपासक थे। 'यः कर्षति स कृष्णः' जो खींचता है वही कृष्ण है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार कृष्ण का तात्पर्य पृथ्वी से है क्योंकि पृथ्वी जल का आकर्षण करके उस शस्य को हरा-भरा रखती है और सूर्य का आकर्षण कर अन्न को परिपाक करती है। अतः नंदजी कृष्ण को चाहते थे। इसका अभिप्राय यह है कि पृथ्वी को जोतने हल चलाने में उन्होंने नई-नई लीला योजनाएँ की थी, यही उनकी रासलीला थी। योगी नंदजी की स्त्री का नाम यशोदा था। यशोदा का अर्थ है यश देने वाली; पृथ्वी सदैव यश देने वाली होती है। दूसरी, यशोदा की सखी का नाम रोहिणी है जिसका अभिप्राय नाना प्रकार के अंकुर देनेवाली अर्थात पृथ्वी हुई, जो प्राणी-मात्र को अन्नदान कर उनका पालन करती हो। अमेरिका और रूस आदि आज पृथ्वी में ही ध्यानगम्य हैं, तरह-तरह के शोध आज भी कर रहे हैं। पृथ्वी माता की कृपा से ही वे धनाढ्य बने हुए हैं। पृथ्वी से जो निरंतर पुरुषार्थ करते रहते हैं उन्हें किसी भी पदार्थ की कमी नहीं रहती है। भारत भी प्राचीन काल से ही पृथ्वी में ध्यानगम्य रहने के कारण उन्नत अवस्था को प्राप्त हुआ है। दस-दस हजार हाथियों के बल वाले योद्धाओं को उत्पन्न करने वाली यही पृथ्वी थी। पृथ्वी के व्यापक अर्थ को छोड़कर आजकल के विद्वान संकीर्णता की वजह से 'गो' शब्द का व्यक्तिगत अर्थ केवल पशु ही मान लेते हैं। पृथ्वी अपनी व्यापकता की वजह से ही सबका कल्याण करने वाली है। केवल पशु के अर्थ में रखने से सबका कल्याण संभव नहीं है। इसीलिए पृथ्वी को माता मानकर ही उपासना करना सर्वमान्य है।

हमारा भारत अति-प्राचीनकाल से ही कृषि प्रधान देश माना जाता था। यहाँ की हरेक जाति खेती करती थी। पुरुषार्थ ही उनका जीवन था। पृथ्वी माता से उनकी सब जरूरतों की पूर्ति होती थी। यही कारण था कि हम परमुखापेक्षी नहीं थे। पृथ्वी तो अनंत कोटि शक्तिवाली हैं। प्राणीमात्र को यथेष्ट फल देकर उनके भय को दूर करती हैं। हे पृथ्वी माता! आप सब प्राणियों के नाथ हैं। आपको कोटिशः नमस्कार है। आपके विचित्र मनोहर स्वरूप का चित्रण करने वाले उन महर्षियों और विद्वत्त-जनों को भी मेरा कोटिशः प्रणाम है।

वरिष्ठ अनुवादक/मुख्यालय
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्कः 9794840672

लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं बिलास संग
स्याम रंगमयी मानो मसि में मिलाए हैं।
तहाँ मधु-काज आइ बैठे मधुकर-पुंज,
मलय पवन उपवन-बन धाए हैं॥
'सेनापति' माधव महीना में पलास तरु,
देखि देखि भाव कविता के मन आए हैं।
आधे अंग सुलगि सुलगि रहे, आधे मानो
बिरही दहन काम क्वैला परचाए हैं।

सेनापति

◆ यात्रा वृत्तांत◆

सार पास ट्रेकिंग अभियान

मनीष रंजन

पर्वत मुझे सदा से आकर्षित करते रहे हैं। भले ही मेरी पैदाइश मैदानों में हुई एवं सर्वप्रथम पहाड़ देखने का अवसर युवावस्था में प्राप्त हुआ, परंतु पहाड़ों पर जाने की इच्छा सदैव रहती थी। नौकरी में आने के पश्चात् नैनीताल, मसूरी, वैष्णो देवी एवं कुछ अन्य पहाड़ी स्थलों पर एकाधिक बार भ्रमण भी कर आया था परंतु संतुष्टि नहीं मिल पाई थी।

पिछले कुछ महीने पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक का प्रभार अतिरिक्त रूप से महानिदेशक/आर.डी.एस.ओ. के पास रहा। इसी दौरान महाप्रबंधक महोदय के साथ यात्रा कार्यक्रमों में मेरा परिचय उनके निजी सचिव श्री मंगल सिंह से हुआ। वह भी अपने महानिदेशक के साथ उनके यात्रा कार्यक्रम में सम्मिलित रहते थे। कुछ यात्राओं के पश्चात् मंगल जी से परिचय घनिष्ठता में बदल गयी। मंगल जी उत्तराखंड से आते हैं और उनका बचपन पहाड़ों में बीता। हमारी एक यात्रा के दौरान उन्होंने भी पहाड़ों के प्रति अपनी आसक्ति जाहिर की और बताया कि प्रतिवर्ष वह ट्रेकिंग हेतु पहाड़ों पर जाते हैं। उन्होंने अपने लैपटॉप पर अपने पूर्व अभियानों के फोटोग्राफ्स भी दिखाए।

मैं तो फोटो देखते ही सम्मोहित हो गया। कितने रोमांचक और सुंदर दृश्य थे। चारों ओर फैले हिम पर ट्रेकिंग करता दल। उसी क्षण निर्णय लिया कि अगले वर्ष मैं भी ट्रेकिंग पर जाऊँगा और अपनी इच्छा मंगल साहब को बताई साथ ही साथ अगले ट्रेकिंग अभियान में मुझे साथ रखने का अनुरोध भी किया।

उन्होंने आश्वस्त किया- 'तुम्हें भी जरूर ले चलेंगे।' इसके बाद उन्होंने अभियान में शामिल होने की प्रक्रिया विस्तार से बताई। उन्होंने बताया कि आर.डी.एस.ओ. से प्रतिवर्ष दस-बारह लोगों का दल जाता है। उन्होंने कहा प्रतिवर्ष यूथ होस्टल्स एसोशिएशन ऑफ इंडिया (वाई.एच.ए.आई.) ट्रेकिंग अभियान का आयोजन करता है जिसे भारत सरकार के कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग से मान्यता मिली हुई है। तदनुसार रेलवे भी इस हेतु विशेष आकस्मिक अवकाश एवं पास की सुविधा देती है।

इसके साथ उन्होंने संबंधित प्रपत्र वगैरह उपलब्ध कराने का वादा किया और कहा वाई.एच.ए.आई. द्वारा निबंधन प्रारंभ होने पर सूचित करेंगे।

फरवरी में उनका फोन आया इस वर्ष उनका दल सार-पास (हिमाचल प्रदेश) जाएगा। मैं भी तैयार हो गया। अवकाश स्वीकृति सहित अन्य कागजी कार्यवाहियों में लगभग एक पखवाड़ा लगा। हमारी सहायक क्रीड़ा अधिकारी महोदया के प्रयास एवं महाप्रबंधक के सचिव महोदय की औदार्यता से ट्रेकिंग अभियान हेतु मेरा अनुमोदन हो गया।

मई में नियत तिथि को मैं लखनऊ पहुँचा। वहाँ से पूरे दल को चंडीगढ़ जाना था। रात्रि में सारे लोग प्लेटफार्म पर एकत्रित हुए। मंगल साहब ने मेरा परिचय अन्य सदस्यों से कराया। श्री ए.के. शर्मा आर.डी.एस.ओ. की इस टीम के मैनेजर थे। अन्य सदस्यों में सर्वश्री संजय नेहरू, जोशी जी, घनश्याम, धर्मराज, अरविंद, इस्लाम अख्तर एवं कृष्ण गोपाल जी थे। कृष्ण गोपाल जी भारतीय रेलवे के बैडमिंटन टीम के कोच भी रहे हैं।

सबकी टिकट कनफर्म थी। रात का खाना वे लोग लेकर आए थे। मेरी इच्छा खाने से ज्यादा उनके पूर्ववर्ती ट्रेकिंग अभियानों के बारे में जानने की थी क्योंकि दल के ज्यादातर सदस्य पूर्व में भी ट्रेकिंग पर जा चुके थे। प्रातः हमलोग चंडीगढ़ पहुँचे। यहाँ से हमें कसोल जाना था, जो चंडीगढ़ से तकरीबन 280 किमी. की दूरी पर उत्तर में है। कसोल के लिए बसों की सीधी सेवा बहुत कम है। या तो भुंटर या कुल्लु पहुँच कर वहाँ से दूसरी बस बदलकर कसोल पहुँचा जा सकता था। पर्यटन का मौसम होने के कारण किसी भी बस में इकट्ठा दस सीटें मिलना कठिन था। तय हुआ एक ट्रैवलर आरक्षित कर ली जाए जिसमें ग्यारह-बारह सीटें होती हैं और सीधे कसोल पहुँचा जाए। मई में पर्यटन हेतु खासकर पहाड़ों पर भीड़ ज्यादा होती है। इस कारण कोई भी वाहन मिलने में बहुत पेरशानी हो रही थी। इसका हल संजय नेहरू ने निकाला और अपने पंजाबी भाषा ज्ञान का उपयोग करते हुए एक ट्रैवलर वाहन बुक कर ली।

सायं सात बजे प्रस्थान तय हुआ। हमें सबसे

पहले मनाली राजमार्ग द्वारा भुंटर एवं वहाँ से दाहिनी ओर मुड़कर सीधे कसोल पहुँचना था। करीब नौ बजे हम लोगों ने राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 21 के किनारे बने एक ढाबे पर रात का खाना खाया एवं साढ़े दस बजे पुनः प्रस्थान किया। सरकारी कर्मचारी होने के बावजूद बैठे-बैठे सोने की आदत मुझमें नहीं है। कभी झपकी आती तो कभी झटके से नींद खुल जाती। इसप्रकार सारी रात का सफर कर एवं व्यास नदी को पार कर सुबह पौ फटने पर हमने देखा हम पार्वती नदी के किनारे-किनारे पहाड़ों के साथ सफर कर रहे हैं। करीब छः बजते-बजते हमलोग कसोल स्थित, बेस कैंप पहुँच गए। सारी रात के सफर और नींद की कमी के कारण मैं थका हुआ और उनींदा था।

कसोल शिवालिक पर्वत श्रेणी में स्थित पार्वती घाटी में करीब 6500 फीट की ऊँचाई पर बसा एक छोटा-सा कस्बा है। यहाँ का वातावरण अत्यंत शांत एवं मनोहारी है। शायद यही कारण है कि कसोल में विदेशी सैलानियों खासकर यूरोपियन, रशियन एवं ईजरायली की काफी संख्या मौजूद रहती है।

हमारा बेस कैंप सड़क से करीब 25-30 फीट नीचे स्थित था जहाँ तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थी। इसके एक ओर पार्वती नदी अपने पूरे वेग से कलकल निनाद करती हुई बह रही थी तो दूसरी ओर वृक्षों से आच्छादित पहाड़ी थी। साथ ही वहाँ से शानदार बर्फीले पर्वत शिखरों के दर्शन हो रहे थे। इतना सुरम्य एवं रमणीक वातावरण देखकर सारी थकान और नींद गायब हो गई। कैंप के रिसेप्शन पर पहुँचकर हमलोगों ने अपना आगमन दर्ज कराया। हमें टेंट आवंटित हो गया। कैंपों में रहने की व्यवस्था टेंट में ही होती है। एक टेंट में दस से बारह लोगों के रहने लायक जगह होती है।

शर्मा साहब ने बताया कि बेस कैंप से चार-पाँच किमी. की दूरी पर मणिकर्ण साहब गुरुद्वारा है। वहाँ गर्म पानी के सोते हैं। स्नान कर मत्था टेका जा सकता है। सब सहर्ष राजी हो गए। मणिकर्ण साहब गुरुद्वारा सन 1574 विक्रम संवत् में गुरुनानक देव जी के इस स्थान पर आगमन के यादगार में बना है। गुरु गोविंद सिह जी ने भी अपने 'पंज प्यारो' के साथ इस स्थान की यात्रा की थी। गुरुद्वारे से लौटकर कुछेक फार्म वगैरह भरने के पश्चात् आगमन के दिन का सारा समय आराम करने एवं कुछेक आवश्यक खरीदारी में बीता।

अगले दिन का हमारा कार्यक्रम तय था। सुबह 05.30 बजे चाय। छः बजे से व्यायाम। 07.00 बजे नाश्ता। 08.00 बजे वातावरण अनुकूलन व प्रशिक्षण हेतु लगभग 4-5 किमी. की चढ़ाई। वापस लौटकर 13.00 बजे भोजन। 15.00 बजे से ओरिएंटेशन सेशन जिसमें ट्रेकिंग हेतु कई आवश्यक जानकारियाँ, सूचनाएँ एवं महत्वपूर्ण टिप्स दिए जाते हैं। सायं 16.30 बजे स्नैक्स। शाम सात बजे डिनर एवं रात्रि आठ बजे कैंप फायर। तत्पश्चात् रात्रि दस बजे ट्रेकर्स बोर्नविटा लेते हैं एवं लाइट ऑफ। एक बात मैं जरूर बताना चाहूँगा कि वहाँ खाने की व्यवस्था बहुत उत्तम होती है।

वाई.एच.ए.आई. के ट्रेकिंग के उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं उसका संवर्द्धन भी है। अपने इन्हीं उद्देश्यों के अनुरूप कैंप में प्रतिदिन आयोजित कैंप फायर हेतु आग नहीं जलाई जाती है बल्कि भूमि में बल्ब लगा कर रोशनी की जाती है।

तीसरे दिन का रूटीन भी लगभग वही होता है केवल पैदल चढ़ाई की जगह रस्सियों के सहारे तथा बिन रस्सियों के चट्टानों पर चढ़ने एवं उतरने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रतिदिन एक ग्रुप बेस कैंप से अगले कैंप के लिए रवाना होता। चौथे दिन हमारे ग्रुप ने प्रातः नौ बजे अगले कैंप के लिए प्रस्थान किया। हमारे ग्रुप का नाम एसपी-8 था। ग्रुप में कुल चौवालीस जन थे जिसमें मुख्य रूप से तीन संगठनों की लगभग बराबर की सहभागिता थी। भारतीय रेल, वृहानुमुंबई नगर निगम एवं इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ साइंस, बैंगलोर। साथ ही करीब 7-8 अन्य लोग भी थे। इसके अलावा हमारे ग्रुप में एक फ्रांसिसी नवयुवक 'गिलाँ' भी थे। उनका उल्लेख मैं विशेष रूप से कर रहा हूँ क्योंकि 'गिलाँ' सबसे कम समय में 'रूबीक क्यूब' को हल करने की कई विश्व स्तरीय प्रतियोगिताएँ जीत चुके हैं।

बस द्वारा करीब एक घंटे का सफर कर हमलोग ऊँचाधार पहुँचे। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक 'रगसैक' (पीठ पर टांगे जाने वाला बैग) था जिसमें अगले कुछ दिनों के लिए आवश्यक सामान थे। बस स्टॉप पर ही हमें अपने गाइड मिले। उन्होंने बताया यहाँ से सिर्फ पैदल चलना है। सड़क के करीब दो किमी. उतरकर हमलोगों ने पार्वती नदी पार की। उसके बाद चढ़ाई शुरू हुई। करीब 5 किमी. की चढ़ाई के पश्चात् हमलोग

शिल्ला गाँव पहुँचे। यह गाँव सार पास ट्रेक पर जाने के रास्ते में आखिरी मानव आबादी है।

शिल्ला में हमलोगों ने विश्राम किया और गाँव में बने एक छोटे से होटल में सबने चाय वगैरह पी। आधे घंटे के विश्राम के पश्चात् हमारा ग्रुप आगे बढ़ा। आगे चढ़ाई कठिन नहीं थी और तीन बजते-बजते हम प्रथम कैंप 'गलगी थॉच' पहुँच गए। पहाड़ पर स्थित कैंपों में पानी का स्रोत सिर्फ पहाड़ी झरने एवं उनसे निकली धाराएँ होती हैं। साथ ही बिजली का कोई प्रबंध नहीं होने के कारण रात्रि का भोजन सायं छः बजे तक कर लेना होता है ताकि अंधेरा होने के पूर्व सारे लोग अपने-अपने टेंट में चले जाएँ।

अगली सुबह हमलोग तैयार होकर प्रातः आठ बजे अगले कैंप हेतु प्रस्थान किए। कैंप से प्रस्थान के वक्त सभी ट्रेकर्स को लंच पैक, जिसमें रोटी/पराठा तथा सूखी सब्जी होती है, दिया जाता है। यहाँ से दूसरे गाइड अगले कैंप तक के लिए ले जाने वाले थे। आज ट्रेकिंग प्रारंभ करते ही चढ़ाई कठिन होती जा रही थी। थोड़ी चढ़ाई के पश्चात् विश्राम करना पड़ता। रास्ते में देवदार, फिर, अखरोट इत्यादि के वृक्ष बहुतायत में मिल रहे थे। पहाड़ों में बारिश का कोई भरोसा नहीं होता। बारिश एकाएक और कभी भी आ जाती है। हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ। वैसे तो हमलोगों ने बारिश से बचाव हेतु बरसाती/पोंचों रखा हुआ था। फिर भी सबने एक चट्टान के नीचे शरण ली। तय हुआ लंच यहीं कर लिया जाए। लंच के पश्चात् हम आगे बढ़े। बारिश ने चढ़ाई को और कठिन बना दिया था। हमारे गाइड ने बताया कि आगे झरने की एक धारा मिलेगी जहाँ पानी पी लें और साथ ही सभी लोग अपने बोतल 'फुल' कर लें। अगला जलस्रोत कहाँ और कितनी दूर पर होगा बताना मुश्किल है। आगे बढ़ने पर हमें बड़े ही सुंदर और नयनाभिराम दृश्य देखने को मिल रहे थे। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते जाते दृश्यावलियाँ और सुंदर एवं मनोहारी हुई जाती थी। उपत्यका देख हमलोग वहाँ थोड़ा विश्राम करते एवं प्राकृतिक दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करते।

लगभग सात किमी. की ट्रेकिंग के पश्चात् हमलोग अगले कैंप 'घोडूथॉच' पहुँचे। यह कैंप लगभग दस हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। 'थॉच' का अभिप्राय वहाँ का स्थानीय भाषा में पहाड़ों के बीच की समतल भूमि, उपत्यका या चारागाह होता है।

यहाँ भी सबने सायं छः बजे तक रात का खाना खाया और अपने-अपने टेंट में प्रवेश कर गए। सोने हेतु हमें स्लीपिंग बैग मिले थे। जैसे-जैसे रात बीतती ठंड बढ़ती जाती थी।

पहाड़ों पर सुबह जल्दी हो जाती है। हमें प्रातः पाँच बजे उठना होता। सुबह की चाय के पश्चात् नित्य कर्म निवृत्ति तत्पश्चात् नाश्ता एवं लंच पैक प्राप्त करना और सात बजे अगले कैंप हेतु प्रस्थान।

हमारा अगला कैंप था 'जिरमी'। बताया गया स्थानीय भाषा में 'जिरमी' का अभिप्राय 'पानी की कमी' होता है जो बिल्कुल प्रासंगिक था। यह कैंप करीब 11,000 फीट की ऊँचाई पर था एवं करीब 7 किमी. की ट्रेकिंग के पश्चात् हम यहाँ पहुँचे थे।

जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते जा रहे थे। कैंपों से प्रस्थान का समय और पहले होता जा रहा था। कारण था जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे थे ट्रेकिंग कठिन होती जा रही थी और समय ज्यादा लग रहा था। जिरमी से हमें प्रातः छः बजे प्रस्थान करना था। वहाँ से चलने के पश्चात् रास्ते में हिम का मिलना शुरू हो गया था। शायद हमलोग हिम रेखा को पार कर रहे थे। कुछ और ऊपर चढ़ने पर केवल हिम ही दिखता था। लगता था श्वेत चादर से पहाड़ों को ढक दिया गया हो। वनस्पति का दिखना कमतर होता जा रहा था। इसप्रकार हिम पर चलते हुए एक अलग तरह का रोमांच महसूस हो रहा था। सायं तीन बजे तक हमलोग अगले कैंप 'टिलालोटनी' पहुँच गए।

यह कैंप करीब 12,000 फीट की ऊँचाई पर था। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ। हमारे टेंट भी बर्फ के बीच में ही बने थे। ठंड बहुत ज्यादा थी। रात्रि में तो तापमान हिमांक से भी 5 डिग्री नीचे तक चला जाता है। बोतलों में रखा पानी जम जाता था। हमें यह हिदायत दी गई कि पानी की बोतलों को शरीर से सटाकर स्लीपिंग बैग के अंदर ही रखें। साथ ही बताया गया यहाँ से प्रातः साढ़े चार बजे प्रस्थान करना है। अगली सुबह 'सार पास' पार करते हुए लगभग 14,000 फीट की ऊँचाई लांघनी थी। दोपहर में कई बार तीखी धूप एवं बारिश के कारण हिमस्खलन की संभावना बढ़ जाती है। इसीकारण हमारे दो शेरपा गाइड, जो कि पर्वतारोहण एवं ट्रेकिंग में प्रशिक्षित थे और दार्जिलिंग से आए थे, ने सुबह साढ़े

चार बजे तक प्रस्थान करने के लिए कहा था।

ठंड के कारण सारी रात कोई ठीक से सो नहीं सका। प्रात: तीन बजे उठकर हमने देखा हमारे टेंट के ऊपर भी बर्फ की एक मोटी तह जमी हुई है। बाहर रखा हुआ बोतलों का पानी बर्फ में बदल चुका था। ठंड के कारण कुछ भी करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। किसी तरह तैयार होकर सबने 'फॉल इन' किया। बेस कैंप में ही प्रत्येक दल एक नारा चुनते हैं। हमारे दल एसपी-8 ने अपना स्लोगन चुना था। 'हू इज ग्रेट? एसपी-8, एसपी-8'। दलनायक के नेतृत्व में सबने एक बार फिर प्रस्थान से पूर्व अपने दल के स्लोगन का घोष किया और चल पड़े।

थोड़ी देर में चटक धूप बर्फ के ऊपर फैल गई। बर्फ पर चलने हेतु एक वस्तु जो कि बहुत आवश्यक है वह है धूप से बचाव का चश्मा यानी 'गोगल्स'। इसके बगैर तो चलना बहुत ही मुश्किल है। परा-बैगनी किरणों के बर्फ के सतह से परावर्तन के कारण आदमी 'स्नो ब्लाइंड' हो सकता है। अत: सारे लोगों ने अपना 'गोगल्स' पहन रखा था। करीब नौ बजे हम सब सार पास के सर्वोच्च शिखर के नीचे खड़े थे। चढ़ाई लगभग खड़ी थी। बिना रस्सियों के चढ़ना लगभग असंभव था। हमारे शेरपा गाइड ने सर्वप्रथम बर्फ को कुल्हाड़ी से काटकर इसमें पैर रखने लायक जगह बनाते हुए एवं कुल्हाड़ी को बर्फ में गड़ाकर उसमें रस्सियों को लपेटकर ऊपर बढ़ते हुए शिखर तक पहुँचकर रस्सियों के सहारे चढ़ने लायक रास्ता बना दिया।

इस ऊँचाई पर एक तो ठंड दूसरे प्राणवायु (ऑक्सीजन) की कमी, पीठ पर लदा दस-बारह किलो का बैग एवं वहाँ तक पहुँचने के कारण थकान। इन सबसे आरोहण में अत्यंत श्रम करना पड़ा। परंतु हिम्मत के साथ हमलोग शिखर पर पहुँच गए। थकान से शरीर का बुरा हाल था। ज्यादातर सदस्य वहीं शिखर के आस-पास ही बैठ गए। हमारे शेरपा गाइड ने कहा थोड़ा विश्राम के पश्चात् आप लोग फोटो वगैरह खींचकर आगे बढ़ने को तैयार हो। आगे चढ़ाई नहीं है। यह सुनकर मन में बहुत संतोष मिला। परंतु थोड़ा आगे जाने पर पता चला अब हमें ऊँचाई से बर्फ पर 'स्लाइड' करते हुए नीचे उतरना है। नीचे की दूरी देखते ही कलेजा मुँह को आ गया। यह तो चढ़ाई से भी कठिन लग रहा था। पहले दल के अनुभवी सदस्यों ने स्लाइड की। लगभग डेढ़ किलोमीटर की 'स्लाइड' थी। हिम्मत कर और शेरपा लोग के बताए हुए गुर का प्रयोग कर यह कार्य भी सफलतापूर्वक पूरा किया। हालाँकि दल के कई सदस्य स्लाइड ठीक से नहीं कर पाए एवं कुछ मामूली रूप से चोटिल हुए तो किसी ने अपना सामान खोया। इसप्रकार रास्ते में एक दो जगह और छोटी स्लाइड करनी पड़ी और पुन: तीन बजते-बजते हमलोग अपने पाँचवें कैंप 'बीसकेरी थॉच' पहुँच गए। कपड़े बर्फ पर स्लाइड करने के कारण पूरी तरह से गीले हो चुके थे एवं कपड़ों के अंदर भी बर्फ प्रवेश कर गई थी। कपड़े बदलकर हमलोगों ने गर्म सूप पिया। अब बहुत सुकून और खुशी मिल रही थी। पूरे दल ने सार पास को सकुशल पार कर लिया था।

अगले रोज सुबह आठ बजे हमलोगों ने पुन: नीचे उतरना शुरू किया। कुछ ही घंटों के पश्चात् वापस जंगलों के बीच में थे। तभी दल के एक सदस्य ने कहा सावधान! भालू। हमलोगों ने भी उधर नजर घुमाई। देखा तो हिमालयन काला भालू दो बच्चों के साथ था। किसी ने कोई शरारत नहीं की और भालू अपने बच्चों के साथ पहाड़ की ढलानों में गायब हो गया।

वैसे रास्ते में हमलोगों ने विभिन्न प्रकार के पक्षी देखे जिनमें प्रमुख थे - धनेष, हिमालयन मोनल, हिमालयन बुलबुल, ब्लू बेयर्ड बी इटर, रैकेट टेल ड्रोगो इत्यादि।

अब हमलोग अपने अभियान के आखिरी कैंप 'भंडक थॉच' पहुँच चुके थे। शरीर में तो थोड़ी थकान परंतु आत्मा में एक नवीन ऊर्जा का संचार महसूस हो रहा था और मस्तिष्क में बहुत सुखद आनंद की अनुभूति हो रही थी। इसके अलावा हमने इस अभियान में पर्यावरण के प्रति प्रेम एवं सम्मान, टीम-भावना एवं भाईचारे के साथ कार्य करना सीखा। ऐसे अभियान राष्ट्र को जोड़ते हैं एवं राष्ट्रीय एकता को प्रमोट करते हैं। इन अभियानों में हमें देश के अन्य प्रांतवासियों से मिलने, समझने एवं उनकी संस्कृति को देखने का मौका मिलता है । साथ ही व्यक्ति की दृढ़ता, इच्छाशक्ति एवं आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

'भंडक थॉच' में रात्रि विश्राम कर हमलोगों ने पुन: अवरोहण प्रारंभ किया और दोपहर होते-होते एक बार फिर मानव आबादी के बीच पुलगा गाँव पार कर रहे थे। यहाँ से पार्वती नदी पार कर दूसरे छोर पर स्थित

गाँव बरसैणी जाना था जहाँ से कसोल के लिए बस मिलती है। सड़क मार्ग बरसैणी तक ही है। दल ने पहले ही निश्चय किया था सारे लोग पहले मणिकर्ण साहब पहुँच कर स्नान करेंगे एवं मत्था टेकेंगे। हमें नहाए हुए एक सप्ताह हो चुका था। मत्था टेकने के पश्चात् हमलोगों ने लंगर छका और वापस बेस कैंप पहुँच गए। रात्रि में कैंप फायर के पश्चात् 'वैलेडिक्टरी फंक्शन' हुआ एवं अभियान सफलतापूर्वक पूरा करने वाले सभी प्रतिभागियों को वाई.एच.ए.आई. के फील्ड डायरेक्टर श्री सावनी साहब द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

अगली सुबह नाश्ते के पश्चात् हमलोगों ने चंडीगढ़ की बस पकड़ी। इसप्रकार हमारा 'सार पास ट्रेकिंग अभियान-2013' पूरा हुआ।

प्रोटोकॉल निरीक्षक
महाप्रबंधक कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840017

सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूलरूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना: 20/10 हजार शब्दों वाली योजना

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के निर्देशानुसार, रेल कार्यालयों में सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूलरूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) की उपर्युक्त योजना लागू है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष रेल कार्यालयों में **हिंदी और हिंदीतर अधिकारियों/ कर्मचारियों को वर्ष के दौरान क्रमशः 20/10 हजार शब्द** हिंदी फाइलों पर टिप्पणी, प्रारूप आदि के रूप में लिखने के आधार पर नकद पुरस्कार दिए जाने की व्यवस्था है। इस योजना के प्रयोजन के लिए प्रत्येक अलग भौगोलिक स्थिति वाले कार्यालय को स्वतंत्र एकक माना जाता है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित **दस पुरस्कार** हैं-

क) केंद्रीय सरकार के प्रत्येक **मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय** के लिए स्वतंत्र रूप से:
पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 2000/-
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 1200/-
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 600/-

ख) केंद्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक **अधीनस्थ कार्यालय** के लिए स्वतंत्र रूप से:
पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 2000/-
दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 1200/-
तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार) प्रत्येक ₹ 600/-

(प्राधिकार: रेलवे बोर्ड का 04.02.2014 का पत्रांक हिंदी-2014/प्र.-7/5)

भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख है-
1. असमिया 2. बंगला 3. गुजराती 4. हिंदी 5. कन्नड़ 6. कश्मीरी 7. कोंकणी 8. मलयालम 9. मणिपुरी 10. मराठी 11. नेपाली 12. उड़िया 13. पंजाबी 14. संस्कृत 15. सिंधी 16. तमिल 17. तेलुगु 18. उर्दू 19. बोड़ो 20. संथाली 21. मैथिली 22. डोगरी

◆ तकनीकी ◆

पुल में कंक्रीट अधिसंरचना के प्रकार और उत्थापन विधि

संतोष

वर्तमान समय में रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार ज्यादातर रेल पुलों में कंक्रीट अधिसंरचना (सुपर स्ट्रक्चर) जैसे आर.सी.सी./पी.एस.सी. स्लैब, आर.सी.सी. बॉक्स, पी.एस.सी. गर्डर एवं पी.एस.सी. बाक्स गर्डर का प्रयोग रेल लाइनों के अमान-परिवर्तन, दोहरीकरण और नई लाइनों में किया जा रहा है। कंक्रीट अधिसंरचना वाले पुलों में आवधिक अनुरक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, जबकि स्टील गर्डर को जंग (कोरोजन) से सुरक्षित करने के लिए हर पाँच वर्ष में पेंटिंग की जाती है, इसके अलावा बियरिंग को प्रत्येक तीन वर्ष में ग्रिसिंग किया जाता है। पुल की कंक्रीट अधिसंरचना में बैलास्टेड डेक पर पी.एस.सी. स्लीपर बिछाकर ट्रैक तैयार किया जाता है, जिससे पुल के ट्रैक को एप्रोच एवं इंबैंकमेंट के ट्रैक की तरह ही मशीन के द्वारा अनुरक्षित किया जा सकता है। कंक्रीट गर्डर पुल में अधिसंरचना एवं उपसंरचना (सब-स्ट्रक्चर) के मध्य बेड ब्लॉक पर अनुरक्षण मुक्त इलास्टोमेरिक बियरिंग लगाये जाते हैं जबकि कंक्रीट स्लैब में बियरिंग की आवश्यकता नहीं होती है तथा पुल की कंक्रीट अधिसंरचना को समान स्पैन के लिए स्टील गर्डर की तुलना में कम लागत में तैयार किया जाता है।

अधिसंरचना के प्रकार

रेल पुलों में स्पैन के अनुसार सामान्यत: निम्न अधिसंरचनाओं का प्रयोग किया जाता है-

1. आर.सी.सी. बॉक्स, आर.सी.सी./पी.एस.सी. स्लैब- 6.1मी. तक के स्पैन के लिए।
2. पी.एस.सी. गर्डर- 6.1मी. से 18.3मी. तक के स्पैन के लिए।
3. पी.एस.सी. बॉक्स गर्डर- 24.4मी. से 45.7मी. तक के स्पैन के लिए।

कंक्रीट अधिसंरचना का भार समान स्पैन के लिए स्टील गर्डर के भार से लगभग 6गुना ज्यादा होता है। अत: इनके उत्थापन (लॉन्चिंग) को दृष्टिगत रखते हुए स्लैब के एक स्पैन को दो या चार भागों में कास्ट किया जाता है जबकि पी.एस.सी. गर्डर में स्पैन के अनुसार दो या तीन आई गर्डर होते हैं।

कंक्रीट अधिसंरचनाओं को निम्न कारणों की वजह से उचित लॉन्चिंग विधि द्वारा सावधानीपूर्वक उपसंरचना पर स्थापित किया जाना चाहिए-

◆ कंक्रीट स्लैब/गर्डर को केवल अभिकल्पित स्थान से ही उठाया जाता है जबकि स्टील गर्डर को किनारों या मध्य कहीं से उठाया जा सकता है।

◆ कंक्रीट कठोर और भंगुर (हार्ड एवं ब्रीटल) पदार्थ होता है इसलिए इसे लॉन्चिंग के दौरान बगल में विस्थापित करने के लिए रोलिंग बीम और रोलर या टफैलॉन शू का प्रयोग किया जाता है।

◆ लॉन्चिंग के दौरान कंक्रीट गर्डर को क्रेन या डेरिक से उठाते समय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि गर्डर किसी स्थायी या अन्य किसी संरचना से न टकराए क्योंकि इनका मरम्मत बहुत कठिन एवं महँगा होता है।

पुल की अधिसंरचनाओं को दो विधि द्वारा तैयार किया जाता है-

1. कास्ट इन सीटू: इस विधि का प्रयोग ऐसे स्थानों पर किया जाता है जहाँ उपसंरचना की ऊँचाई कम होती है, कार्यस्थल सूखा और समतल हो ताकि फरमाबंदी (शटरिंग) आसानी से की जा सके।

2. प्री-कास्ट विधि: इस विधि का प्रयोग ऐसे स्थानों पर किया जाता है जहाँ उपसंरचना की ऊँचाई अधिक है तथा कार्य-स्थल पर पानी हो या स्थान की कमी हो जिसके कारण फरमाबंदी करना संभव न हो।

लॉन्चिंग विधियाँ

सामान्यत: प्री-कास्ट कंक्रीट अधिसंरचनाओं को निम्नलिखित विधियों द्वारा लॉन्च किया जाता है-

अ) आर.सी.सी./पी.एस.सी. स्लैब रोड/सड़क क्रेन द्वारा

ब) पी.एस.सी. गर्डर पोर्टल डेरिक द्वारा
लॉन्चिग गर्डर(स्टील) द्वारा

स) पी.एस.सी. बॉक्स गर्डर लॉन्चिग गर्डर(स्टील)द्वारा

आर.सी.सी./पी.एस.सी. स्लैब की लॉन्चिंग

एक स्पान में आर.सी.सी./पी.एस.सी. स्लैब की 2 या 4 यूनिट होती है। 6.10 मी. स्पैन के लिए एक यूनिट का अधिकतम भार लगभग 18 टन होता है। इसकी लॉन्चिंग के लिए 25 से 30 टन क्षमता की रोड क्रेन की आवश्यकता होती है।

लॉन्चिंग विधि

1. सर्वप्रथम स्लैब की यूनिटों को रेलवे वर्कशाप/कास्टिंग यार्ड से ट्रेलर पर लोड कर कार्यस्थल पर लाया जाता है।

2. क्रेन को स्लैब लॉन्च किए जाने वाले स्थान के पास समतल एवं कठोर स्थान पर स्थापित किया जाना चाहिए।

3. उपसंरचना के बेड ब्लॉक को अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए क्योंकि स्लैब के नीचे बियरिंग का प्रावधान नहीं होता है।

4. स्लैब की यूनिटों को चेन या तार की रस्सी को स्लैब के लिफ्टिंग हुक से बाँधकर क्रेन द्वारा उठाकर बेड ब्लॉक के ऊपर एक-एक कर रखा जाता है।

पी.एस.सी. गर्डर की लॉन्चिंग

अ) पोर्टल डेरिक द्वारा

इस विधि द्वारा 12.2मी. स्पैन तक के प्री-कास्ट पी.एस.सी. गर्डर की लॉन्चिंग की जा सकती है। जहाँ पर उपसंरचना की अधिकतम ऊँचाई 8मी. और बेड तल सूखा हो वहाँ पर इस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

★आवश्यक उपकरण- पोर्टल डेरिक(15टन क्षमता)-2 नग
रोलर, डिप लॉरी, पॉवर विंच

लॉन्चिंग विधि

1. जिस स्पैन में गर्डर को लॉन्च किया जाना है उसके पास डिपलॉरी की सहायता से गर्डर को बेड तल पर रखा जाता है। सामान्यत: एक स्पैन में दो या तीन आई गर्डर होते हैं।

2. दोनों डेरिक को पुल के एबटमेंट एवं पीयर के सामने स्थापित कर क्रॉस बीम से जोड़ दिया जाता है।

3. गर्डर के दोनों सिरों को तार की रस्सी से बाँधकर विंच के द्वारा सावधानीपूर्वक इसप्रकार उठाया जाता है कि दोनों सिरे एक साथ बराबर उठे जिससे कि दोनों डेरिक पर बराबर भार आए।

4. गर्डर को क्रॉस बीम पर रखे रोलर पर रख दिया जाता है, इसके उपरांत रोलर की सहायता से गर्डर को बगल में विस्थापित कर यथास्थान पर लाया जाता है।

5. इसके उपरांत गर्डर को उठाकर क्रॉस बीम और रोलर को हटा दिया जाता है और गर्डर को बेड ब्लॉक के ऊपर रखे इलास्टोमेरिक बियरिंग पर रख दिया जाता है। इसी प्रकार स्पैन में अन्य आई गर्डरों की लॉन्चिंग की जाती है तदोपरांत इनके ऊपर डैक स्लैब की कास्टिंग की जाती है। यही प्रक्रिया अन्य स्पैनों में भी पी.एस.सी. गर्डरों को लॉन्च करने में की जाती है।

ब) लॉन्चिंग गर्डर (स्टील) द्वारा

इस विधि द्वारा पी.एस.सी. गर्डर और पी.एस.सी. बॉक्स गर्डर को लॉन्च किया जा सकता है। इसमें किसी एक एप्रोच बैंक के समीप कास्टिंग यार्ड का प्रावधान किया जाता है जहाँ से पी.एस.ए.सी. गर्डरों को अस्थाई ट्रैक पर डिपलॉरी की सहायता से एप्रोच बैंक पर लाया जाता है।

★आवश्यक उपकरण

स्टील गर्डर जिसकी लंबाई पुल के स्पैन के दोगुनी लंबाई से अधिक हो। पोर्टल गैलो(फ्रेम) 2 नग, जैक 200 टन क्षमता, फ्लोरिंग बीम, डिपलॉरी-2 नग, रोलिंग प्लेटफार्म, रोलर

लॉन्चिंग विधि

1. स्टील गर्डर को रोलिंग प्लेटफार्म पर खिसका कर स्पैन न.1 एवं 2 में बेड ब्लॉक के ऊपर जैक द्वारा स्थापित किया जाता है। इसके उपरांत एप्रोच बैंक और स्टील गर्डर पर ट्रैक लिंक कर दिया जाता है।

2. पी.एस.सी. गर्डर/बॉक्स गर्डर को कास्टिंग यार्ड से डिपलॉरी पर लोड करके स्पैन न.1 में स्थापित स्टील गर्डर पर लाया जाता है।

3. एबटमेंट एवं पाये के बेड ब्लॉक पर स्थापित पोर्टल फ्रेम में लगे फ्लोरिंग बीम और जैक की सहायता से गर्डर को 50मिमी. तक उठाकर इसके नीचे लगी दोनों डिपलॉरी को हटा दिया जाता है।

4. इसके बाद स्टील गर्डर को बेड ब्लॉक पर रोलिंग प्लेटफार्म की सहायता से अगले स्पैन पर ले जाते हैं।

5. पी.एस.सी. गर्डर को सावधानीपूर्वक फ्लोरिंग बीम और जैक की सहायता से बेड ब्लॉक के ऊपर इलास्टोमेरिक बियरिंग पर स्थापित कर दिया जाता है।

6. अगले स्पैन में गर्डर की लॉन्चिंग के लिए एबटमेंट पर लगे पोर्टल फ्रेम को अगले पाये पर स्थापित कर दिया जाता है। स्पैन न.1 में लॉन्च किए गए गर्डर के ऊपर ट्रैक बिछाकर स्टील गर्डर के ट्रैक से लिंक कर दिया जाता है।

7. समान प्रक्रिया स्पैन न. 2 एवं अन्य स्पैनों में गर्डर को लॉन्च करने में अपनाई जाती है।

उप मुख्य इंजीनियर/पुल/मुख्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9794840206

◆ कहानी ◆

समय

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

पश्चिमोत्तर की ओर दृष्टि डालने पर एकबारगी तो आदर्श दंग होकर रह गया। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था कि सामने उधर खड़ी युवती रूपा ही है, किंतु उसकी मुस्कान यह सुनिश्चित कर रही थी कि प्लेटफार्म पर 'हवामहल' की पहचान पट्टिका लिए खड़ी वह युवती रूपा ही है। रूपा सिन्हा! आखिर जिस मुस्कान के पीछे उसने इतनी सारी खुशियों की आहुति दी थी, उसको पहचानने में धोखा कैसे खा सकता था।

धीरे-धीरे पटरियों पर रेंगती ट्रेन अब रूक चुकी थी। दिल की धड़कनों पर काबू पा आदर्श अपने कंधे पर थैला डाल, सूटकेस को हाथ में उठाकर बोगी से बाहर निकल निकास द्वार की ओर बढ़ा। रेल विभाग की सुव्यवस्थित प्रबंधन नीति का ही परिणाम रहा होगा कि स्टेशन के प्लेटफार्म पर सफाई भी थी और अच्छे स्वर में यात्रियों के हित में निर्देशों का प्रसारण भी हो रहा था। उधर, रूपा सिन्हा अब भी स्थिर निर्विकार भाव से 'हवा महल' की पट्टिका लिए यथावत खड़ी थी।

किंतु अब पहचान पट्टिका का दूसरा सिरा आदर्श की ओर था, जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में आदर्श 'नया संसार' लिखा हुआ था। जैसे ही पट्टिका की ओर बढ़ते व्यक्ति की ओर रूपा की दृष्टि घूमी, उसे अपने सामने एक परिचित-सा चेहरा दिखायी दिया। आदर्श तो रूपा के चेहरे पर आये प्रत्येक भाव का निरीक्षण बारीकी से कर रहा था जबकि रूपा हर्षचकित और विह्वल-सी हुई जा रही थी।

भावातिरेक में रूपा ने जब 'हैलो आदर्श' कहा, तब उसके शब्दों को पंखुड़ी जैसे हिलते अधरों से निकलता सुनकर आदर्श को लगा कि जैसे वे किसी रेलवे प्लेटफार्म पर न खड़े होकर बारहवीं कक्षा के क्लास रूम अथवा बरामदे में खड़े हों। पलभर को दोनों बिना पलकें झपकाये एक-दूसरे को देखते ही रह गए; फिर रूपा ने अपने चेहरे के भावों को अपेक्षाकृत संयत करते हुए स्टेशन से बाहर निकलने का इशारा किया। बाहर आकर रूपा ने ड्राइवर से आदर्श का सूटकेस लेकर रखने को कहा। सामने खड़ी कार के पास पहुँचकर उसने दरवाजा खोला और आदर्श रत्नाकर सिंह को भी कार के भीतर बैठने का संकेत किया।

कार सरपट भागी जा रही थी। बातचीत का सिरा रूपा ने ही प्रारंभ किया। बोली- 'आदर्श, तुम तो बिल्कुल भी नहीं बदले। पता है, मैंने तुम्हें एक बार में ही पहचान लिया था। जब मुझे यह पता चला था कि दिल्ली से आनेवाले पत्रकार का नाम आदर्श है; तब उसी वक्त मुझे संदेह हुआ था कि हो न हो कहीं तुम ही तो न हो!... किंतु यह तो बताओ कि तुम एक कवि से पत्रकार कैसे बन गए? हाँ, तुम पहले से कुछ मोटे जरूर हो गए हो। फुटबॉल अब नहीं खेलते क्या?'

आदर्श तो मंत्रमुग्ध-सा रूपा की बातें सुनने का इच्छुक था। उसके गले में एक बड़ा-सा क्रास गाड़ी के हिचकोलों और उसकी बढ़ती-घटती रफ्तार के साथ झूल रहा था और उसकी निगाहें भी बार-बार वही जिज्ञासु की एकाग्रता के साथ केंद्रित हो रही थीं। रूपा जब चुप हुई तब उसकी भी तंद्रा भंग हुई। बोला- 'रूपा, तुम भी तो बिल्कुल नहीं बदली। तुम्हारा स्वर तो अब मेरे कर्णपटों में सुधा-सी नयी जीवनी शक्ति और ऊर्जा दे रहा है...'

आदर्श बोलना तो और भी बहुत कुछ चाह रहा था, किंतु शायद उसकी जबान नजरों में ही समाहित हो चुकी थी। समय के ऐसे नाजुक दौर में उसके दिल को जबान से ज्यादा भरोसा आँखों पर था। रूपा अब भी वैसी ही थी।

आदर्श को रूपा से ही यह पता चला कि उसने 'मुंबई विश्वविद्यालय' से 'मास्टर ऑफ सोशल वर्क' का कोर्स करने के उपरांत स्वयंसेवी संस्थान 'हवा महल' को अपनी सेवाएँ देने की जिंदगी अपना ली थी। वह आदर्श की अंतर्भावनाओं से अप्रभावित हो, निस्पृह-निर्विकार ढंग से धारा-प्रवाह बोले जा रही थी कि किसतरह से जिस हर्ष और सेवाभावी जीवन की खोज में वह जीना चाहती थी, वह प्रसन्नता उसे अब मिल सकी है...

आदर्श के मानस पटल पर स्मृतियों के चित्र किसी चलचित्र की तरह गड्ड-मड्ड होकर दौड़ रहे थे। दिल्ली के एक प्रसिद्ध स्कूल में उसने ग्यारहवीं कक्षा में तब प्रवेश लिया था। उस समय पहला ही पीरियड चल

रहा था और शिक्षिका सभी नवागंतुक छात्र-छात्राओं का परिचय प्राप्त कर रही थीं।

'मैडम! आई ऐम रूपा सिन्हा फ्राम सोनबरसा थाना चौरीचौरा, गोरखपुर! आदर्श ने स्वर की दिशा में दृष्टि उठायी। एक साँवली-सी पाँच फीट चार इंच कदवाली लड़की मद्धम स्वर में अपना परिचय दे रही थी। वह मूलत: महाराजगंज का था। रूपा के बारे में जान कर उसे लगा कि चलो, दिल्ली जैसे रूखे और पथरीले शहर में कोई तो अपनी तरफ का मिला। जब उसकी बारी आयी, तब उसने बहुत ही खोये और अनमने से अंदाज में कह दिया- 'मैडम आई ऐम आदर्श फ्राम गोरखपुर!'

शिक्षिका ने जब चकित स्वर में पूछा- 'ओह, गॉड! यू आर आलसो फ्राम गोरखपुर!' तब जाकर उसकी अन्यमनस्कता भंग हुई। बोला- 'नो मैडम! सॉरी, आई ऐम फ्राम महाराजगंज...ए नेबर सिटी ऑफ गोरखपुर...' और इतना सुनने के साथ ही कक्षा ठहाकों से गूँज उठी थी। रूपा के साँवले चेहरे पर भी मुस्कान तरंगित हो उठी थी।

लगभग दो पखवाड़े बीत चुके थे। अब तक आदर्श कक्षा में अच्छी तरह जाने लगा था। पढ़ाई के कारण तो वह सुनाम था ही, उससे ज्यादा मशहूर हुआ था वह फुटबॉल टीम में चुने जाने की वजह से। एक अच्छा अथलीट भी था वह। वार्षिक अथलेटिक मीट में सौ मीटर की दौड़ में पलक झपकते ही वह गोली की तरह दौड़कर प्रथम स्थान पर काबिज हो उठा था। अचानक एक दिन कक्षा में एक धीमी-सी आवाज उसके कानों में सुधाविंदु-सी पड़ी- 'आदर्श रत्न, रेस में प्रथम आने और कॉलेज की फुटबॉल टीम में चुने जाने की बधाई!'

'ओह... हा... हाय....थैंक्स!' -बहुत ही विचित्र रूप से घबराहट के साथ ये शब्द उसके मुख से निकले। इसके बाद तो वे दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे। रूपा ने उसको बताया कि उसके माता-पिता का देहांत बचपन में ही हो चुका था। बहुत दिनों तक वह अपने चाचा के यहाँ सोनबरसा में रहती थी। यहाँ पर उसको मैरिट स्कॉलरशिप के आधार पर प्रवेश दिया गया है- सुनकर आदर्श को महसूस हुआ कि सरकार की किसी अच्छी योजना का सदुपयोग हो सका है।

इसके बाद तो आदर्श अक्सर रूपा से बातें करने लगा था। यद्यपि अन्य छात्राओं से बातें करते समय वह पहले की ही भाँति हिचकिचाता था, किंतु अपने आप में वह एक विचित्र-सा बदलाव पाने लगा था। भोजन करने के उपरांत टहलते समय उसकी दृष्टि प्राय: किसी की प्रतीक्षा करती थी। कक्षा में भी अक्सर उस साँवली स्निग्ध काया के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा था उसका अंतर्मन।

फुटबॉल का एक अच्छा खिलाड़ी होने के कारण बहुत-सी लड़कियाँ आदर्श को पसंद करतीं जो उसके करीब भी आना चाहती थी; किंतु वह उनसे स्वयं को दूर रखना ही उचित समझता था। पता नहीं क्यों, वे सबकी सब उसे अजनबी-सी लगती थीं। अब तो कुछ लड़कियों के बीच यह भी बातचीत का मुख्य विषय हो गया था कि आदर्श का रूपा के साथ कोई अफेयर है।

पता नहीं, यह कक्षा के छात्र-छात्राओं के मार्फत कालेज में उड़ रही अफवाहों का असर था अथवा आदर्श के दोस्तों के लगभग हर समय टोकते रहने की देन; आदर्श अब रूपा को प्रपोज करने की सोचने लगा था। आदर्श के दोस्तों ने सुलगती चिनगारियों को हवा दी और एक दिन उसने रूपा से अपने दिल का हाल कह ही दिया। रूपा पहले तो सकपकायी; फिर बहुत ही संयत स्वर में कहा- 'आदर्श, तुम्हें मैंने आज तक इस निगाह से कभी देखा ही नहीं। फिर वैसे भी मैं तुम्हें सिर्फ सबसे अच्छा दोस्त मानती हूँ अपना। फिर वक्त भी इन सब बातों के अनुकूल नहीं है।'

एक झटके के साथ कार के रूकते ही, आदर्श की तंद्रा भंग हो गई। स्मृतियों के संसार से निकल कर आदर्श ने देखा कि वे 'हवा महल' के कार्यालय तक पहुँच चुके थे। ड्राइवर उसका सामान उतार रहा था। रूपा आदर्श को उसका कमरा दिखाने ले गयी। चलते-चलते उसने आदर्श को यह भी याद दिलाना जरूरी समझा कि कांफ्रेंस सायंकाल में चार बजे से है। आदर्श तो अब भी मंत्रमुग्ध-सा था। रूपा के जाने के बाद ही वह होश में आ पाया।

नियत समय पर आदर्श 'कांफ्रेंस' में पहुँच गया। तकरीबन पंद्रह तो पत्रकार थे और अन्य थे आमंत्रित अतिथि। संस्थान के निदेशक कमल कुमार ने ठीक समय पर संस्थान के कार्यकलापों के विवरण दिए। तदुपरांत, कुछ लोगों ने भाषण; फिर संस्थान के बारे में एक सूचनात्मक वृत्तचित्र भी दिखाया गया। अंत में, निदेशक कमल कुमार ने बताया कि अगले दिन सभी पत्रकारों को संस्थान के द्वारा संचालित केंद्रों की गतिविधियों को दिखाया-बताया

जाएगा। आदर्श के साथ रूपा को जाना था।

अगले दिन संस्थान के द्वारा संचालित केंद्र का अवलोकन कराते समय बहुत ही हर्षित थी रूपा। शाम ढलने को थी और आदर्श थक चुका था, किंतु रूपा के सान्निध्य का कुछ ऐसा प्रभाव था उस पर कि अभी वह कुछ देर और घूमना चाह रहा था। फिर उन्होंने तय किया कि मुख्यालय तक वह पैदल ही जाएँगे।

इसी दौरान रूपा ने आदर्श से एक अप्रत्याशित प्रश्न कर डाला- 'तो आदर्श, तुम आखिर शादी क्यों नहीं कर लेते? आखिर कब तक यों ही कुँवारा बना रहने का इरादा है तुम्हारा?'

यह सुनकर आदर्श के अंतर्मन में एक विचित्र झंझावात-सा उठ पड़ा कि आखिर कैसे वह बताये कि इन आठ-नौ वर्षों में किसतरह उसकी यादें समेटे हुए वह अपने बूढ़े माता-पिता के अरमानों को ठुकराता चला आया है। कैसे बताये कि उस पर जान छिड़कने वाली प्रतिमा के अथक प्रयासों के बावजूद वह उसको रूपा की जगह नहीं दे सका है। यद्यपि साथ काम करने की वजह से प्रतिमा अब भी प्रयासरत थी किंतु आदर्श के अंतर्मन में तो बस रूपा की ही प्रतिमा बसी थी।

'आदर्श तुमने कुछ कहा नहीं? आखिर तुम शादी करके घर-संसार क्यों नहीं बसा लेते अपना?' -रूपा ने फिर पूछा था। इस पर आदर्श ने धीरे से कहा- 'रूपा, तुम ही बताओ! आखिर कब तक मैं अपने आप को यों ही छलूँ? मैं जानता हूँ कि इस दुनिया में प्यार की कोई कमी नहीं है। इसके बावजूद जहाँ मैं शादी करना चाहता हूँ, यदि वहाँ न हो तो फिर और कहीं और होने वाली शादी तो एक ढकोसला होगी और मैं किसी के भी साथ ऐसी ज्यादती नहीं कर सकता कि उसे अपना जीवनसाथी तो बना लूँ किंतु उसे अपने प्यार से वंचित रखूँ। मैंने स्वयं को बहुत पहले ही किसी को सौंप दिया था और यदि मेरे हिस्से में उसका प्यार नहीं है तो फिर मैं अपने को छलने के लिए शादी नहीं कर सकता।'

'लेकिन ऐसी कौन लड़की है जिसको तुम पसंद नहीं हो। या तो वह दिमागी तौर पर ठीक नहीं होगी या उसने तुमको पहचानने में गलती की है।'

'नहीं रूपा!' -आदर्श बोला- 'उसकी दिमागी दशा तो बिल्कुल ठीक है और वह मुझे बड़ी अच्छी तरह से पहचानती भी है।'

'आखिर वह है कौन और कब से जानती है तुम्हें?'

'छोड़ो भी रूपा! अब यह सब जानकर क्या करोगी तुम?'

'क्यों, एक पुराना दोस्त होने के नाते मेरा इतना भी हक नहीं?'

'दोस्त' शब्द आदर्श के दिल में नश्तर की तरह चुभ रहा था। इस अधिकार के बदले में तो वह अपने जीवन के सारे अधिकार तक देने को तैयार था।

'अरे, तुम्हें क्या हो गया है आदर्श? रह-रहकर कहाँ खो जाते हो तुम? बताओ भी तो भला कौन है वह लड़की?'

'रूपा, यदि मैं कहूँ कि वह लड़की तुम ही हो तो?'

एकबारगी तो यह सब सुनकर रूपा सन्न रह गयी; फिर आवाज को संयत करती हुई बोली- 'आदर्श, समय के बहाव के साथ अब हमारे रास्ते भी अलग-अलग हो चुके हैं और मैं उस मुकाम पर पहुँच चुकी हूँ जहाँ से चाहकर भी वापस लौटना संभव नहीं है। मैंने तो समाज सेविका बनने का फैसला कर ही लिया है। अगले ही महीने मैं प्रशिक्षण लेने के लिए बस्तर जा रही हूँ।'

'रूपा, आखिर लोग जिंदगी के कुछ खास फैसले यह बात जानते हुए भी कि उससे किसी और की भी जिंदगी जुड़ी हुई है, क्यों और कैसे कर लेते हैं? कभी तो वे कहते हैं कि समय अनुकूल नहीं है और कभी वक्त आने से पहले ही अपने किए वादों से मुकर कर अपना अलग रास्ता ही चुन लेते हैं।' -आँखें भर आयी थीं उसकी। रूपा की आँखें भी नम हो उठी थीं। फिर भी दृढ़ स्वर में कहा उसने- 'मेरा फैसला अटल है आदर्श। चाहकर भी मैं अब समय को पीछे नहीं धकेल सकती।'

अब तक दोनों संस्थान 'हवा महल' के मुख्यालय के करीब पहुँच चुके थे। 'क्षमा करना आदर्श, शायद मैं तुम्हें स्टेशन तक सी-ऑफ करने नहीं आ सकूँ क्योंकि मैं तुम्हें और कमजोर करना नहीं चाहती।' -कहकर रूपा तेज कदमों से लौट गयी।

आदर्श भी कार पर सवार होकर स्टेशन की ओर चल दिया। उधर, रास्ते में ड्राइवर ने गुनगुनाना शुरू किया- एक अधूरी सी मुलाकात हुई थी जिनसे
जाने अब उनसे मुलाकात कभी हो कि न हो
मेरी खामोश मोहब्बत को न समझा कोई
दिल यों ही छोड़ गया हाथ में जलता कोई।

कुछ समय बाद कार से उतरकर आदर्श प्लेटफार्म पर आ चुका था। समय यों ही पर लगाकर उड़ता रहा, किंतु यादों की तस्वीरें धीरे-धीरे बेरंग-बदरंग होने लगी थीं। एक दिन उसने मानव सेवा करने वालियों के साथ कुछ नराधमों के द्वारा दुष्कर्म किए जाने की खबरें पढ़ी तो किसी अनजानी पीड़ा से तड़प कर रह गया। खबर उसी सेवा संस्थान ' हवा महल' से संबद्ध थीं। न चाहते हुए भी आदर्श को जाना पड़ा था वहाँ।

वहाँ पहुँचने पर आदर्श को रूपा का पता ज्ञात करने में कोई मुश्किल नहीं हुई। वह अब तक सदमे से उबर नहीं पायी थी। एक अस्पताल में दाखिल थी। रूपा से मिलने के पूर्व आदर्श को सख्त हिदायत दी गई थी कि वह उससे कोई भावनात्मक प्रश्न नहीं पूछेगा।

जब आदर्श ने दरवाजा खोला तब रूपा उसको अपने सामने देख कर भौंचक्की ही रह गयी। शायद सपने में भी नहीं सोचा होगा उसने कि उसकी पूर्व जिंदगी में शामिल कोई व्यक्ति उससे मिलने अस्पताल में आ जाएगा। वैसे आदर्श ने थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करके रूपा से विदा ली।

फिर तो अगले कुछ दिनों तक आदर्श की यही दिनचर्या-सी हो गयी। रोज अस्पताल आता। साथ में कभी फल तो कभी किताबें होतीं। रूपा की दशा में लगातार सुधार हो रहा था। अब उसे कुछ ही दिनों में छुट्टी मिलने वाली थी उस अस्पताल की जिंदगी से। इसके बाद उसका स्थानांतरण भी बैंगलोर होने वाला था।

उस दिन आदर्श अंतिम बार मिलने आया था रूपा से। लॉन में बैठी हुई थी वह। आदर्श को देखते ही उसने अपने पास रखी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उसके बैठ जाने के बाद बोली- 'आदर्श, तुम अब वापस क्यों नहीं चले जाते? देखो, अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। उधर, तुम्हारे काम का हर्जा हो रहा है और वैसे भी मैं कल बैंगलोर जा रही हूँ हमेशा के लिए।'

'रूपा, मैं अब भी तुम्हारे ही जवाब के इंतजार में बैठा हूँ।'

सुनते ही रूपा आवेश में लगभग चीख ही उठी- 'मैं अब वह रूपा नहीं रही...। ...यदि तुम सोचते हो कि मुसीबत की इस घड़ी ने मुझे अपने निर्णय को बदलने पर विवश कर दिया होगा तो तुम बेहद गलत सोचते हो। नारी की अस्मिता को तोड़कर लोग समझते हैं कि उसके स्वाभिमान को भी तोड़ सकेंगे तो यह महज भ्रम है उनका। आदर्श, तुम मुझे गलत मत समझना। मैं...'

रूपा अपनी बात पूरी कर पाती, इससे पूर्व ही आदर्श घूमकर तेज कदम उठाते हुए वहाँ से चल दिया शायद इससे ज्यादा सहन कर पाना उसके बरदाश्त के बाहर की बात थी। ट्रेन के डिब्बे में बैठा कोई सहयात्री किसी से कह रहा था-

मोहब्बत के लिए कुछ खास दिल मखसूस होते हैं
यह वह नग़मा है जो हर साज पर गाया नहीं जाता।

आदर्श वरिष्ठ पत्रकार कहलाता था। उसकी मर्माहत संवेदनाएँ उसके विचारों के साथ मंथन कर रही थी। वह सोच रहा था कि अब माता-पिता एवं बहन-भाई को ज्यादा दिनों तक दु:खी नहीं रखा जा सकता। अब तो वह प्रतिमा को शादी के लिए 'हाँ' करके अपनी स्वीकृति दे ही देगा।

नयी दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर उतरते ही आगे बढ़ने पर किसी से वह टकराया तो 'सॉरी' बोलने के लिए उसने सिर उठाया। सामने उसने प्रतिमा को किसी चित्ताकर्षक युवक के साथ खड़ा पाया।

'हाय आदर्श, तुम! इतने दिनों तक के लिए कहाँ गायब हो गये थे?... मेरी सगाई में भी शामिल नहीं हो सके। ...खैर, मेरे वुड बी हब्बी डियर से तो मिलो...'

वरिष्ठ पत्रकार होगा आदर्श तो होगा अपनी बला से। उसे अपने चिरसंचित अरमानों का किला ढहता दिखायी दे रहा था। रूपा के प्रति उसके व्यभिमान(भ्रामक दृष्टिकोण) ने उसको किसी ओर का नहीं छोड़ा था।

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'
बैंक रोड
गोरखपुर-273001
संपर्क: 9451202409

अगर चाहते हो कि तुम्हें तुम्हारे मरते ही और नष्ट होते ही भुला न दिया जाए तो या तो पढ़ने लायक कुछ लिख डालो या कुछ ऐसा कर डालो जिस पर कुछ लिखा जाए।

बैंजामिन फ्रैंकलिन

◆ बाल विज्ञान कथा ◆

सुपरनोवा का रहस्य

अर्शिया अली

नियॉन अपनी पत्नी कैट के साथ रात का डिनर कर रहा था। उसकी पत्नी ने आज उसका मनपसंद खाना चिकन तिक्का और मटन बिरयानी बनायी थी। आज पूरे बीस दिनों बाद वह नासा प्रयोगशाला से एक दिन की छुट्टी पर अपने घर आया था। नियॉन के आगे उसका मनपसंद खाना था, लेकिन उसका दिमाग अब भी नासा में चल रहे शोध में लगा हुआ था। यह देखकर कैट ने उसे टोक दिया- 'आप इतने दिनों के बाद घर आए हैं और ठीक से खाना भी नहीं खा रहे। प्लीज, खाना तो आराम से खा लीजिए... फिर मुझे आपसे ढेर सारी बातें करनी है।'

यह सुनकर नियॉन एकदम से चौंक पड़ा। वह अपनी पत्नी की ओर देख कर मुस्कराया।

कैट पुनः बड़बड़ाई, 'एक दिन का तो रेस्ट है। परसों से फिर आप होंगे और आप की प्रयोगशाला...।'

नियॉन इस बार भी कुछ नहीं बोला। उसने अपनी प्लेट थोड़ा पास सरकाया और फिर चुपचाप खाना खाने लगा।

नियॉन नासा का एक प्रसिद्ध खगोल वैज्ञानिक है। वह पिछले काफी समय से स्पित्जर दूरबीन और व्यापक अवरक्त सर्वे अन्वेषक (डब्ल्यू.आई.एस.ई.) द्वारा 2000 साल पुराने सुपरनोवा के रहस्य को ढूँढ़ने की कोशिश में लगा हुआ है। इस दिशा में नियॉन और उसके साथियों ने दिन-रात एक कर दिया है। वे किसी भी कीमत पर इस रहस्य का पर्दाफाश करना चाहते हैं। इसी से आजकल नियॉन थोड़ा चिंतित रहने लगा था। लेकिन उसे यकीन था कि वह और उसका ग्रुप जल्दी ही कामयाब होंगे। इस दिशा में बस थोड़े से और परिश्रम की जरूरत है।

अगले दिन सुबह 8 बजे कैट ने नियॉन को गरम-गरम चाय के साथ जगाया। वह इस वक्त काफी ताजगी महसूस कर रहा था। वह गुड मार्निंग कहता हुआ उठा और ब्रश करने के लिए कमरे से सटे बाथरूम की ओर बढ़ गया। ब्रश करने के बाद जैसे ही नियॉन ने चाय का कप हाथ में लिया, उसका बेटा जॉन दौड़ता हुआ आ गया। वह अधिकारपूर्वक अपने पिता की गोद में घुस कर बैठ गया।

जॉन अभी 3 साल का है। वह अपने घर पर पिता को बहुत मिस करता है। इसीलिए जब भी उसके पिता आते हैं, वह एक क्षण भी उनसे दूर नहीं रहता।

'डैड, आप कैसे हैं?' -जॉन ने मुस्कराकर पूछा। लेकिन बिना जवाब की प्रतीक्षा किए वह फिर बोल उठा- 'आप हमारे साथ सारे दिन रहिएगा, मुझे आपके साथ बहुत सारे गेम खेलने हैं।'

यह सुनकर नियॉन मुस्करा उठा। उसने जल्दी से अपनी चाय खत्म की और जॉन से बोला- 'चलो, अभी से खेलने चलते हैं। ...आज हमलोग दिन भर मस्ती करेंगे।' खेल-खेल में दिन कब बीत गया, कुछ पता नहीं चला। नियॉन के जाने का समय हो आया। उसे विदा करते समय जॉन उदास हो गया और कैट की आँखें भर आईं। लेकिन उनलोगों ने अपने ज़ज़्बातों पर नियंत्रण किया और नियॉन को मुस्कराकर विदा किया।

कैट और जॉन को प्यार करने के बाद नियॉन नासा मुख्यालय की ओर चल पड़ा। इस एक दिन की छुट्टी ने उसके भीतर इतना जोश भर दिया था कि वह महीनों तक बिना थके हुए अपना काम कर सकता था, अपने शोध कार्य को संपन्न कर सकता था।

नियॉन के पहुँचते ही उसके साथी वैज्ञानिकों ने उसे विश किया और खुशखबरी सुनाई कि सुपरनोवा के बारे में कुछ और बातें पता चली हैं जिससे हम लक्ष्य के काफी करीब पहुँच गये हैं। यह सुनकर नियॉन बहुत खुश हुआ और अपने कक्ष की ओर चल दिया।

185 ईस्वी में चीन के खगोलविदों ने आसमान में एक मेहमान सितारे को देखा था, जो रहस्यमयी तरीके से दिखाई दिया और लगभग 8 माह तक चमकता रहा। वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के द्वारा सन 1960 तक यह जान लिया था कि वह रहस्यमयी पिंड और कुछ नहीं इंसान द्वारा पहली बार दर्ज किया गया सुपरनोवा था।

हम जानते हैं कि सभी तारे एक प्रकार के सूर्य होते हैं, जिनके भीतर परमाणु ईंधन लगातार जलता रहता

है। उनके भीतर मौजूद द्रव्यराशि बहुत ज्यादा होती है, जिसके दाब से तारों का आंतरिक तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है। इस वजह से तारे के भीतर मौजूद विभिन्न प्रकार के परमाणु अपना रूप बदलने लगते हैं। इस बदलाव के दौरान उनसे बहुत सारी ऊर्जा मुक्त होती है। यही ऊर्जा ताप या विकिरण के द्वारा धरती तक पहुँचती है।

आमतौर से तारों में हाइड्रोजन तत्व अधिक होता है। यह अत्यधिक दाब और ताप पर हीलियम में बदल जाता है। ऐसा तब भी होता है, जब हाइड्रोजन बम फटता है। लेकिन तारे में यह प्रक्रिया बहुत बड़े स्तर पर होती है। इसलिए एक तारे की ऊर्जा को अरबों-खरबों हाइड्रोजन बमों से निकली हुई ऊर्जा के बराबर माना जा सकता है।

जब तारों के भीतर का ईंधन एक सीमा से अधिक घट जाता है, तो वह फूल कर बड़ा होने लगता है। ऐसे में उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति काफी बढ़ जाती है और वह अपने आसपास स्थित ग्रहों को अपने भीतर खींचने लगता है।

धीरे-धीरे तारे के भीतर का एक प्रकार का ईंधन समाप्त हो जाता है। फिर वह दूसरे प्रकार के ईंधन का प्रयोग करने लगता है। ऐसी दशा में तारे सिकुड़ने लगते हैं। इससे परमाणु खंडित होकर प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन में बदल जाते हैं। उनसे बनी द्रव्यराशि 'प्लाज्मा' के नाम से जानी जाती है। ऐसी स्थिति में पहुँचने पर तारा 'सफेद बौना तारा' कहलाता है।

अपनी मृत्यु की ओर बढ़ता हुआ तारा इसके बाद भी तेजी से बदलता रहता है। अपने आंतरिक बदलावों के कारण इस अवस्था में वह तेजी से सिकुड़ने लगता है। बहुत ज्यादा सिकुड़ जाने के बाद तारे में विस्फोट हो जाता है और उसके अंदर के पदार्थ अंतरिक्ष में फैल जाते है। तारे की इस दशा को ही 'सुपरनोवा' कहा जाता है।

185 ईस्वी में धरती पर जो आश्चर्यजनक पिंड देखा गया था, वैज्ञानिकों ने उसका नाम आर.सी.डब्ल्यू. -86 रखा था। बाद में यह पता चला कि वह और कुछ नहीं पृथ्वी से 8000 प्रकाश वर्ष दूर स्थित एक सुपरनोवा का अवशेष ही था, जो कि काफी विशाल था। लेकिन यह एक पहेली ही थी कि सितारे के गोलाकार अवशेष उम्मीद से कहीं बड़े क्यों थे? नियॉन और उसकी टीम ने जब स्पित्जर अंतरिक्ष दूरबीन और व्यापक अवरक्त सर्वे अन्वेषक के द्वारा और गहराई से अध्ययन किया, तो उन्हें सुपरनोवा का 2000 साल पुराना रहस्य मिल गया।

चीनी खगोल वैज्ञानिकों ने इस सितारे में विस्फोट होते हुए देखा था। इन नतीजों ने दिखाया कि सितारे में विस्फोट की घटना एक गहरी गुफानुमा जगह पर हुई थी, जिसके कारण सितारे से निकलने वाले अवशेष सामान्य से कहीं ज्यादा तेजी से और काफी दूर तक बिखर गए। उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय के खगोल विज्ञानी और दूरबीन की खोज का विवरण देने वाले नये अध्ययन के प्रमुख लेखक ब्रायन विलियम्स, जो नियॉन के ग्रुप में थे, ने कहा कि यह सुपरनोवा अवशेष काफी बड़ा था, काफी तेज था। 2000 साल पहले हुआ यह सुपरनोवा सामान्य सुपरनोवा से दो से तीन गुना बड़ा था।

सुपरनोवा से जुड़े आँकड़ों को देखकर नियॉन खुशी से फूला नहीं समाया। वह तुरंत नासा के मुख्यालय में स्पित्जर दूरबीन और डब्ल्यू.आई.एस.ई. कार्यक्रम के वैज्ञानिक बिल डाँची को बताने दौड़ा। यह जान कर वे बहुत खुश हुए कि आखिर उनके ग्रुप ने सुपरनोवा के इस रहस्य को ढूँढ़ निकाला। फिर उन्होंने पूरी दुनिया को बताया कि अंतरिक्ष में हमारी पहुँच को बढ़ा देने वाली अनेक वेधशालाओं की मौजूदगी से हम इस सितारे की मौत के बारे में पूरी तरह सटीक जानकारी दे सकते हैं, हालाँकि हम ब्रह्मांड में हो रही इन घटनाओं से चकित हैं।

इसतरह 2000 साल पुराने सुपरनोवा का रहस्य अब रहस्य नहीं रहा था।

इस सफलता के बाद नियॉन पूरे 15 दिनों के रेस्ट के लिए अपने घर चला गया, अपनी कामयाबी सेलिब्रेट करने के लिए और अपने प्यारे बेटे के साथ खूब सारा खेल खेलने के लिए।

द्वारा जाकिर अली रजनीश
7 ए/55, वृंदावन योजना
रायबरेली रोड
लखनऊ-226029

◆ लघु कथाएँ ◆

अमित कुमार

फिलेंथ्रॉपी

दौड़ते-दौड़ते रूक कर उसने लंबी साँस ली फिर इत्मीनान से पीछे मुड़कर दूर तक के नजारों का आनंद लेने लगा। यह सड़क का घुमावदार हिस्सा था और थोड़ी ऊँचाई पर भी था जहाँ से दूर तक का नजारा मिलता था। दूर-दूर तक कोई नहीं था। वह कुछ कदम आगे बढ़ाकर फिर रूक गया। सामने उसका बड़े अहाते वाला मकान था। एक बार अपने बड़े अहाते वाले मकान को फिर सामने के शहर को निहारने के बाद गर्व और घमंड की मुस्कान उसके चेहरे पर थिरक उठी। पिछले दस वर्षों से लगभग रोज ही का उसका जॉगिंग का यह रूटीन था।

पर एक दिन जब यही सब उसके सपने में आया तो नींद खुलने के बाद वह सुबक-सुबक कर रोने लगा। वह अस्पताल के बेड पर था पिछले बीस दिनों से एकदम असहाय और अकेला। 'बीमारी अब लाइलाज है, कोई भी दवा काम नहीं कर रही है अब बस इंतजार ही किया जा सकता है।' चिकित्सकों के ऐसा कहने पर सारे अपने धीरे-धीरे अपनी नियमित दिनचर्या में व्यस्त हो गये। बस वह चिकित्सकों और अस्पताल के भरोसे नौकरों के साथ रह गया।

चमत्कार होते हैं और मानव शरीर, मानव मन, मानव सोच पर तो सबसे ज्यादा चमत्कार होते हैं। वह अगले 3 दिनों में बहुत हद तक ठीक हो गया। जितना ठीक हुआ उससे कहीं ज्यादा एकदम स्वस्थ होने की संभावना बढ़ गयी क्योंकि अब सभी दवाओं ने उन पर काम करना शुरू कर दिया था।

लंबे स्वास्थ्य लाभ के बाद काम पर लौट कर उसने नये उत्साह से शुरूआत की। पर अब उसका रूटीन एकदम बदल गया था।

उसने अपने अब तक की जमा पूँजी से शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में शोध हेतु एक फाउंडेशन बनाया। शिक्षा एवं स्वास्थ्य को हर जरूरतमंद तक निःशुल्क पहुँचाना फाउंडेशन का उद्देश्य था। कंपनी के लाभ का एक चौथाई धन तथा उसके काम का आधा समय फाउंडेशन को मिले उसने ऐसी व्यवस्था की। मरने तक वह इसी रूटीन पर कायम था।

लुटेरे

सेठ सुबह-सुबह महाराज के आश्रम पहुँच गया। सेठ पर महाराज की विशेष कृपा रहती है। वर्ष में दो बार महाराज जी का प्रवचन सेठ अपने घर पर भव्य तरीके से कराता था। आश्रम दस एकड़ में फैला था। पैर छूते ही महाराज जी ने मुस्कराते हुए आशीर्वाद देते हुए आसन के पास संगमरमरी फर्श पर बैठने का इशारा किया। स्वयं ध्यानमग्न हो गए और ध्यान से वापस आने पर बोले- 'आपको इन दिनों थोड़ी सावधानी की आवश्यकता है।'

सेठ के माथे पर चिंता की लकीरें बन गयी। 'कैसी सावधानी प्रभु।'

'चिंतित न हो मैं संभाल लूँगा।'

इस कथन से सेठ की चिंता कम हो गई। महाराज जी कृपा है, इस आत्मविश्वास से वह भयमुक्त हो गया। थोड़ी देर बैठकर सेठ जाने के लिए उठा, महाराज जी के चरण छुये तो महाराज जी बोले- 'आश्रम के चारों ओर की दीवार ऊँची करानी है, कैसा रहेगा।'

'जी प्रभु एकदम उचित, इससे आश्रम की सुरक्षा बढ़ जाएगी।'

'किसी से कहा नहीं, किसी और से कहने की इच्छा ही नहीं हुई। आप का ही स्मरण हो आया।'

'अहो भाग्य हमारे।' कहकर सेठ ने ड्राइवर से गाड़ी में रखा चेकबुक मँगाया, दो लाख का चेक काटकर महाराज जी के चरणों में अर्पित किया।

आश्रम से निकलने के बाद नदी के कछार में बोयी गयीं ताजी-हरी सब्जियों को बेचने के लिए सड़क किनारे बैठे किसानों को देखकर सेठ ने गाड़ी रूकवायी। टहल कर मुआयना किया। एक किसान के पास रूक कर तरोई छाँटने लगे। 'कैसे दिया।'

'बीस रुपया किलो।'

'लूट है क्या, दस का भाव लगाकर चार किलो तौल दे।'

प्रभारी/राजभाषा
भारतीय खाद्य निगम, गोरखपुर
संपर्कः 9532659184

◆ लघु कथाएँ ◆

अनीता अग्रवाल

बोझ

रास्ते भर बच्चा भिन्न-भिन्न दृश्यों को देखकर, चीजों को देखकर तरह-तरह के सवाल करता, पर वृद्ध चुप। लगातार बोलने पर वृद्ध को खीझ हो रही थी पर बच्चा खुश था, कहता-हँसता। वृद्ध की प्रतिक्रिया न पाकर बच्चे ने पूछा- 'दादाजी आप हँसते क्यों नहीं?'

बूढ़े ने कहा- 'बेटा, बूढ़े लोग हँसते नहीं है।'

'दादाजी आप तो कहते थे, झूठ बोलना पाप है, पर आप भी तो झूठ बोलते हैं। उस दिन मैं पापा के साथ गाड़ी से पार्क में घूमने गया था, तो मैंने बहुत सारे बूढ़ों को जोर-जोर से हँसते देखा था।'

'क्या तुम सच बोल रहे हो?'

'दादाजी! मैं बिल्कुल सच बोल रहा हूँ।'

वृद्ध ने सोचा- 'काश! मैं भी उनमें से एक हो सकता।'

दूरी

अजीब दृश्य था। बेटा अपने पिता की गोद में लपक कर बैठ जाता है और पिता उसे अपने सीने में छुपाकर आँखों से निकलते सैलाब को छिपाने का प्रयास करता है, बच्चा पिता से पूछता है- 'पापा! आप ने इतनी दूर घर क्यों ले लिया?'

'बेटा! मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया। तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?'

'पापा! मैं आपके पास आना चाहता हूँ। मुझे आपकी बहुत याद आती है, लेकिन मम्मी इतनी दूर अकेले मुझे लेकर जा नहीं पाती, इसलिए मैं आपको मिल नहीं पाया।'

पिता बच्चे का मुँह देखता रह जाता है। उसे कोई जवाब नहीं सूझा। परिवार न्यायालय से निकलते सोचता है-

काश! मेरी पत्नी बच्चे की भावना को महसूस कर सकती।

जिम्मेदारी

एक दिन एक बुजुर्ग अपने बाग में सैर कर रहा था, चारों तरफ देखते-घूमते उसकी नजर अपने बाग के आम पर पड़ी। उसने सोचा मेरे बाग में इतने ज्यादा आम के पेड़ हैं। उसमें इतनी अच्छी वेराइटी के ढेर सारे आम लगे हुए हैं। यदि मेरे पिताजी ने ये बगीचा न लगवाया होता तो आज मेरे बच्चों को इतने अच्छे फल खाने को न मिलते। इसलिए मैं भी कोई ऐसा काम करुँ, जो आने वाली पीढ़ियों को ये सुख मिले और मुझे याद करे।

रात बिस्तर पर लेटे हुए सोचता रहा। सोचते-सोचते नींद आ गई। सुबह अपने बेटों को पास बुलाकर राय विचार करने की बात याद आई। सभी को पास बैठाकर अपने दिल की बात कही, सब चुप रहे। पिता ने कहा- 'मैं चाहता हूँ, तुम सबके लिए एक अत्यंत सुख-सुबिधा से युक्त अच्छा-बड़ा घर बनवा दूँ, जिसमें तुमलोग अपने-अपने परिवार के साथ खुशी से रहो। तुम्हारे बच्चे भी बड़े होकर याद तो करेंगे कि दादाजी ने हमारे लिए ये घर बनवाया था।'

थोड़ी देर तक सब खामोश रहे। फिर बड़े बेटे की आवाज आयी- 'आप जैसा समझिए, कर लीजिए ये तो आपकी जिम्मेदारी है।'

जरूरत

वह जल्दी-जल्दी चलकर पहुँचने को थी, तभी अचानक उसे याद आया कि वह घर में ताला बंद करना भूल गई है, दिमाग पर फिर से जोर डाला। वास्तव में, घर खुला छोड़ आई है वह पर अब क्या करे? अब तो लौट भी नहीं सकती। देर जो हो रही है वैसे हर रोज मालकिन जल्दी आने की हिदायत देती है, देर हो गई तो नाराजगी बढ़ जाएगी।

पहुँचकर कुंडी खटकाती है, डर है दरवाजा खुलते ही फटकार सुनने को न मिले। दबे पाँव सहमी-सी जाकर बर्तन माँजने लगती है। पूरा जोर लगाकर माँजने के बाद भी उसे जैसे भरोसा नहीं। वह धोकर देखती है फिर रगड़ती है। एक के बाद एक सब साफ होते गए। अब बारी है, तवे की। जिस पर मालकिन रोटी सेंकती है। इसको तो कुछ ज्यादा ही साफ करना होगा। एक बार फिर पूरे मनोयोग से रगड़कर सफेद करने की जुगत में, शरीर का सारा बल लगा देती है।

मेरा वहाँ आकर खड़े हो जाना- उसे पता भी नहीं लगा। उसका सारा ध्यान उस तवे को सफेद बना देने पर था। और मैं सोचती रहीं-इतना ध्यान देकर तो शायद उसने अपने शरीर को भी नहीं धोया, साफ किया होगा। शायद उसे फुर्सत ही न मिली होगी या उसकी जरूरत नहीं समझी।

द्वारा किलकारी चाइल्ड केयर
कैंट चौराहा, गोरखपुर

◆ व्यंग्य ◆

वसंत का विदेशी कनेक्शन

रण विजय सिंह

वसंत पंचमी को बीते एक महीने से अधिक हो गया है। अर्थात निर्धारित दो महीने में से वसंत की आधी से अधिक अवधि बीत चुकी है। मैं तो चाहता हूँ कि वर्ष के बारह महीने में से ग्यारह में वसंत रहे पर मेरे चाहने से क्या होता है? यहाँ तो राजा-प्रजा सभी का बराबर का हिस्सा है। दो-दो महीने। यह राजतंत्र में समाजवादी व्यवस्था है। वसंत, ऋतुराज है। ऐसा तो प्रजातंत्र में भी नहीं होता है। राजा से बचा-खुचा ही प्रजा के हिस्से में आता है। आज से पच्चीस वर्ष पूर्व यह हिस्सा तत्कालीन राजा के अनुसार पंद्रह प्रतिशत था। आज पता नहीं कितना है? विदेशों में भी स्थिति इससे अच्छी नहीं है। हमारे पंद्रह प्रतिशत के काल में रोमानिया इत्यादि में यही स्थिति थी।

वसंत मुझे पसंद है इसलिए उसका अधिक हिस्सा चाहता हूँ। अन्य लोगों को भी अच्छा लगता है। इसलिए जनता की पसंद को देखते हुए इसे अन्य ऋतुओं से अधिक समय मिलना ही चाहिए। इस समय सब जगह फूल ही फूल दिख रहे हैं। पैंजी, कैलेंडुला, पिटूनिया, कॉसमस, सायनेरिया, बरबीना आदि ढलान पर हैं। जाफरी (छोटे गेंदे), डहेलिया और मेरीगोल्ड (बड़े गेंदे) चरम पर हैं। स्वीट पी, कार्न फ्लावर, फ्लाक्स, गजेनिया, डेजी और पॉपी के पौधे सूख रहे हैं। वे सबसे पहले फूले थे। गुलाब, सदाबहार है। इस समय फूलों से लदा है।

इन फूलों का देखना अच्छा लगता है। पर न जाने क्यों इनसे अपनेपन की अनुभूति नहीं होती है। सभी चटख रंग के हैं किंतु गंध किसी में नहीं है। देशी गुलाबों से थोड़ी आत्मीयता लगती है। उनमें गंध भी है। घर के कोने पर यदि पारिजात न लगा होता तो हजारों फूलों के होते हुए भी मैं सुगंध के लिए तरसता। बौर से लदे आम के चार छोटे पेड़ों ने भी भीनी सुगंध बिखेरने का दायित्व अपने कोमल कंधे पर उठा रखा है।

कालिदास के 'ऋतुसंहारम्' के वसंत सर्ग के फूलों की सूची देखता हूँ- आम्र, कमल, अशोक, चमेली, कुरबक, पलाश, कनैल और शुभ्रकंद। ये सभी किसी न किसी काम आते हैं। खाने, पूजा, सूंघने, शृंगार या उपचार के। पर अब इन्हें विस्थापित किया जा चुका है- पहले वर्णित विदेशी फूलों द्वारा! वसंत पूरी तरह से विदेशी हो गया है। क्यारियों में केवल विदेशी फूल ही रोपे जा रहे हैं। उन्हें ही खाद-पानी मिल रहा है। देशी फूल अपनी चिंता खुद करें। गेंदा देशी होते हुए भी विदेशी हो चुका है।

वसंत का सर्वश्रेष्ठ समय होली है। आज से कुछ वर्षों पहले पुरानी पीतल की पिचकारी को वसंत आने से पहले ठीक करा लिया जाता था। वसंत पंचमी से होली तक- पूरे चालीस दिन तक टेसू के फूलों का रंग खेलने के बाद इसे फिर अगले साल के लिये सुरक्षित रख दिया जाता था। अब ये या तो कबाड़ी के यहाँ पहुँच चुकी हैं या कूड़े में। कहीं दिखती नहीं । चमकीली, यूज एंड थ्रो वाली चीनी पिचकारियाँ आ गई हैं। एक दिन रंग खेलो और फेंक दो। भूल जाओ कि कहीं रंग भी था। कहीं पिचकारी थी। पहले देशी पिचकारी के घर में उपस्थिति से वर्ष भर घर और जीवन में रंग रहने का एहसास होता था। अब वह चीनी पिचकारी बन गया है। एक दिन की औपचारिकता के बाद फिर नहीं दिखता।

वसंत का विदेशी कनेक्शन पूरी तरह हावी है। विदेशी फूल, विदेशी पिचकारी और विदेशी रंग। घरों पार्कों में इन्हीं फूलों से वसंत बगरता है। किसी काम लायक न होते हुए भी लोग उन्हें ही खाद-पानी दे रहे हैं। इस अपमान पर टेसू तो टेसुए बहा ही रहा है भारतीय संस्कृति की भी स्थिति इससे कुछ बेहतर नहीं है।

इस प्रजातंत्र से तो वसंत का राजतंत्र ही ठीक है सभी बराबर तो हों देशी का हिस्सा कम से कम विदेशी के बराबर तो हो।

पूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 7839057367

◆ ग़ज़लें ◆

सुशील 'साहिल'

एक

ये मंज़र देखकर सब लोग थे हैरान कश्ती में
कि कैसे क़ैद होकर रह गया तूफ़ान कश्ती में

ग़मों के बोझ को अपने सफ़र से दूर ही रखना
नहीं अच्छा है अब ज़्यादा सरो सामान कश्ती में
निगाहें जब भी तेरे हुस्न के दरिया पे जाती हैं
तो डगमग करने लगता है मेरा ईमान कश्ती में

लबे साहिल को बढ़ती जा रही थी जब मेरी कश्ती
किसी ने छेद कर डाला इसी दौरान कश्ती में
उमड़ते दरिया की तुगयानी मेरा क्या बिगाड़ेगी?
खुशा किस्मत कि मेरे साथ हैं भगवान कश्ती में

दो

वो जिसको मालोजर पैसा बहुत है
हक़ीक़त में वही रोता बहुत है

यकीं करना ज़रा मुश्किल है तुझपे
तेरा तर्ज़े अदा मीठा बहुत है

वो पहली आरी की ज़द में रहेगा
शजर जो बाग़ में सीधा बहुत है

उसे तो साफगोई की है आदत
बगरना आदमी अच्छा बहुत है

मुबारक हो तुम्हें उरियाँ लबादा
तुम्हारा मर्तबा ऊँचा बहुत है

वो कहता है 'तुम्हें हम देख लेंगे'
हमारे पास भी रस्ता बहुत है

कभी तू ने हमें अपना कहा था
हमारे वास्ते इतना बहुत है

तीन

पिता के हाथ में पहली कमाई दे नहीं पाया
कभी बीमार माँ को मैं दवाई दे नहीं पाया

लियाकत औ मशक्कत से जो आगे की तरफ निकला
मेरा कमज़र्फ़ दिल उसको बधाई दे नहीं पाया

तेरी आँखों ने चाहा था फ़कत मुझसे नया चश्मा
अभी रोता हूँ कि तुझको ए माई, दे नहीं पाया

सरकती उंगलियाँ मेरा बदन छूने को थीं लेकिन
मैं तेरे हाथ में अपनी कलाई दे नहीं पाया

तरक्की के लिए पैग़ाम भी आया मेरी जानिब
बहुत सोचा, पसीने की कमाई दे नहीं पाया

चार

ये जो मौसम सुहाना हो गया है
मेरा दिल शायराना हो गया है

अभी इसको मुहब्बत क्या कहें हम?
ज़रा सा आना-जाना हो गया है

मेरी आँखों में बीनाई है कम या
तेरा चेहरा पुराना हो गया है?

गुलों पे भौंरे डोरे डालते थे
पर अब उल्टा ज़माना हो गया है

मुझे करनी पड़ी फूलों की तारीफ
तुझे देखे ज़माना हो गया है

गुनाहों से हुआ 'साहिल' गुरेज़ाँ
कि अब गंगा नहाना हो गया है

सी. 11/22
ऊर्जा नगर कालोनी, महागामा
जिला-गोड्डा-814154(झारखंड)
संपर्क: 09955379103

**मैं फ़िज़ा की मुट्ठियों में कैद तनहा लफ्ज हूँ,
अपने होंठों पर सजा ले दास्तां बन जाऊँगा।**

◆ कविताएँ ◆

बाँके बिहारी 'विकल'

तुम नदी सी

नदी बहती ही नहीं,
सहती भी है वर्षा, शीत, घाम!
और कहती है-
बहने में भी है एक सुख एक आरंभ
जब कभी शीत ऋतु में
सोती है नदी-
कुहरे की चादर तान लेती है।
सूरज भी नहीं जगा पाता
उसे अलस्सुबह!
लगती है धुँआ धुँआ,
उसकी समूची देह।
क्या आग तापती है नदी?
क्या आग हो जाती है नदी रात में?
नदी में पानी ही नहीं होता,
आग भी होती है।
आग और पानी दोनों
साथ लेकर बहती है नदी।
तुमने नदी का पानी
या पानी की नदी ही देखा है।
यदि देखना है
आग और पानी दोनों
नदी में साथ-साथ
या कि फिर आग की ही नदी
या नदी में आग ही आग-
तो किसी दिन फुर्सत से आना
मैं दिखा दूँगा तुम्हें-
नदी की आग
या नदी में आग ही आग।
तुम्हें अच्छा लगेगा यह देखना
आखिर तुम भी तो हो
आग की एक नदी।
क्योंकि तुम्हारे भीतर भी आग है
और नदी बनते तो तुम्हें देखा ही है बार-बार!
यह और बात है,
जब बनती हो तुम नदी
मैं पहाड़ बन जाता हूँ
तुम घेरने लगती हो
धीरे धीरे चारों ओर से
और मैं ऐसा होते
देखता रहता हूँ।
तुम बन जाती हो आग, आग की नदी
धीरे धीरे और मैं जंगल बन
खामोश हो जाता हूँ।
पर ऐसा होता नहीं,
जलने लगता है खामोश जंगल!
यह आग अब भी जल रही है,
सुलग रहा है खामोशी का जंगल
जबकि नदी रास्ता बदल कर
किसी दूर देश जा चुकी है,
कुहरे की चादर फेंक कर!

हिरन वन

वन के जिस क्षेत्र में
रहते हैं हिरन,
सुस्ताते हैं, नींद में सपने देखते हैं
या व्यस्त हो जाते हैं,
प्रजनन, पालन पोषण में,
उसी को कहते हैं लोग
हिरन-वन!
शिकारियों का शौक
ये हिरन, वन का शृंगार है
वन इनके साथ खेलता है, दौड़ता है
हँसता है।
रात में हिरन शावक
माँ की छाती से लिपट सोते हैं
बिल्कुल हमारे बच्चों की तरह।
उनकी आँखों के सपने भी होते हैं
हमारे बच्चों की आँखों में
उतरने वाले सपनों की तरह।
वे भी चौंक उठते हैं,
और कस कर चिपट जाते हैं माँ से
जब देखते हैं कोई खौफनाक सपना।
उनके सपनों में आता है, एक शिकारी
जिसके हाथों में होती हैं- एक बंदूक।
बंदूक छोटी या बड़ी हो सकती है,

उसकी मारक क्षमता में भी हो सकता है, अंतर!
पर यह अंतर, मृग शावक नहीं जानते हैं।
वे केवल पहचानते हैं बंदूक।
जो चलती है, उनके वन में, मन में और स्वप्न में भी।
कभी हिरन वन में जाना
पर तुम्हारे हाथों में बंदूक न हो
तुम्हारे हाथों में वही रहे,
जो रहता है तुम्हारे अपने बच्चों के लिए
देखना! मृग शावक भागेंगे नहीं
तुम्हारे पास दौड़ कर आएँगे!
तुम उनकी पनीली आँखों में झाँकना!
तुम्हें अपना ही अक्स नज़र आएगा।

बारिश के बाद

बारिश के बाद
ऐसे निखर जाते हैं पेड़,
जैसे कोई बीमार
लौटा हो स्वास्थ्य लाभ कर
किसी हिल-स्टेशन से।
बारिश में भींगने के बजाय,
पहाड़ी ढलान पर बने
तुम्हारे दालान से
बारिश में भींगते
पेड़ों को निहारना
मुझे अच्छा लगता है।
हालाँकि दालान में
तुम्हारी स्मृतियों के अलावा
अगर कुछ शेष है तो
घाटियों तक पसरा
एक भयानक सूनापन ही है,
जो गीत बन कर गूँज उठता है
अंधेरी रातों में
किसी अनजान बंजारे की वंशी से
बारिश में भींग जाता है
बरामदे में फेंका हुआ
सुबह का अखबार!
डाकिया जो डाल गया था,
तुम्हारा वह पत्र,
मेरी कविताओं की कॉपी
तौलिया और टूथ-ब्रश
फिर भी मुझे अच्छी लगती है
यह पहाड़ों की बारिश!
क्योंकि इसमें नहा कर
निखर जाते हैं पेड़
जैसे निखर जाती थी तुम
मेरे स्नेह की बारिश में भींग कर!

अधिकारियों को हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कार योजना

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के निदेशानुसार क्षेत्रीय रेलों के विभागों तथा मंडलों/कारखानों के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अधिकारियों को हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) की उपर्युक्त योजना लागू है। कार्यालय से तात्पर्य उस कार्यालय से है जिसका स्थानीय मुख्य अधिकारी विभागाध्यक्ष अथवा कार्यालयाध्यक्ष घोषित किया गया हो। तदनुसार, **प्रत्येक विभाग दो पुरस्कार, एक हिंदी भाषी (जिसका घोषित निवास 'क' और 'ख' क्षेत्र हो) और एक गैर-हिंदी भाषी (जिसका घोषित निवास 'ग' क्षेत्र हो)** रेल अधिकारी को **2000-2000/- रुपये** का नकद पुरस्कार देने की व्यवस्था है।

इस संबंध में स्पष्ट किया जाता है कि गृह मंत्रालय की इस योजना में न्यूनतम शब्दों की सीमा निर्धारित है अर्थात् केवल वे अधिकारी इस पुरस्कार के पात्र होंगे जो वर्ष में कम से कम **20,000 (बीस हजार शब्द)** की डिक्टेशन देंगे। अहिंदीभाषी अधिकारियों के लिए यह मात्रा **10,000 (दस हजार शब्द)** प्रति वर्ष हैं। डिक्टेशनों से संबधित रिकार्ड प्रोफार्मा में रखा जाना आवश्यक है। इसके अलावा गृह मंत्रालय के आदेशानुसार संबधित अधिकारी द्वारा एक फोल्डर रखा जा सकता है, जिसमें **डिक्टेशन देने वाले अधिकारी का नाम, डिक्टेशन की तिथि, डिक्टेशन लेने वाले कर्मचारी का नाम अंकित हो तथा दिए गए डिक्टेशन की प्रतियाँ** रखी गयी हों।

(प्राधिकार: रेलवे बोर्ड के दिनांक 13.02.2014 का पत्रांक हिंदी-2014/प्र-7/4)

◆ गजलें ◆

सैयद मुहम्मद असलम

एक

मीरा-कबीर-तुलसी या रसखान हो कि सूर
इंसानियत से प्रेम सभी को रहा जरूर।

ऊँचे दरख्त पर हैं भले दिख रहे खजूर,
चढ़ना न आता हो तो न हरगिज चढ़ें हुजूर।

जिसके ख़याल में वो हुआ हर खुशी से दूर,
उसका ख़याल ग़ज़लों में रखता है बा-शऊर।

घायल है जिस नज़र से जिगर आपका हुजूर,
सुनते हैं उस नज़र की शिकायत हैं दूर-दूर।

अल्लाह सब्र करने का देता है फल ज़रूर,
होगा घमंड जल्द घमंडी का चूर-चूर।

दो

लोग दुनिया के सुधारे जाएँगे,
या सभी बेमौत मारे जाएँगे।

फिर जमीं पर काले दिल के रहनुमां
आसमानों से उतारे जाएँगे।

गाँव सारे शहर आए हैं तो क्या,
चोट खा-खाकर बिचारे जाएँगे।

कौन कहता है वतन के नाखुदा,
कश्तियाँ लेकर किनारे जाएँगे।

भाग्य जाने शीश महलों के यहाँ,
पत्थरों से कब सँवारे जाएँगे।

तीन

चमक उठेगा मन दर्पण खुशी से
कभी झूमेगा सबका मन खुशी से

वतन को चाहिए कुछ वीर ऐसे
निछावर जो करें जीवन खुशी से

सिसकती ही रही निर्धन की बेटी
नहीं खनका कभी कंगन खुशी से

तुम्हारी याद है मीठा व्यंजन-
जो था खाली, भरा बर्तन खुशी से

कहाँ हो तुम छुपे ऋतुराज आओ
महक उठा है चंदन-वन खुशी से

झूठ है मँझ-धार तो पतवार सच
बोलना होता नहीं बेकार, सच।

चार

झूठ है नफरत, बनावट बेहिसी-
सादगी, एखलाक, नर्मी, प्यार सच।

सच को कहता 'सरासर झूठ है'
मानता है झूठ को संसार सच।

दुर्जनों का 'पेट-पर्दा' झूठ है
सज्जनों के हाथ का हथियार सच।

दे रहा है सुख जेहन को झूठ अब,
चुभ रहा है दिल में जैसे खार सच।

वक्त आते ही जुबाँ पे आएगा-
कौन रख पाया छुपा कर यार, सच?

कार्यालय अधीक्षक
सांख्यिकी कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9598951551

◆ कविताएँ ◆

वहीं तक लिखा जाएगा, जहाँ तक पढ़ाएगा

तारकेश्वर शर्मा 'विकास'

एक

लिखूँगा तो लिखाएगा
सिखूँगा तो सिखाएगा
पढ़ूँगा तो पढाएगा
आखिर कौन?
होता कौन?...
कौन बता पाएगा?
विधाता का लेख
रावणी-भेख
दर्द की गीता
रामायण की सीता
भरत- मिलाप
अंतस्- संताप
आदि- अनंत का
अंतरार्थ/ बोधगम्य भावार्थ
और भी बहुत कुछ
जैसे -
कंस मामा द्वारा
भांजा- वध
हद ही हद
कविताई में गिरते क्यों?
शब्द भदा- भद
गौतम ऋषि का श्राप
अहल्या का पत्थर हो जाना
तुक- बेतुक
बात- बेबात
रचना रचने में
छाती पर मूँग दलना/दलवाना
तुकबंदी में हदबंदी में/ मुक्त छंद में
कम- जियादा/ सबकुछ/ बहुत कुछ
हथेली-भर जगह में गीत-ग़ज़ल
दुखम्- सुखम् का लेखा- जोखा
कुछ सच्चा, कुछ झूठा
बाकी सब धोखा ही धोखा।

दो

लिखा नहीं जाएगा
तो पढ़ा भी नहीं जाएगा
हू-ब-हू ध्वनियों में लिप्यंत्रित कर
दुनिया की किसी भी लिपि में
दादी की बनाई खीर का असली स्वाद
जो हुआ था तैयार
सिर्फ उसके इकलौते पोते की
जीभ पर होने को सवार
ताकि पोता बार-बार कहे-
'दादी खी...कं...डा वाली
मीथ बाऽ, बाकी ठीक बाऽ
मत दीहे दादी बाबा के कटोरी
कहिए खी...तीत बाऽ'
इसी तरह-
माँ की बनाई फुलकी रोटियों से
आती मंद-मंद भूख मिटाती गंध
पिछवाड़े में सोनवा-फेंकुआ की
कामुक आवाज
और बाद में मुहल्ला-भर में शोर
कि भाग गईल सोनवा
फेंकुआ के साथ ओही रात...
...और बहुत कुछ।
और बहुत बाद में-
खुद का इस दुनिया में
न होने की आपबीती
आज से बरसों पहले
जागे स्वप्न पर
गिरे ओले का दु:ख
क्या लिखा पाएगा?
सांगोपांग
उसी हवा में
उसी लय में
ज्यों-का-त्यों।

क्वार्टर सं. डब्ल्यू-36, यूनिट-2
न्यू ट्रैफिक रेलवे कालोनी, इंदा
इंदा खड़गपुर-721305 (पं. बंगाल)
संपर्क: 09933615074

◆ ग़ज़लें ◆

वीरेंद्र हमदम

(1)

जोड़ लो संबंध अपने, व्याकरण ओढ़े हुए
हर हवा चलने लगी वातावरण ओढ़े हुए

ध्वस्त करने के लिए बस एक झोंका है बहुत
रेत की दीवार है जो आचरण ओढ़े हुए

खेलती रहती है होठों पर हँसी हर वक़्त जो
जी रही गंभीरता सरलीकरण ओढ़े हुए

वो निरुत्तर हो के पत्तों की तरह उड़ने लगा
प्रश्न की आँधी उठी जब उद्धरण ओढ़े हुए

राम के वनवास की फिर से व्यवस्था हो गयी
देखता हूँ फिर हिरन, सीताहरण ओढ़े हुए

पेड़-पौधे भी हुए मजबूर जीने के लिए
एक शापित-ज़िंदगी पर्यावरण ओढ़े हुए

बर्फ़ के नीचे दबी अनुभूति की अभिव्यक्ति क्या
एक कुंठा खा गयी वर्गीकरण ओढ़े हुए

ज़िंदगी 'हमदम' महाभारत से कुछ कम नहीं
रोज़ का संघर्ष है जीवन-मरण ओढ़े हुए

(2)

हैं बेशक़ीमती हीरे सजे दुकानों में
मगर निकालने वाले दबे खदानों में

हमारे तोड़े हुए पत्थरों की क़ीमत को
वो आँकते हैं जो बैठे हैं सायबानों में

उदास चेहरे, बुझी आँख, टूटे दरवाज़े
मिलेगा इसके सिवा क्या ग़रीबख़ानों में

तमाम वारिसों के हाथ ख़ूँ में डूबे थे
लहू हमारा भी था उन गड़े ख़ज़ानों में

तुम्हारे राम को वनवास मिल न जाए कहीं
वो मंथरा है कहीं फूँक दे न कानों में

कहाँ है सच का मुहाफ़िज़ बचाए आके उसे
वो कटघरे में खड़ा है ग़लत बयानों में

तुम्हीं बताओ, तुम्हें दे दूँ कौन सा हिस्सा
लो बँट गया हूँ मैं अब तो हज़ार ख़ानों में

(3)

मेरे एकात्म का अद्वैत से संवाद होता है
किसी को क्या पता मुझमें जो अनहद-नाद होता है
निरंतर अपनी अंतश्चेतना को प्यार से सींचो
इसी की जड़ में जीवन-राग का आस्वाद होता है
नहीं पेड़ों में फल यूँ ही, सुमन हँसते नहीं यूँ ही
जहाँ के लोग हों निश्छल वहीं आह्लाद होता है
तू अपने सारे कामों से निबट कर अस्त हो जाए
तुझे क्या इल्म ऐ सूरज! जो उसके बाद होता है
नदी अक्सर ही तट को काटती रहती है लहरों से
मगर कटते किनारों का सदा प्रतिवाद होता है
हरापन रहते इसको सींच लो तो काम बन जाए
उजड़ जाने पे कोई दिल कहाँ आबाद होता है
महल के सारे वारिस अपनी-अपनी ईंट गिनते हैं
महज़ यह ऊपरी ही तौर पर प्रासाद होता है
जो सच पूछो तो उसमें कोई मौलिकता नहीं होती
परिष्कृत चेहरे पर अंकित सदा अनुवाद होता है
समंदर चाँद की चाहत में आपा खो दिया करता
कहो तुम ज्वार-भाटा, मैं कहूँ उन्माद होता है
खुद अपनी आग में जल जाए 'हमदम' होलिका दुख की
जिसे कुछ भी न आये आँच वो प्रहलाद होता है

(4)

भरी हो तकिये में बस कतरन, ठेंगे से
ऊपर ही ऊपर अपनापन, ठेंगे से
एक तुम्हीं तो नहीं थे मेरी झोली में
हार गये जो तुम एलेक्शन, ठेंगे से
अच्छा है कुछ बोझ बढ़े, डूबे कश्ती
दुश्मन से मिल जाए दुश्मन, ठेंगे से
राजनीति तो राज-पाट की चावी है
जनता कहे इसे उत्पीड़न, ठेंगे से
बिना नानवेज नेता जी का चलता नहीं
जनता पीती रहे पसावन, ठेंगे से
कई जगह से हमको आफ़र आया है
टूट गया तुझसे गठबंधन, ठेंगे से
टेंट से अपनी जाना ही क्या, चिंता क्या
फटा रहे लोगों का दामन, ठेंगे से

414, इस्माईलपुर, गोरखपुर
संपर्क: 9451186191

◆ कविताएँ ◆

तीन शब्द चित्र

यशवीर सिंह

नववर्ष

कितनी ही सुधियों की राधायें रूठ गईं
अनव्याही राहों में आशायें छूट गईं
काँटों सा चुभता है रह रह स्पर्श
बीत गया जीवन का और एक वर्ष।

पंछी सी तिथियाँ सब उड़ती ही चली गईं
पखवारे, मासों के वृक्षों पर चली गईं
मधुकर सा मधुरस ले आया नव वर्ष
बीत गया जीवन का और एक वर्ष।

आओ अब आगत को बाँहों में बाँधें हम
मिल-जुलकर खुशियों की भेंजे सौगाते हम
आमंत्रित करता है हम को नव वर्ष
बीत गया जीवन का और एक वर्ष।

फागुन

बौर लगे तो मन बौराये
उमगित मेघ घटा नभ छाये
यौवन की बगिया में आये
पाहुन नये-नये।

पतियाती कोंपल हैं आँखें
दुल्हन बन बैठी हैं शाखें
बेर-बेर कोयल पिउ झाँके
बरबस बाँह गहे।

फागुन माह लगे तन आगी
मन घूमे जैसे वैरागी
हिय की बात अधर पर आ के
जाते नहीं कहे।

बसंत

मस्त हिप्पियों सा चला झूमता हुआ
बेखबर डगर-डगर में घूमता हुआ
बेशुमार है खुमार आँख में लिए
बेहिसाब ज्यों शराब है पिये हुए
डोलता इधर-उधर सा मन कुरंग है
द्वार पर खड़ा पुकारता बसंत है।

बदहवास हो रही है देह की फसल
रूप-रंग-गंध का है आईना सजल
बेनकाब हो रही गुलाब पाँखुड़ी
घंटियाँ बजा रहीं सुरम्य बाँसुरी
लिख रहा समय विहँस नवीन छंद है
द्वारा पर खड़ा पुकारता बसंत है।

देह-गेह पुष्प-बेलि हार से भरा
लग रही प्रकृति सजी-धजी है अप्सरा
दूर तक नदी-दुकूल फरफरा रहे
केश-राशि उर्मियों से थरथरा रहे
बह रहा मलय समीर मंद-मंद है
द्वारा पर खड़ा पुकारता बसंत है।

बक्शीपुर, गोरखपुर
संपर्क: 9455239774

◆ **कविताएँ** ◆

अनिल कुमार दत्ता

सुनो, चितेरे

फीके-धुंधले चित्र हो गये,
थे तुमने जो उकेरे।
रंग जिंदगी के फिर भरना,
तुम इनमें ओ चितेरे।

ओस चाटती हुई नदी हैं,
धूल फाँकती-सी है नाव।
सूख गईं प्यासी धाराएँ
अब विस्मृत-से हुए बहाव।
छान रहे बालू सब बगुले,
मुरझाये, तट खड़े मछेरे...

स्वप्न दिये तुमने आँखों को,
तुम्हीं हौसलों को पर देना
सहमीं, सिमटीं, बेबस, गूंगी
ख्वाहिशों को भी स्वर देना।
चित्रपटल पर बहुत मिलेंगे
बेबसियों के नये बखेड़े...

लाख सितारों से भर लेना
आँगन तुम आकाश का।
कहीं, तथापि, जलाये रखना
एक दीया विश्वास का।
यह मौसम है, न जाने कब
घिर आयें घनघोर अंधेरे...

तब गीत श्रद्धा के गाता हूँ

संदेहों के चुल्हे में,
और प्रश्नों की आँच पर
मैं तर्कों के तप्त तबे पर
पहले विश्वास पकाता हूँ
तब गीत श्रद्धा के गाता हूँ

क्या जाने कि पके-सा दिखता
यह भी कोई कच्चा घड़ा हो,
जिस पर किसी विवशता के वश
कोई पक्का रंग चढ़ा हो,
मेरे अश्कों से तर हो कर
यह भी कहीं ना ढह जाए
और मेरी आँखों का पानी
फिर यूँ ही न बह जाए
इसलिए भिगोने से पहले मैं
उसको ठोक बजाता हूँ...
तब गीत श्रद्धा के गाता हूँ...

अंधेरे की राह चल पड़े,
ना जाने क्यों कर हम आज
कर रहे दिग्भ्रमित हमें हैं,
ये आयातित रीति-रिवाज
जन्म-दिवस के शुभ अवसर पर,
दीप बुझा खुश हैं बेचारे
किंतु नहीं फूटेंगे अब ये,
स्वप्न भरे रंगीन गुब्बारे
इक रोटी या मालपुए पर,
उम्र के दीप जलाता हूँ...
तब गीत श्रद्धा के गाता हूँ...

जिंदगी

कभी छाँव है, कभी है धूप
एक पहेली, अबूझ स्वरूप
अनगिन रंग, संदर्भ तुम्हारे
'जिंदगी', तेरे कितने रूप!

कार्यालय अधीक्षक
विधि कार्यालय/ कार्मिक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
संपर्क: 9005092337

◆ कविता ◆

स्वर्णिम हिंदुस्तान

वेद प्रकाश वर्मा

रणचंडी को दे मुंडमाल कर में कराल स्वर में निनाद
माँ के सुहाग की रक्षा हित निज प्राण गँवाना होगा
भारत माँ की बलिबेदी पर फिर शीश चढ़ाना होगा।

इंसान जहाँ का राम बना बालक गौतम भगवान बना
इस वीर-प्रसूता माता का सम्मान बचाना होगा
ललनाओं के अरमानों की मुस्कान बचाना होगा।

जय मातृभूमि का नारा ले जनगण मन की जयकारा ले
इस विजयी विश्व तिरंगे का अपमान बचाना होगा
जम्मू-कश्मीर हिमालय का निज धाम बचाना होगा।

झोपड़ों महल चौबारों में समभाव जगा सद्भाव जगा
अब जाति-पाति और ऊँच-नीच का भेद मिटाना होगा
मंदिर-मस्जिद गुरुद्वारों में इंसान बसाना होगा।

ब्याकुल सीता के राम कहाँ हैं राधा के घनश्याम कहाँ
पुरुषोत्तम को इस धरती का भगवान बनाना होगा
मानस मंदिर में स्वर्णिम हिंदुस्तान सजाना होगा।

शबरी के बेर उपेक्षित हैं गोपियाँ हुई अनरक्षित हैं
हलधर किसान को अब फिर से बलराम बनाना होगा
खेतों खलिहानों नगरों को गुलजार बनाना होगा।

ब्याकुल वीणा क्यों बिलख रही कोयल क्यों कू कू कुहुक रही
बंशीधर को जय भारत की फिर तान सुनाना होगा
फिरकापरस्त इंसानों से संसार बचाना होगा।

बापू का सपना मिलजुल कर साकार बनाने की खातिर
आतंकवाद और देश-द्रोह का भूत भगाना होगा
इस धरती से जनमानस का संहार मिटाना होगा।

भूतपूर्व राजभाषा अधिकारी
180, जटेपुर उत्तरी (रामबाग)
गोरखपुर
संपर्क: 9454653892

◆ कविताएँ ◆

सुधीर कुमार 'चंदन'

वसंत बहारें

पीले-पीले पुष्प वसंत के
बाँट-बाँट गंध न नेक भी कम संत से
ठिठुरन के ठाठ धरे के धरे रह गये
लदने लगे दिन-रात शीत के अंत के।
फूली-फूली सरसों के फूले न समाये
कुदरत को कतई पीत वसन पहनाये
लो, फूल-फूल पे फ़िदा भौंरे इस कदर
छुवन को उनकी उतारू मन ललचाये।
कि कोमल कलियों की बात बन पायी है
फूले-फूले, फूल बन शान जतायी है
सुर-संगीत साधे, बौराये आम पे
कोयल 'कुहू-कुहू' कानों को भायी है।
खोले वसंत ने होली आगमन-द्वार
'चंदन' रंगों ही तो हैं जीवन-सार
तितलियाँ जोश से भर-भर, खुले-खुले दिल
फूलों से करें इश्क का पावन इज़हार।

जल का जलवा

कुदरत का बिना पैसे का अजब उपहार।
इसके दम पर दम-दम निर्भर सब संसार।।
जल से जीवन का बेहद गहरा नाता।
इस बिना तो वो मौत के हाथ धरा जाता।।
इसके बल वन-बाग हरित-शान इतराता।
पेड़-पौधों का हितकर तत्व, प्राण दाता।।
हरी घास बिछ-बिछ जाये चूमे चरण धरा।
फले-फूले फसलें जल जो पावन बिखरा।।
जल जीवन की पहली बहुत जरूरत खास।
कमी हो नेक, तो प्राणी इस बाबत उदास।।
जीवन से मौत तलक पल-पल बोलबाला।
नर करे अर्पित देवों को भी जल-प्याला।।
जल जो जरा जुदा हो, संसार सारा सून।
जल करो न गंदा, बढ़े 'हर्ष-पारा' दून।।
करे जगत-हित, करो न खर्च बेमतलब जल।
'चंदन' चाह चेतो अब, होगा सब मंगल।।

निजी सचिव
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर(समन्वय)
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर
संपर्क: 9997689075

नरसिंह बहादुर 'चंद

एक

एक द्रौपदी कई दु:शासन
सीता एक अनेक दशानन

दुष्ट दरिंदे दरबारी हैं
कपट भरे सारे अनुशासन

हँसने पर पाबंदी कायम
रोने पर होता निष्कासन

किसको जिम्मेदार कहें हम
नित्य हो रहे नये विभाजन

हयाहीन होते हठधर्मी
रोते द्वार, चीखते आँगन

पूजा घर के पतित पुजारी
अनाचार, व्यभिचार, कुशासन

नेताओं के पतित चेहरे
आती जनता, हिलता आसन

प्रजातंत्र अज्ञातवास में
'चंद' कौरवों का अभिवादन

दो

दहशतजदा हैं बस्तियाँ दुष्ट दरबारी हुए
सदाचारी, सभ्य, सज्जन आज घरबारी हुए

सहमा हुआ है आमजन मुखर अपराधी यहाँ
संबंध व्यवसायी, संस्कार सरकारी हुए

वासना, वैभव एवं विलासिता की होड़ में
पश्चिमी अंधानुकरण, निर्लज्ज नर-नारी हुए

हाथ में हैवान के ज्यों कौम की तकदीर है-
लूटते हैं लाज, अब दरबान व्यभिचारी हुए

रहने लगे हैं दूर अब तो बस्तियों से जानवर
डँसने लगे हैं आज ये इंसान विषधारी हुए

मेहरबानी की सनद देने लगे हैं माफिया
'चंद' झूठे भ्रष्ट, पापी सत्य पर भारी हुए

33, रीड्स धर्मशाला
गोरखपुर-273001
संपर्क: 9335635326

आदर्श श्रीवास्तव

एक

देखिए तो सही आज क्या हो गया
वह मुझे छोड़कर ग़ैर का हो गया

इस कदर रंग बदला किसी ने यहाँ
ख़ुदा जाने क्या माजरा हो गया!

चाहता था सुकूँ ज़िंदगी से मगर-
मुझे छोड़, उसको अता हो गया

अब ज़माने की बातें न हमसे करो
आज कुछ और मैं दूसरा हो गया

खूने-दिल कुछ निचोड़ा गया इस तरह-
जख़्म फिर आज दिल का हरा हो गया

कुछ कमी मेरे भीतर तो होगी दिखी
बावफ़ा था जो, वह बेवफ़ा हो गया

ठोकरें दीं जमाने ने ऐसी मुझे-
हर ज़हर मेरी ख़ातिर दवा हो गया

तारीफ अशआर की सुनके इस बज़्म में
फिर अता एक मिसरा नया हो गया

रंग-रोगन मैं कितना करुँ उम्र भर-
जो न होना था वो हादसा हो गया

दो

टूट जाते हैं सपने मेरे आजकल-
क्यों सजाता हूँ सपने किसी के लिए
सायास-अनायास कोई ज्योतिपुंज
क्यों चमकता है मन में तुम्हारे लिए
भावों की दुनिया न अर्थों पे टिकती
भला क्या है आँसू किसी के लिए
तुम्हारे निकट कोई पल क्या गुजरा
हो जिसमें इशारा हमारे लिए
हरे-नीले-पीले से रंगों की दुनिया
बसाते हो क्यों तुम किसी के लिए
तुम्हारे नयन- कोर में सिमटा आँसू
एक हल्का-सा संकेत मेरे लिए

सत्या निकेत, सूरजकुंड
गोरखपुर-273015
संपर्क: 9532947807

◆ कविताएँ ◆

राज किशोर राजन

सिलसिला

हुआ हूँ शहरी आया था गाँव से
बतियाया हूँ, बहुत कवि, लेखक, चित्रकार से
रहा हूँ, सभ्य लोगों के समाज में
घूमा हूँ वेश्याओं के साथ भी
अब जा कर खड़ा हूँ शहीद मीनार पर
और आँय-बाँय-साँय चिल्ला रहा हूँ लगातार
कि गलत समय में, गलत जगह में पैदा हो गया हूँ मैं

उस विचित्र आदमी के प्रलाप पर मजमा लगा था
जो कूदते, बैठते, नाचते, गाते
एक से बढ़कर एक सूक्ति वाक्य बोल रहा था
शहीद मीनार के नीचे

जानकार लोगों का कहना था
कि यह कभी उभरता हुआ कवि था शहर का
दिन भर लिखता-पढ़ता, गुनगुनाता कविताएँ, गीत
ट्यूशन पढ़ाते गुजारता था शाम
और हर रात किसी गुरुद्वारे, किसी मंदिर-मस्जिद में
घूमता रहता पेट में कुछ अन्न डालने के लिए

झोला भर कागज ले विचरता रहता
शहर के अलग-अलग इलाकों में
तरह-तरह के लोगों से मिल उन्हें समझाता रहता
अपने समय की बदरंग हकीकत

सन्न रह जाता हूँ, बैठ जाता जमीन पर
कि कहीं गश खाकर गिर न पड़ूँ
माथे के ऊपर चक्कर लगाने लगते
विक्टोरिया मेमोरियल, चटर्जी इंटरनेशनल, टाटा सेंटर
की बड़ी-बड़ी इमारतें
वह दोस्त था मेरा, जिसने बताया था मुझे
कविता और महानगर कोलकाता के बारे में
उसी ने कोलकाता के बड़ाबाजार से शुरू कर
अनगिन बाजारों में घुमाया था
और फुटपाथ पर बैठा कर दिखाया था कि देखो
यहाँ लोग नहीं, सिर्फ चलते हैं पैर
देखो, ठीक से देखो, पैरों में नही होती आँखें
आँखें दिखती हैं सिर्फ बाजार में
बत्तियों के चकाचौंध से उसकी जाती रही थी आँखें
शोर से बहरे हो गए थे कान
सूख गई थी देह, भूख से

और आज इसके सामने खड़ा था मैं
और उस दिन से मैं भी, मैं नहीं था।

एक शहराता गाँव

यहाँ, वहाँ, जहाँ देखो नए बन रहे मकान
सज रही दुकान
अब कुछ भी कच्चा नहीं रहेगा
मिट्टी, खपरैल के मकान में कोई बच्चा नहीं रहेगा

बढ़ती ही जा रही चहल-पहल, रौनक
रिक्शावाला इत्र का फाहा खोंस
गुनगुना रहा है हिंदी फिल्म का गीत
बदल रही है लड़कियों के कपड़े और चेहरे की रंगत
लड़कों का कसरती बदन
झाँक रहा है बुशशर्ट के ऊपर

मुकुल की बूढ़ी दादी भी
अब पतोहु को डाँटती
टूटी-फूटी हिंदी में

नुक्कड़ पर चाय की दुकान में
चाउमिन, एगरोल खा रहे हैं लोग
टी.वी. पर देखते
इस हफ्ते रिलीज हुई मुंबईया फिल्म

कल ही गयी थी दुपट्टे को गले में फंदा बना
लछमिनिया की बेटी भी
इवनिंग शो देखने, नये बने सिनेमाघर में
लाल टी-शर्ट और डेनिम ब्लू जीन पहने
मनोहर के साथ

देशी मसालेदार दारू के साथ
अब बिकने लगा विदेशी भी

अब यहाँ भी आँखें आदमी को नहीं
पहचानेगी उसकी औकात को
अब यहाँ भी दाग बुरा नहीं
विज्ञापन की तरह
अच्छा लगने लगेगा।

ठौर

गली के नये बने मकान की छत पर
अकेले, विषादग्रस्त एक वृद्ध
आकाश में पंख फडफ़ड़ाते
पक्षियों की ओर टकटकी लगाये
जाने क्या सोचता
देखता रहता है

मकान के बगल में
अमरूद के पेड़ पर
पक आए हैं फल
उसका पत्ता-पत्ता झूमता, इतराता

कोई पक्षी ढूँढ़ लेगा
इस अमरूद को
पृथ्वी की ओर लौट

वृद्ध भी शायद, आकाश की ओर
ढूँढ़ लेगा एक टुकड़ा पृथ्वी।

दोष

तुमने कहा
बताओ अपना नाम?
मैंने कहा, कुछ भी कह लो

तुमने पूछा
हो कहाँ के तुम?
मैंने शहर की भीड़ भरी सड़क किनारे
चुटकी से धूल उड़ाते कहा
जहाँ तक जान लो तुम

तुमने पूछा
करते क्या हो?
मैं सुनाने लगा मीरा, सूर, कबीर को
बताने लगा
इस बार ठीक है धान और गन्ने की फसल
मेरे गाँव में
हुलस रहे हैं लोग
खेत-खलिहान में

तुम चौंक पड़े!
एक आदमी और उसकी दुनिया की
इतनी आसान परिभाषा
तुमने अब तक नहीं सुनी थी
और तुम बुरा मान गये

इसमें मेरा क्या दोष है!

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा)
पूर्व मध्य रेलवे, हाजीपुर
संपर्क 09771425667

विश्व है असि का? -नहीं, संकल्प का है।
हर प्रलय का कोण काया-कल्प का है,
फूल गिरते; शूल शिर ऊँचा लिए हैं,
रसों के अभिमान को नीरस किए हैं!
खून हो जाए न, तेरा देख, पानी,
मरण का त्योहार, जीवन की जवानी !!

'हिमकिरीटिनी' माखनलाल चतुर्वेदी

मुख्यालय

06.03.14 को अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री अरुणेंद्र कुमार द्वारा पूर्वोत्तर रेलवे को रेलमंत्री राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया।

महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल की अध्यक्षता में 23.12.13 को क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर लेखा विभाग, गोरखपुर द्वारा कार्यालय में किए जा रहे राजभाषा हिंदी के कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई।

10.03.14 को महाप्रबंधक श्री के. के. अटल की अध्यक्षता में मुख्यालय कला समिति द्वारा हिंदी नाटक 'अमली' का मंचन किया गया।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एच.के. अग्रवाल की अध्यक्षता में 18.12.13 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलेतर इकाइयों, प्रशिक्षण केंद्रों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एच.के. अग्रवाल की अध्यक्षता में 30.12.13 को 'संरक्षित एवं सुरक्षित परिचालन में राजभाषा का योगदान' और 26.02.14 को 'कैंसर: लक्षण एवं बचाव' विषयों पर तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

मुख्यालय के विद्युत विभाग द्वारा 31.12.13 को 'रेलगाड़ियों में आग से बचाव' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त इंजीनियरी, परिचालन एवं चिकित्सा विभाग एवं पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र में समीक्षा बैठकें आयोजित हुई। साथ ही सिगनल विभाग द्वारा 19.02.14 को समीक्षा बैठक एवं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती का अयोजन किया गया।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण संगठन की अध्यक्षता में 24.12.13 को विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, तकनीकी संगोष्ठी, विशेष हिंदी कार्यशाला एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। साथ ही 20.12.13 को हिंदी डिक्टेशन की कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र/गोरखपुर में 07.12.13 को 'ट्रेनों में एयर ब्रेक सिस्टम' 14.12.13 को 'कुहासे के मौसम में गाड़ियों का संरक्षित संचालन', 21.12.13 को 'गाड़ियों में ब्रेक बाइंडिंग कारण एवं निवारण', 28.12.13 को 'ई.एम.डी. लोको का परिचय तथा उसमें लगे विभिन्न कंपार्टमेंट' 18.12.13 को 'गाड़ियों में आग के दौरान आपातकालीन खिड़कियों एवं अग्निशामक का प्रयोग', 04.01.14 को 'कोच तथा वैगन में ब्रेक सिस्टम', 11.01.14 को 'कुहासे के मौसम में गाड़ियों का संरक्षित संचालन', 17.01.14 को 'समपार फाटक पर गाड़ियों का संरक्षित संचालन', 20.01.14 को 'यूनिकोड- सक्रिय कैसे करें और कार्य कैसे करें', 24.01.14 को 'ई.एम.डी. लोको का परिचय, कंपार्टमेंट तथा कार्य' एवं 31.01.14 को 'ट्रेनों में ब्रेक बाईंडिंग कारण एवं निवारण' विषयों पर तकनीकी संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा 29.01.14 को उप सामग्री प्रबंधक/डिपो, गोरखपुर तथा 30.01.14 को उप मुख्य विद्युत इंजीनियर/कालोनी, गोरखपुर के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

राजभाषा अधिकारी द्वारा 06.12.13 को आनंदनगर स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों, 23.01.14 को डीजल शेड/इज्जतनगर, 24.01.14 को बरेली सिटी स्टेशन, 28.01.14 को भारतीय रेल कैंसर संस्थान, वाराणसी एवं 28.01.14 को डीजल लॉबी, वाराणसी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

इज्जतनगर

17.12.13 को श्री चंद्रमोहन जिंदल, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में विशेष हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साथ ही 23.12.13 एवं 26.02.14 को डीजल शेड में वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर की अध्यक्षता में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य कारखाना प्रबंधक की अध्यक्षता में 29.01.14 को कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त 21.12.13 को शताब्दी समारोह मनाया गया। हिंदी वाचनालय का उद्घाटन एवं शताब्दी स्मारिका का विमोचन किया गया।

20.02.14 को कासगंज स्टेशन पर 'बर्न थैरेपी' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

07.12.13 को इज्जतनगर स्टेशन, 12.12.13 को बरेली सिटी, 23.12.13 एवं 26.02.14 को डीजल शेड/इज्जतनगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 12/13.12.13 को डीजल लॉबी/बरेली सिटी का औचक निरीक्षण, 27.12.13 को फतेहगढ़ व फर्रूखाबाद स्टेशनों, 10.01.14 को चमरौआ-लालकुआँ खंड तथा 11.01.14 को काठगोदाम-लालकुआँ-काशीपुर खंड का विस्तृत निरीक्षण किया गया। उन्होंने सभी निरीक्षण के लिए निर्धारित चेक लिस्ट पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की जाँच की।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा

अधिकारी ने 11.12.13 को पीलीभीत स्टेशन, 12.12.13 को काशीपुर-रामनगर खंड का एस.ए.जी. निरीक्षण, 23.12.13 को फर्रूखाबाद-कासगंज खंड व पीलीभीत स्टेशन, 15.01.14 को बर्राजपुर-उत्तरीपुरा के बीच मानवरहित समपार का निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षणों के दौरान निर्धारित चेक लिस्ट पर हिंदी प्रयोग की जाँच की एवं उक्त निरीक्षणों में हिंदी पैरा को भी सम्मिलित किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार द्वारा 12.12.13 को बरेली सिटी स्टेशन एवं हिंदी ग्रंथालय का गहन निरीक्षण एवं 25.01.14 को भोजीपुरा स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।

मासिक बुलेटिन 'इज्जतनगर प्रतिबिंब' का प्रकाशन किया गया।

लखनऊ

25.02.14 को श्री अनूप कुमार मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

30.01.14 को लखनऊ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर लखनऊ मंडल कार्यालय को सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए 'विशिष्ट कार्यालय' का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

11.02.14 को रेलवे बोर्ड में आयोजित हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के अवसर माननीय रेल मंत्री जी द्वारा लखनऊ मंडल के वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री लोकेश सिंह को उनकी पुस्तक 'अवपथन जाँच रेलपथ प्रेक्षणों की महत्ता' को लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार (आधार वर्ष 2012) के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

10.12.13 को गोरखपुर पश्चिम, 24.12.13 को गोरखपुर स्टेशन 31.12.13 को बादशाहनगर में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 64 कर्मचारियों ने भाग लिया।

10.12.13 को गोरखपुर पश्चिम, 14.12.13 को आनंदनगर, 15.12.13 को नौतनवा, 17.12.13 को संयुक्त कार्यालय/गोंडा, 24.12.13 को गोरखुपर पूर्व, 31.12.13 को बादशाहनगर, 17.01.14 को सीतापुर, लखीमपुर व बलरामपुर, 28.01.14 को मैलानी एवं 29.01.14 को डीजल शेड/गोंडा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम. के. अग्रवाल द्वारा 03.12.13 को लखनऊ जं., 04.12.13 को बहराइच, नानपारा व बलरामपुर स्टेशन स्थित हिंदी पुस्तकालयों का गहन निरीक्षण किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री शैलेश कुमार मिश्र द्वारा 24.12.13 को गोरखपुर स्टेशन कार्यालय, 15.01.14 को मैलानी, 17.01.14 को बस्ती, 24.01.14 को समाडि कार्यालय/गोंडा, 28.01.14 को गोरखपुर कैंट एवं 29.01.14 को लखीमपुर स्टेशन पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया गया।

'लखनऊ दर्पण' त्रैमासिक बुलेटिन के अंक-11 (अक्टूबर-दिसंबर/13) एवं 'प्रगति' के अक्टूबर-दिसंबर, 13 अंक का प्रकाशन किया गया।

वाराणसी

मंडल रेल प्रबंधक श्री अजय विजयवर्गीय की अध्यक्षता में 11.03.14 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों तथा प्रशिक्षण केंद्र में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

28.02.14 को राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं 'कबीर-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

18.12.13 को कप्तानगंज, 27.12.13 को देवरिया सदर, 31.12.13 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र, मंडुवाडीह, 06.01.14 को मंडल कार्यालय, 24.01.14 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र, वाराणसी एवं 28.01.14 को मंडुवाडीह में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें 164 कर्मचारियों को राजभाषा नीति, नियमों, अधिनियमों एवं अन्य संवैधानिक प्रावधानों सहित पुरस्कार योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई।

18.12.13 को कप्तानगंज, 05.12.13 को गोरखपुर पूर्व, 10.12.13 को औड़िहार, 27.12.13 को देवरिया सदर, 21.12.13 को सीवान, 03.01.14 को मंडुवाडीह, 10.01.14 को वाराणसी सिटी, 17.01.14 को मऊ जं., 24.01.14 को गाजीपुर सिटी तथा 29.01.14 को आजमगढ़ स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

निर्माण संगठन के उपमुराधि द्वारा 24.01.14 को वाराणसी यूनिट के कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 05.12.13 को मंडल के वाणिज्य विभाग 18.12.13 को कप्तानगंज, 27.12.13 को देवरिया सदर एवं 21.01.14 को मंडल विद्युत कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

11.02.14 को रेलवे बोर्ड में आयोजित रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के अवसर पर माननीय रेलमंत्री से लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मूलक लेखन का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते मध्यम मंडल के वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री साकेत सिंह

10.03.14 को आयोजित हिंदी नाटक 'अमली' के मंचन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते श्री कृष्ण कुमार अटल, महाप्रबंधक

10.03.14 को मुख्यालय में मंचित हिंदी नाटक 'अमली' का दृश्य

23.12.13 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल साथ में श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि एवं श्री पी. एन. राय, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक

18.12.13 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि साथ में श्री संजय यादव, उप मुराधि व अन्य अधिकारीगण

30.12.13 को 'संरक्षित एवं सुरक्षित परिचालन में राजभाषा का योगदान' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी को संबोधित करते श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि साथ में श्री रण विजय सिंह, मुपरिप्र

कविवर बिहारी लाल

सुभद्रा कुमारी चौहान

रामवृक्ष बेनीपुरी

आशापूर्णा देवी

श्री एच. के. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री एस. के. त्रिपाठी, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित